प्रथम अध्याय

नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्यक्तित्व :

नासिरा शर्मा हिन्दी की अन्यतम कथा-शिल्पी हैं। उनका लेखन वैविध्यपूर्ण है। उसका विश्लेषण सहज काम नही है। वास्तविक बात यह है कि किसी ऐसे व्यक्ति के व्यक्तित्व को कलमबद्ध करना ज्यादा मुश्किल हो जाता है जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय एवं देशगत सीमा के छन्द से मुक्त है। कोई साहित्यकार, कलाविद, संगीतज्ञ या क्रियेटिव परशन अपने सर्जना की प्रवृत्ति एवं उपादेयता के कारण ही जाने जाते है। समाज की मनोवृत्ति, घटना एवं परिवर्तित मूल्यों के पिरामिड में अपनी स्वानुभूति पिरोकर सर्जक एक नए वृत्ति को जन्म देता है, वही वृत्ति समाज की जब प्रवृत्ति बन जाती है तो सर्जनकर्ता के व्यक्तित्व का निर्माण समाज उस दृष्टि से करता है, चाहे वह अनुकरणीय हो या परित्यक्त। ऐसा सर्वविदित है कि ज्ञान, बुद्धि हमारे जीवन के किसी एक पक्ष का विकास करती है। जबकि कीर्ति संसार के कई भागों का स्मृति चिह्न बनता है। मोहन राकेश 'आषाढ़ के एक दिन' में व्यक्तित्व के संदर्भ में लिखते हैं कि- "योग्यता एक चौथाई व्यक्तित्व का निर्माण करती है, शेष-पूर्ति प्रतिष्ठा द्वारा होती है।"

वास्तव में साहित्य सृजन की अभिव्यक्ति लेखक के निजी अनुभव का एक प्रतिफलन है जो उसकी स्थिति, समाज की घटना, स्व की संवेदना, पारिवारिक परिवेश, वंश, कुल, शैक्षणिक अभ्यास एवं विचारधारा दर्शन के द्वारा उत्पन्न होता है। नासिरा शर्मा के साहित्य का कैनवास महानगरीय जीवन आँचलिकता, खेत-खलिहान एवं नौकरी-पेशा तक ही सीमित नही है बल्कि विभिन्न धर्मों, रीति-रिवाजों, सांस्कृतिक धरोहर रिश्तों मान्यताओं की गहरी समझसमेटे हुए देश-विदेश, अरब,

अफगानिस्तान इत्यादि देशों से जाकर वहाँ के समस्याओं से साक्षात्कार करके अपने कैरेक्टर का सृजन करती है। सर्वविदित तथ्य यह है कि साहित्यकार के व्यक्तित्व का निर्माण एक तरफ विरासत की देन होती है तो दूसरी तरफ जो वह रचता-पचता है उसके द्वारा तैयार मापदण्ड इन्हीं हकीकतों से नासिरा शर्मा भी रुबरू होती हैं और एक विशिष्ट लेखिका के तौर पर अपने व्यक्तित्व से समाज को प्रभावित करती हैं ।

जिनमें समाज, परिवार एवं मानवता के गुण संश्लिष्ट हैं । रचना धर्मिता में समस्याओं की गुत्थियों को बारीकी से खोलने और उसकी मौलिकता को आघात न करने की पैनी दृष्टि है। उनकी समझ की सबसे बड़ी खूबसूरती लोकमंगल की शोधात्मक व्याख्या एवं विवेचन की दृष्टि है। वे अपने उपन्यासों एवं कहानियों, लेखों के माध्यम से किसी भी कीमत पर संबंध विच्छेद की परिकल्पना नही करती, हर हालत में रिश्तों को कायम रखने का सफल प्रयत्न करती है। "स्त्री अगर एक बार किसी से धोखा खाये तो सम्हल जाना चाहिए किसी दूसरे कंधे का सहारा बदले के भावना से नहीं लेना चाहिए वर्ना हम और दलदल में फँसते जाते है।"[2]

सातत्यता की गहराई से अवलोकन किया जाए तो यह तथ्य पूरी ईमानदारी के साथ दिखाई पड़ता है कि नासिरा शर्मा ने हिन्दी कथा साहित्य में मौलिकता एवं गुणवत्ता की दृष्टि से विशेष योगदान दिया है। आपकी कहानियाँ एवं उपन्यास स्त्री संवेदना एवं सिकन की छटपटाहट को जितने सतही स्तर पर प्रस्तुत होते हैं उतने ही सशक्त निबंध, रिपोतार्ज, लेख इत्यादि विधाएं हिन्दी की बिन्दी को भास्वर बनाती है।

जन्म

सर्वव्याप्त है कि रचना-धर्मिता के समय व्यक्तिगत रुचि अभिरुचि एवं देशकाल-वातावरण सभी काम करते है। नासिरा शर्मा का जन्म उत्तर-प्रदेश की साहित्यिक नगरी इलाहाबाद में 22 अगस्त 1948 ई. दिन शुक्रवार प्रातः चार बजे हुआ था। पिता 'जामिन अली' उर्दू के प्रोफेसर तथा माता 'नाजनीन बेगम' एक सफल गृहिणी

थीं। परिवार में सबसे छोटी संतान होने के कारण नासिरा का बचपन बेहद लाड-प्यार में गुजरा । सात वर्ष की उम्र में इनके पिता का गोलोकवास हो गया। इस पारिवारिक संकट के बाद उनके सम्पूर्ण उत्तरदायित्वों का निर्वाह उनकी माता ने किया। "जब मैं छोटी थी तब उनकी मृत्यु हुई मगर उनकी चर्चा हमेशा रही। उनके उसूल पसंद नापसंद पर लोग अक्सर चर्चा करते थे ।"३ नासिरा बचपन से ही कुशाग्र बुध्धि और विचारवान प्रवृत्ति की थी। उनका लालन-पालन सम्भ्रान्त परिवार में हुआ था । साहित्य उन्हें विरासत में मिला है। नासिरा शर्मा लगभग पाँच भाषाओं की कला-कौशल में सिद्ध-हस्त है उर्दू, हिन्दी, पश्तो, फारसी और अंग्रेजी आदि भाषाओं से पंचगंगा की तरह अविरल धारा में संस्कारित उनकी सर्जना कलकल निनाद करते हुए बह रही है। स्वयं तीन वर्षों तक नई दिल्ली में ख्यातिनाम शिक्षण संस्थान जामिया मिलिया स्लामिया में फारसी का अध्यापन किया।

इनकी रचनाधर्मिता की सबसे बड़ी खूबसूरती सहज, सरल, सपाट एवं पर्दे के पीछे से एक झीना पर्दा में समस्या को लपेटकर अभिव्यक्त करना है। जहाँ बात स्पष्ट भी हो जाती है और मॉशलता भी नही आती । इनकी लेखनी कहीं भटकती नजर नहीं आती। नासिरा कठिन समस्याओं की चढ़ाई पर भी कलम की रफ्तार संतुलित मोशन में बढ़ाती हैं। इस कारण न कभी थकान लगती है, न लेखनी हाँफती है। उनका साहित्य टेढ़ा-मेढ़ा, भटकावपूर्ण नही है। पाठक को रुचिकर, सूचनाप्रद साहित्य सौंपती है। सिर्फ मनोरंजन या पुरस्कार प्राप्ति के लिए उनकी कलम कभी उठी ही नही। बकौल नासिरा शर्मा “सेक्स पर लिखना सरल है। पाठको को आनंद भी मिलेगा। लेकिन स्त्री-पुरुष संबंधों में सेक्स के हिस्से पर लिखने के वक्त यदि इशारतन खूबसूरती सेबात कह दी जाए और लेखक आगे बढ़ जाय तो बात ही कुछ और है। पाठक भाव भी समझ जाता है। तथा अश्लीलता भी नही झलकती।”[4]

पारिवारिक जीवन

घर की सबसे छोटी संतान वैसे भी सबके के लिए वात्सल्य, आमोद-प्रमोद एवं मनोरंजन का साधन होता है किंतु नासिरा शर्मा अपने सहज-सरल एवं गंभीर स्वभाव के कारण लाड-प्यार की ज्यादा अधिकारिणी थीं। अपने बाल्यावस्था से ही ये सपाट सीधी एवं दो टूक बातें करती थीं कोई भी सच्ची बात कहने की हिम्मत थी, मगर किसी के सच को बता उसे अपमानित कर या चालबाजी से अपना उल्लू सीधा करने की चार सौ बीसी वाली कला नहीं आती थी।[5]

प्रायः मुसीबतों के अंबार एवं महत्वाकांक्षा की लत स्वाभिमान को भी अपने पिरामिड में लालच की पुड़िया (दाना) डालकर मदारी का बंदर बना देता है। लेकिन नासिरा शर्मा आज भी उसी स्वभाव से आबद्ध अपने सिध्धांत की सफीना को उत्तरोत्तर बढ़ा रही हैं । पिता 'जामिन अली' और माता 'नाजनीन बेगम' की ममतापूर्ण छाया में यह गंभीर स्वभाव की बालिका सुन्दर परवरिश पाकर निहाल थी।

इनका वंश साहित्य, कला, का अनन्य उपासक था। अपने खानदान के बारे में वे लिखती है- "मेरा खानदान केवल पढ़ा लिखा नही था बल्कि शायरों का एक सिलसिला रखता था, घर के मर्दों के लिखे कसीदे, परिंदे और गजलें औरतों द्वारा पढ़ी और सराही जाती थी।"[6]

नासिरा जी का परिवार कायदे कानून वाला था। सौंदर्य बोध की चीजें बड़ी नाजकत से संजोई जाती थी। खान-पान, रख-रखाव का सलीका उम्दा था। परंतु सादगीपन, व्यवहारिकता इस परिवार की संपत्ति थी। घर का सजा सँवरा रूप नासिरा को पसंद नही था, कारण कि इनको नेचुरल सेचुएशनज्यादा अपनी ओर आकर्षित करता था। इनका परिवार जमीदार घराने से होकरभी सामंती मानसिकता का नही था। नासिरा शर्मा अपने एक लेख 'मेरे जीवन पर किसी का हस्ताक्षर नही' शीर्षक में लिखती हैं ....."मेरा घर मेरे लिए किसी भी प्रकार की दिलचस्पी लिए हुए नही था।

वहाँ की सभी चीजें कायदे करीने वाली थी जिनका मुझे पता था, जिसमें कोई नयापन नही था। मगर मेरी दोस्तों के घर मुझे बहुत लुभावने लगते थे।"[7]

वास्तव में माता नाजनीन बेगम के प्रतिनिधित्व में इनका परिवार धैर्य, सहनशीलता एवं व्यवहारिकता का पूरे शहर में एक मशाल था। अदब और तमीज इनके सदन की महत्वपूर्ण अभिज्ञान थी। स्त्री-पुरुष के बीच कोई विशेष अंतर नही था। इस परिवार के वातावरण में विचारों की स्वतंत्रता स्त्री-पुरुष दोनों को बराबर थी। औरतों को प्यार और सम्मान देना पुरुष का फर्ज था। नासिरा जी का साहित्य में संवेदनशील होने एवं प्रवृत्ति का मुख्य कारण पारिवारिक परिवेश ही था। नाजनीन बेगम को छोड़कर बाकी पूरा परिवार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से साहित्य की वर्षा में भीगे हुए थे। इनकी दोनों बहनें सर्जना की कल्पनाशीलता में सिद्धहस्त थी। इनकी मझली बहन शायरा थी। लेखिका का परिवार पढ़ा लिखा सुशिक्षित एवं मुस्लिम सिया घराने से संबंध रखता था। मौर्य राखी कुमारी लिखती हैं -"नासिरा शर्मा का परिवार प्रतिभा संपन्न, सुसंस्कृत परिवार रहा है। इनका परिवार विभिन्न प्रतिभाओ का खजाना था। नासिरा के बड़े भाई 'सैयद मोहम्मद हैदर' अंग्रेजी के अध्यापक थे। जिनकी मृत्यु सिर्फ सैंतीस वर्ष की छोटी उम्र में ई. सन् 1970 में पैरेलैटिक अटैक से हुई थी। इनके बड़े भाई इनको कहते थे, नासिरा तुम बाल हमेशा खुले रखा करो। तुम्हारे खुले बाल मुझे बहुत पसंद है। उनके इंतकाल के बाद नासिरा जी ने कभी भी बाल नहीं बाँधे। लम्बे भी बाल नहीं बाँधे। लम्बे हो जाते थे तो भी नहीं बाँधती थी। "[8] लेकिन मुझे बाल न बाँधने की बात कोरी कल्पना ही लगती हैक्योंकि मुझे कई बार नासिरा जी के किताबों के मुख पृष्ठ पर एवं महाराजा सयाजीराव विश्वविधालय, बड़ौदा, गुजरात में 1 मार्च 2015 को नासिरा शर्मा एक : मुलाकात के मध्य आमने-सामने देखने एवं रूबरू होने का मौका मिला जिसमें उनके बाल बड़े ही नजाकत के साथ बँधे एवं सँवरे हुए थे ।

नासिरा जी के बीच के भाई 'सैयद मजहर हैदर' -"द टाइम्स ऑफ इण्डिया'' में पत्रकार थे। उनका गोलोकवास पैरेलैटिक अटैक से सन् 1995 में हुआ। उनकी बड़ी बहन 'फातिमा हसन' उर्दू साहित्य की प्रसिध्ध लेखिका थी। फातिमा हसन भी वर्तमान समय में हमारे बीच में नही है। इनकी मृत्यु सन् 1999 में हुई। पीहर का प्रेम तो वास्तव में हर स्त्री के हृदय का अमूल्य रत्न परंतु 'नाजनीन बेगम' ने घर के वातावरण में प्रेम और सौहार्द की गंगा, जमुनी इस कदर बहायी कि उसकी शीतलता उनके बच्चों को हर माहौल में याद आती है। यही कारण है कि 'फातिमा बीबी' 1999 ई. सन् में कोमा में जब आखिरी साँस ले रही थीं उस समय उनके मुँह से पति, पुत्र ससुराल पक्ष के बजाय माता, भाई, बहन और पीहर ही निकल रहा था ।

नासिरा जी की दूसरी बहन 'मन्सूरा हैदर' अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविधालय में 'इतिहास' की प्राध्यापिका है। मन्सूराजी उर्दू शेरों-शायरी में भी रुचि रखती हैं। उपरोक्त तथ्यों का वास्तव में विहंगावलोकन किया जाय तो स्पष्ट है कि नासिरा जी का पूरा परिवार लक्ष्मी और सरस्वती की विशेष अनुकम्पा से अनुग्रहीत है। इस अवस्था में इनको साहित्यिक संस्कार विरासत से ही प्राप्त हो जाता है। ज्यादा चिंतन-मनन, उठा-पटक की आवश्यकता नही थी, लेकिन लेखिका स्वयं उच्च स्तर की उदाक्त क्षमता, कल्पनाशीलता, शब्दों का भण्डारण एवं यथार्थ को बेबाकी से अभिव्यक्त करने की कला में दक्ष हैं।

परिवार की व्याख्या लेखिका खुद करती हुई अपने लेख 'औरत के लिए औरत' में कहती है- "जब मैने होश सम्भाला तो अपने को माँ के साथअकेला पाया। वह मेरे लिए माँ भी थी, बाप भी थी। पिता के देहान्त के बाद घर में सब कुछ था। रूपया, पैसा, भाई-बहन, नौकर-चाकर, रिश्ते और रिश्तेदार मगर नही था तो एक मर्द जिनकी भूमिका माँ को अपनी तीस वर्ष की उम्र में निभानी थी। माँ की दोहरी भूमिका का

पर्तदार सच मैने जिस बारीकी से देखा उसमें पाया कि माँ अपने संघर्ष में जितनी कामयाब हो रही थी उतनी अकेली भी।"[9]

शिक्षा एवं परिवेश

नासिरा शर्मा का परिवेश उनकी शिक्षा-दीक्षा से लेकर नौकरी-पेशा एवं साहित्य की धारा में इस तरह समाविष्ट था कि यह मालूमात कर पाना काफी श्रमसाध्य हो जाता है कि नासिरा (सिया) शर्मा (हिन्दू) परिवेश 'नासिरा' का निर्माण कर रहा है या फिर नासिरा शर्मा खुद परिवेश की पोषक एवं संचालिका है।

नासिरा जी का घर ही उनकी प्राथमिक पाठशाला थी। माता नाजनीन बेगम को वे अपना प्रथम गुरू मानती हैं । इसमें शक भी नहीं कि उनकी माता केवल ममत्व की भूमिका ही नही बल्कि पिता, गुरु, इत्यादि का बखूबी किरदार निभाते हुए अपने बच्चों की परवरिश करती हैं। नासिरा शर्मा का प्रथम दाखिला सेंट एन्थोनी स्कूल में हुआ। कक्षा प्रथम एवं द्‌वितीय की पढ़ाई करने के बाद पिता की मृत्यु हो गई अतः नाजनीन बेगम ने सुरक्षा की दृष्टि से तीनों बहनों को एक ही कॉलेज में दाखिला दिला दिया।

नासिरा जी अपने लेख 'मेरे जीवन पर किसी का हस्ताक्षर नही' में लिखती हैं कि- "मैं तीसरी कक्षा में थी। नई-नई इस स्कूल में आई थी। मैने अपनी क्लास टीचर हमीदा खातून और आर्ट टीचर सालेहा काजमी को बाते करते देखा था। जो बड़े गौर से मुझको ताक रही थीं । पानी पीने की इजाजत लेकर जब मैं उनके पास से गुजरी तो मेरे कान में सालेहा काजमी की आवाज पड़ी- "अजीब बात है यह कोई नही देखता कि नासिरा कितनी साफ-सुथरी नीट स्टूडेण्ट है। पढ़ने में अच्छी मगर उसका 'सिया' होना खल रहा है।

यही तो यहाँ मुश्किल है, आदमी बोले तो क्या बोले ? हमीदा खातून ने कहा। पास के नल पर पानी पीती मैं सोच रही थी कि मैं 'सिया' थी यह तो मुझे पता नही

था मगर इससे लोग परेशान क्यों हैं। पानी पीकर क्लास में दाखिल हुई तो कान में हमीदा खातून की आवाज फिर टकराई। "भला बताओ तो इस लड़की की बातें? कहती है सिया थूककर पानी देते है इनके यहाँ पानी नहीं पीना चाहिए। क्योंकि मुर्दे के पेट से पानी निकालकर वह खाते पर छिड़क देते हैं। "तौबा है।" सालेहा काजमी हँस पड़ी मुझे एकदम से घबराहट सी हो गई। यह कैसी अजीबों-गरीब बातें ये लोग कर रही हैं। ऐसी बातें मैंने नहीं सुनी हैं, मगर एक एहसास ने मुझे दबोच दिया था कि "सिया होना जरूर कोई खराबी होगी और जो यह बात सच हुई तो? भय से मैं काँप गई।"",[10]

नासिरा शर्मा किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष या परोक्ष कभी स्वभाव को लेकर कभी सिया तो कभी कुछ अलग वर्णन को लेकर एक अलग परिवेश एवं परिधि की केन्द्र बिन्दु बन जाती थीं । प्रारंभिक शिक्षा के बाद माध्यमिक शिक्षा कान्वेंट स्कूल में हुई। बी.ए. इन्होंने 1967 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किया। 'जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से फारसी भाषा साहित्य में मास्टर की डिग्री प्राप्त की ।

लेखिका की सब कुछ जानने समझने की तीव्र इच्छा शक्ति ने जल्द ही उन्हें अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, पश्तो एवं फारसी इत्यादि भाषाओं की स्वामिनी एवं राजनीति, संस्कृति, साहित्य, कला, नृत्य आदि फैक्टरों की विशेषज्ञ बना दिया। ये बाल्यावस्था से ही प्रतिभा सम्पन्न थीं। प्रतियोगिताओं में भाग लेना, 'इंटीरियर डिजाइनिंग' इत्यादि में विशेष रुचि रखती थीं। इरान इनके साहित्यिक शोध का विषय रहा है। डिग्री प्राप्त करना नौकरी पेशा करना नासिरा शर्मा के जेहन में हो सकता है रहा भी हो, परंतु 'अर्थकरी च विद्या' को इन्होंने महत्व नही दिया वरन् 'सा विद्या या विमुक्तये' शैली को अपनाते हुए जीवन से जुड़ी शिक्षा की पक्षधर थीं । व्यवहार में प्रयुक्त शिक्षा पद्धति की आकांक्षी नासिरा शर्मा कभी शिक्षा को खाना पूर्ति का साधन नही स्वीकार किया। हमेशा शिक्षा में जीवन मूल्यों की खोज में प्रयुक्त रही। गंभीर स्वभाव की दिखने वाली नासिरा शर्मा अपने लेख 'मेरे जीवन पर किसी का हस्ताक्षर

नहीं' में मिसेज हसनैन के बारे में स्वयं स्वीकार करते हुए लिखती हैं -छठी क्लास में कहानी प्रतियोगिता में जिसका शीर्षक 'कुर्बानी' था मुझे पुरस्कार भी उनके हाथों मिला था। आज वह नही हैं मगर बरसों वह मेरे सपनों में आया करती थीं ।"

मुझे सातवीं क्लास की अपनी एक शैतानी याद आती है, जो उस समय एक शरारत भर थी, मगर जरूर हरकत के पीछे कहीं मेरे अंदर दबा आक्रोश होगा कि मुझ पर झूठा इल्जाम लगाया गया था। कक्षा सजाने का मुकाबला था। मैने छठी क्लास के ए. सेक्शन की दीवार पर लगी फ्रेम वाली सारी तस्वीरें उलट दी थीं। दोनों सेक्शन में 'जलन' के नाम पर बीच का दरवाजा खोल धुंआधार लड़ाई हुई, जिसमें क्लास टीचर भी शामिल थीं। मुझे उस समय गुमान भी न था कि एक छोटी सी शरारत का अंजाम यह होगा।"[11]

लेखिका की प्रवृत्ति शिक्षा-दीक्षा के साथ-साथ शुरुआत से ही साधारण सी दिखने वाले व्यक्तियों, वस्तुओं में ज्यादा रमती थी। साहित्यकार कभी चमक-दमक के पीछे नही दौड़ते, वे हमेशा सादगी, सहजता, एकांत, निर्जन में ही चमक की परिकल्पना करके इनको सजीव एवं जीवट बना देते हैं। नासिरा शर्मा की तो बात ही निराली है वे घर की साज-सज्जा, सलीका, सावधानी से सलीके से बर्ताव होते घरेलू माहौल से आकर्षित नही होती क्योंकि उनके घरका वातावरण वैसा ही था 'मेरे जीवन पर किसी का हस्ताक्षर नही' लेख मेंएक जगह लिखती हैं -"जब मैं छठी क्लास में थी रस्सी कूदना बहुत भाता था। रजिया निसार और मै अन्य क्लास की लड़कियों के साथ कभी इकहरे, कभी दुकहरे होकर रस्सी कूदते थे।"

“मैं गणित में कमजोर थी और उससे बड़ी प्रभावित रहती थी। एक दिन बोली “मैं कभी-कभी घर में माँ से पिट जाती हूँ। पता नहीं क्यों 'दही बड़े' बेचने का खेल मुझे बचपन से ही बहुत अच्छा लगता है। आटा सानने की परात सिर पर रखकर मैं सारे घर में चक्कर लगाती हूँ। दही, बड़े- मियाँ बीबी लड़े, बस आखिरी बात पर मां

को ताव आ जाता उसकी बात पर मुझे हँसी आ गई थी। दिल में उसका घर देखने की जिज्ञासा जागी।"[12]

इस प्रकार नासिरा जी अपनी शिक्षा के दौरान जो संगी साथी थे सबको अपने साहित्य में अमर कर दी। वैयक्तिक विभिन्नताओं की पुंज नासिरा शर्मा लगभग तीन साल तक कक्षा छठवीं, सातवीं, आठवीं में कुछ अल्हड़पन मिजाज की गाम्भीर्यता के साथ थी। परन्तु उसके बाद के जीवन को उन्होंने सीरियश सेच्युएशन में तब्दील किया और पूर्ण जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए आगे की पढ़ाई की।

प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त नासिरा शर्मा लेखन की तरफ उन्मुख हुई। लेखन में भी परिवेश की मौनमधि पुकार परिलक्षित होती है। इलाहाबाद की गलियाँ, चौबारे, बाग-बहार, मिठाईवाला, नानवाला, सब्जी मण्डी, सारी चीजें उनको अपनी ओर आकर्षित करती हैं। लेखिका के द्वारा ही लिखे एक लेख में प्रस्तुत है -"यदि कोई पूँछे कि इलाहाबाद का सबसे खूबसूरत और जानदार इलाका कौन सा है तो मै कहूँगी 'नखास कोना' और उसके आसपास का वह सारा इलाका जो मेरी कहानियों में धड़कता है। कायदे से मुझे अपने घर मुहल्ले से प्यार होना चाहिए था मगर इश्क मुझे बहादुरगंज, पत्थरगली, घण्टाघर, ठठेरी बाजार, बर्फवाली गली, सब्जी मण्डी, चूड़ा वाली गली, स्टेशन रोड, गढ़ी सराय वगैरह से है।"[3]

सृजन की सहयात्री नासिरा जी कितनी भी कोशिश करे उनके हृदय का रचनाकार इन्हीं इलाकों के ईद-गिर्द घूमता रहता है। कोतवाली थाना तो उनको इस कदर भा गया कि वे हमेशा खुली चर्चा के दौरान कह उठती है कि मुझे तो कोतवाली थाना के सिवा कोई और थाना ही नही लगता ऐसे ही बचपन बीता। किशोरावस्था और पढ़ाई खट्टी-मीठी यादों के साथ-साथ बढ़ रही थी उन्ही दिनों 'श्री राम शर्मा' से मुलाकात होती है जो नासिरा जी को दाम्पत्य जीवन की ओर मुखातिब करती है ।

विवाह एवं वैवाहिक जीवन

विवाह संस्कार वास्तव में एक ऐसा सूत्र है जो आन्तरिक स्तर पर दो अलग-अलग परिवारों को एक माला में पिरोता है। लेखिका भी इससे अछूती नही रही किंतु अन्तर इतना था कि सामान्यतया विवाह अपने कुल, रीति, परंपरा, धर्म के सीमाओं के अन्तर्गत ही सम्पन्न किया जाता रहा है, यह अच्छा हो या बुरा परंतु कुल-रीति और मर्यादा परिवारीजन इसी में मानते हैं कि 'औलाद' रिश्ते उनके हिसाब से बनायें।

लेकिन नासिरा जी इसके विपरीत खुद की पांरपरिक रूढ़ियों एवं मान्यताओं के बन्धन से मुक्त, कर्मकाण्डों की परवाह को छोड़ते हुए 'डॉ. रामचन्द्र शर्मा' से स्पेशल मैरेज ऐक्ट विधि से अर्न्तधर्मीय प्रेम विवाह कर लिया। उस समय उनकी उम्र महज 18 वर्ष रही होगी। कितना साहस कितनी उर्जा-शक्ति इस छोटी उम्र में संसार बदलने की उत्कट अभिलाषा रही होगी, जो इतना बड़ा कदम उठा सकी। इसीलिए आज भी शोधार्थी हो या आलोचक, समीक्षक हो या समालोचक जब भी नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व की बात आती है लगता है सारे जहाँ की संवेदना और सिकन का एक विशाल समंदर यहाँलहरा रहा है। जिसके बारे में जो लिखो बूँद की तरह वह समन कर लेगा, और अपने ही जल के एक हिस्से में तब्दील भी। क्योंकि सागर के पास गई बूँद उसी की होकर रह जाती है।

संसार की सारी मान्यताओं का खण्डन करते हुए कानूनी तौर पर डॉ. रामचन्द्र शर्मा और नासिरा शर्मा एक दूसरे के हमसफर बन गये जबकि डॉ.शर्मा लगभग 16 वर्ष नासिरा से ज्यादा उम्र के थे। विवाह के संदर्भ में नासिरा जी लिखती हैं डॉ. शर्मा की शादी के इच्छुक पिता बरसों तक कोशिश कर रहे थे राजस्थान में कई घराने दहेज में मकान, कार, देने को तैयार थे। ये सारे कटाक्ष ताने कुढ़न हमारे संबंध पर कभी हावी न हुए, न धर्म, परिवार, वर्ग, प्रांत हमारे बीच कटुता के बीज बो पाये।"[14]

अर्न्तजातीय विवाह के संदर्भ में नासिरा कहती है-- इंसानियत पर विश्वास हो धर्म के प्रति उदात्त भाव हो तब विवाह करना चाहिए वरना नही। होता यह है कि विवाह के बाद दोनों पक्ष अपने-अपने धर्म, रीति-रीवाज से चिपक जाते है। प्रेम का विस्तार संकीर्णता ले लेता है और पति-पत्नी कुंठित हो जाते हैं।"[15]

विवाह के संदर्भ में नासिरा शर्मा उदारवादी दृष्टिकोण की पक्षधर हैं। रूढ़ मानसिकता, रुग्ण मान्यता एवं जाति-पाँति, धर्म-सम्प्रदाय की सीमा से उपर उठकर उन्होंने अपने जीवन साथी का चयन किया। लेखिका पहले उन सभी झंझावतों से टकराती है फिर उसमें जीती है, उसके बाद साहित्य में हो या व्यक्तिगत जीवन, यथार्थवादी दृष्टि अपनाते हुए सर्जना करती है। सबसे पते की बात यह है कि नग्न यर्थाथ का चित्र दिखाकर नासिरा जी कभी वाह-वाही एवं वायवीयता से नाम नही कमाया बल्कि बन्द कमरे के रोशनदान से यथार्थ की झाँकी दिखाया है। इनके रचना धर्मिता की बड़ी विशेषता यह है कि उस रोशनदान पर भी मर्यादा का झीना सा पर्दा लगा देती है और इशारतन वह सब अभिव्यक्त कर देती है जो प्रस्तुत करना आवश्यक है और मांशलता भी न आने पावे। ठीक यही सूत्र अपनी 18 वर्ष की छोटी सी उम्र में जीवन साथी के चुनाव में भी प्रयोग किया। उनका अर्न्तजातीय प्रेम भी उनको प्राप्त हुआ । विवाह भी संपन्न हुआ और परिवार भी इस रिश्ते को न चाहते हुए भी नासिरा शर्मा एवं रामचंद्र शर्मा को स्वीकार किये। इतना ही नही जब तक नासिरा शर्मा इलाहाबाद रही उनकी सास उन्ही के साथ रहती थी। डॉ. रामचन्द्र शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भूगोल विषय के व्याख्याता के पद पर कार्यरत थे। उसके बाद जवाहरलाल नेहरू विश्वविधालय, दिल्ली में अध्यापन कार्य किया। डॉ. शर्मा ने 'ब्रिटिश कांउसिल स्कॉलरशिप' पर पीएच.डी. लंदन में किया था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से मास्टर की डिग्री प्राप्त किया। डॉ. रामचन्द्र शर्मा को भूगोल में दो गोल्ड मैडल भी प्राप्त हुआ था।

डॉ. रामचन्द्र शर्मा का परिवार इस विवाह से परेशान नही था। उनके घर वाले बहू के रूप में नासिरा को स्वीकार कर लिया था। नासिरा के परिवारीजन इस लगन के पक्ष में नही थे। अतः विवाह रस्म में परिवार का कोई सदस्य सम्मिलित नही हुआ था। दो अलग-अलग धर्मो के व्यक्तियों का विवाह मुस्लिम समाज में आज भी अच्छी दृष्टि से नही देखा जाता है। इससे अछूती नासिरा शर्मा एवं रामचन्द्र शर्मा भी नही रहे। वे दोनों अपने प्रेम को पाने के लिए कई समस्याओं से जूझते रहे। कभी धर्म का वास्ता तो कभी सामाजिक बंधन नासिरा का परिवार उदारमत का था विवाह में सम्मिलित नही हुआ परंतु नासिरा जी के ऊपर मतारोपण भी नही किया। नासिरा जी का मानना है कि अगर आप नए तरीके से कार्य करने जाओगे तो निश्चित रूप से समस्याएं आयेंगी और उनके भी निजी जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आये मगर साहस एवं धैर्य के साथ उन्होंने उसका सामना किया। नासिरा शर्मा का मानना है कि आजकल कुछ तथाकथित लोग धर्म को एक औजार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। वास्तव में सारे संसार को चलाने एवं शक्तिदायिनी उर्जा प्रदान करने वाली सत्ता एक है। नासिरा जी लिखती हैं -"धर्म योजनाबद्ध तरीके से जीवन जीने का एक रास्ता है आज धर्म को समझना हमारे लिए बेहद जरूरी हो जाता है। क्योंकी उसका गलत प्रयोग इन्सानों की जिन्दगी को बेहद दुश्वार बना रहा है।"[16]

जीवन की राह थोड़ी-सर्द-गर्म पगडंडी पर सवार सरपट दौड़ती ही है, उसमें उतार-चढ़ाव लगा रहता है। यह संसार के सभी प्राणियों में कमोवेश लगा रहता है। वैसे ही तमाम झंझावातों के बावजूद नासिरा शर्मा का वैवाहिक जीवन निजी मामलों में बहुत सफल रहा। इनके दो बच्चे हैं। बड़ी बेटी 'अन्जुम' और छोटा बेटा 'अनिल' उनकी बेटी अंजुम ने 'अरेबिक से एम. ए. किया। अंजुम का विवाह 'बदी उज्जमा' से हुआ है। बदी उज्जमा 'पर्शियन' से एम.ए. किये हैं । नासिरा जी के दामाद की कंपनी है 'शिपिंग कंटेनर लीजिंग' उनकी पुत्री अंजुम कंपनी की डायरेक्टर हैं। नासिरा शर्मा के

दामाद मुस्लिम हैं और बहू ईसाई है। जिसका नाम 'स्टेफनी है। उनका बेटा अनिल 'इलेक्ट्रानिक मीडिया 'दुबई' में डाक्यूमेंटरी फिल्म प्रोड्यूसर है। नासिरा जी के परिवार में हिन्दू, मुस्लिम्, ईसाई धर्म के एकीकरण का संगम है, जिसे हम धर्म त्रिवेणी की संज्ञा दे तो अतिशयोक्ति न होगी वे लोग बड़े ही प्रेम और सौहार्द से जीवन की आनंद भरी बगिया में बिहार करते हैं।

नासिरा शर्मा अपने मैरिज लाइफ में प्रसन्न हैं वे लिखती है-"जो विस्तार मुझे जीने को मिला इसका सुख वही जान सकता है जिसने यह अनुभव किया है।"[17]

जिस घर का शिलान्यास यह युगल दम्पति ने किया था, उसमें किसी प्रकार का बंधन, पूर्वाग्रह खींचतान, कटाक्ष को स्थान नहीं है। डॉ.शर्मा ज्योग्राफी के लब्धप्रतिष्ठ अध्यापक रहे है। उनका बचपन अजमेर में हँसतेखेलते बीता है। "डॉ. शर्मा बचपन में कविता की तरह हर अतिथि के सामने खड़े होकर हनुमान चालीसा, गायत्री मंत्र, पढ़कर सुनाते और शाबासी लेते थे। अजमेर में बड़े पले तो ख्वाजा साहब से कैसे दूर रह सकते थे? पढ़ना, हाकी खेलना, शाम को ख्वाजा साहब की दरगाह पर जाकर कौव्वाली सुनना दिनचर्या बन गई थी।

भारत में 'मानता-मानने' (भगवान से याचना) की प्राचीन परंपरा रही है। लेकिन आज का युवा वर्ग वामपंथी विचारों से अभिप्रेरित होकर या पाश्चात्य विचारधारा की बुकनी खाकर दो नए शब्द क्या सीखा खुद को मार्डन समझ बैठी और अनास्था वादी तथ्यों का पृष्ठपेषण कर निरीश्वरवाद का पोषक हो गया है। जिससे समाज में विकृति आई है। रामचन्द्र शर्मा को उनके जीवन में सब कुछ मिला और उसका श्रेय वे ख्वाजा साहब की दरगाह को देते हैं। डॉ. राखी मौर्य लिखती है - "ख्वाजा साहब के चौखट से उनकी कई मुरादें पूरी हुई थीं, जिसमें से एक नासिरा शर्मा भी हैं।"[19]

डॉ. रामचन्द्र शर्मा इलाहाबाद के बाद 'जवाहरलाल नेहरू विश्वविधालय' के भूगोल विभाग में अध्यापन का कार्य किया। कई दिनों तक वह 'विजिटिंग प्रोफेसर' के रूप में स्काटलैण्ड एवं नागालैण्ड भी गये थे।

नागालैण्ड में 'भूगोल-विभाग' की नींव डॉ. शर्मा ने ही रखी थी। रामचन्द्र शर्मा के बारे में नासिरा जी लिखती है-"डॉ. रामचन्द्र शर्मा अस्पताल, बीमारी, कोर्ट-कचेहरी और बेकार के झंझटों से बहुत घबराते थे, ऐसे मौके पर वह मेरी मदद चाहते थे। "[20]

तमाम खट्टे मीठे अनुभवों के साथ नासिरा शर्मा जी का पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन सुचारू रूप से चलता रहा है और चल भी रहा है। थोड़ा समय से पहले डॉ. शर्मा की मृत्यु हुई जिससे नासिरा जी काफी दुखी रही थी। परंतु परिस्थितियाँ मजबूत एवं हौसले की उड़ान सब ठीक कर देता है। बकौल नासिरा शर्मा -"हलाँकि उतार-चढ़ाव सबके जीवन में आता है। मेरे जीवन में भी आया लेकिन छीटा-कशी की कोई चिनगारी हमने अपने घर में नहीं गिरने दिया। अन्तर्धर्मीय विवाह में संघर्ष तो करना पड़ता है जैसे कि मुझे भी करना पड़ा किन्तु विचारों की शुध्धता रहे और मोहब्बत से जीने की कला हो तो सब ठीक चलता है। "[21]

नासिरा शर्मा अद्भुत जीवट महिला है। उनके साहित्य में सारे जहां का दर्द विधमान है। चूँकि मोहब्बत को वे एकनिष्ठ नही मानती उसको सर्वव्यापी एवं सर्वसेवक के रूप में निरूपित करती हैं। इन सभी विशेषताओं के कारण ही नासिरा जी का दाम्पत्य जीवन उनके प्रबल इच्छाशक्ति एवं हौंसला से एक आदर्श भारतीय अन्तर्धमीय संयुक्त परिवार का दस्तावेज पेश करता है। जिसका सशक्त हस्ताक्षर नासिरा शर्मा एवं रामचन्द्र शर्मा हैं।

नौकरी एवं व्यवसाय

दैनिक जीवन को सुखमय बनाने हेतु सभी व्यक्ति को रोजगार की तलाश होती है। नासिरा शर्मा भी इससे अछूती नही रही। इन्होंने कहानी एवं लेख अपने आरंभिक जीवन से ही लिखना प्रारंभ कर दिया था। मास्टर डिग्री प्राप्त करने के बाद नासिरा शर्मा 'ईरान' से पी.एच.डी. करना चाहती थीं परंतु इरानी शासक के संबंध में आलोचनात्मक लेख' लिखने के कारण इन्हें वहाँ शोधकार्य करने की अनुमति नही मिली। तत्पश्चात् इन्होंने जामिया मिलिया स्लामिया विश्वविधालय' दिल्ली में लगभग तीन वर्षों तक फारसी भाषा एवं उर्दू का कुशल अध्यापन किया। अपने सर्जनात्मक व्यस्तता एवं देश विदेश की यात्रा के कारण अध्यापन कार्य में हो रहे व्यवधान एवं अपना शत-प्रतिशत नही दे पाने के वजह से इनको नौकरी छोड़नी पड़ी। राखी मौर्य ने अपनी पुस्तक 'नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी विमर्श' में लिखा है -"इन्हें फारसी पढ़ना-लिखना नही आता और ये विधार्थियों को गैर जरूरी सीख देती है वगैरह-वगैरह समस्याओं का सामना करना पड़ा। जिससे उन्होंने वो नौकरी छोड़ दी।"[22]

समाज को अपने सिद्धातों के अनुरूप ढालने उसके मान्यताओं के विरुद्ध कार्य करने से वह आपको प्रतिभा संपन्न होते हुए भी आपकी काबिलियत एवं व्यक्तित्व को महत्व नही देता वरन् अंधकार के गर्त में गिराने का प्रयास करता है। गैर मुस्लिम समुदाय में विवाह करने के बाद नासिरा शर्मा को 'जामिया मिलिया स्लामिया विश्वविधालय क्योंकर माफ करता? प्रतिभा साधनों की मोहताज नही होती। जब-जब समस्याओं का सॉकल पैरों को बाँधने की कोशिश किया प्रतिभाशील 'नासिरा शर्मा' उसको तोड़ने के बजाय एक दूसरी आजादी तलाश लेती हैं। "मैं जीवन को जीने का जो दरवाजा खुलवाने के लिए पीटती रही वह तो कभी नही खुला परन्तु उससे बेहतर एक दूसरा दरवाजा मेरा इंतजार करता होता है। "[23]

नौकरी छोड़ने के बाद नासिरा शर्मा जी ने 'पत्रकारिता तथा लेखन कार्य में जुट गई।' आयानगर रेडियो स्टेशन पर भी वे कई माह तक 'प्रोग्राम ऑफीसर' के पद पर कार्यरत रही। पत्रकार होने के नाते उनका सम्पर्क कई बड़ी हस्तियों से हुआ कितनों का तो इण्टरव्यू आदि उन्होंने लिया और अपनी हाजिरी एक कुशल पत्रकार के रूप में दर्ज कराई। नासिरा जी अब स्वतंत्र लेखन कर रही हैं। साहित्य के गद्य विधा पर कई कहानी संग्रह, उपन्यास, यात्रा साहित्य, लेख इत्यादि की सर्जना की। नासिरा जी का अब व्यवसाय भी साहित्य है और तमाम पुस्तक विक्रेताओं एवं खुद नासिरा शर्मा के जीविकोपार्जन का सुदृढ़ शौर्यपूर्ण साधन भी। इन्हीं विभिन्नताओं के उतार-चढ़ाव के साथ नासिरा जी इरान, इराक, अफगानिस्तान, भारत के समाज, धर्म, संस्कृति के साथ-साथ राजनैतिक मुद्दों पर मुक्त लेखन किया। सरहद पार की समस्याओं, संस्कृतियों को लेकर इनके लेख समय-समय पर निकलते रहते हैं।

"राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक एवं सामाजिक झगड़ों विशेषकर मुस्लिम समाज के यथास्थितिवादी रुझान के विरुद्ध रचनात्मक संघर्ष के लिए आप सुपरिचित हैं।"[24]

संचार माध्यम में नासिरा शर्मा के इंटरव्यू काफी चर्चित रहे। कई बार उन साक्षात्कारों का रेडियो प्रसारण भी हुआ है। रेडियो लेखन के भी अनेक प्रोग्राम आपने प्रस्तुत किया है। 'बी.बी.सी.लंदन' प्रोग्राम में उर्दू सर्विस के रूप में कार्यरत रही। इन्होंने टी.वी. सीरियल एंव कई फिल्मों का निर्माण भी किया।

वास्तविकता तो यह है कि सोने की कुदाली मिट्टी खोदने के लिए नही होती उसका अवदान जवाहरात के भावों में होती है। नासिरा शर्मा भी नौकरी पेशा रूपी मिट्टी को खोदने के लिए बनी ही नही थी, वह तो समाज की रूढ़ियों, सतही स्तर पर दम तोड़ रही मानवीय चेतनाओं एवं जीवन की यथार्थता को साहित्य के धरातल पर उकेरने के लिए बनी थी। नासिरा शर्मा रूपी कुदाली मिट्टी नही वरन् संवेदनाओं को

खोदकर संचार करने वाली कथाकार हैं। जो किसी पेशे, नौकरी, बंधन के भ्रमजाल को तोड़कर उन्मुक्त स्वर से साहित्य की संवेदना का गान करती हैं और उन क्षणिक सुखों की वेणियों से विरेचनकर खुद को मुतमईन महसूस कर रही हैं। उनके साहित्य की धारा कल-कल निनाद करता हुआ एक नए समस्या का निदान करने की खोज में आगे बढ़ता जा रहा है।

व्यक्तित्व के अन्तरंग एंव बहिरंग पक्ष

साहित्यकार के साहित्य में जो पात्र उसका नायक या नायिका होती है उसका सृजन ही वह अपनी वृत्तियों के अनुकूल करता है। सत्य घटना के मूलार्थ की पृष्ठभूमि लेकर अपनी संवेदनाओं के जल से ही चरित्र का निर्माण करना साहित्यकार का लक्ष्य होता है। ताकि वह संकल्पित उद्देश्य की पूर्ति करा सके। नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व का अनुमान पहले पहल उनके पात्रों के क्रिया-कलापों, वृत्तियों, संवादों के माध्यम से ही किया था। मेरे अनुमान की पुष्टि 1-मार्च-2015 को 'महाराजा सयाजीराव विश्वविधालय' में उस दिन हुई जब मैं उनसे 'नासिरा शर्मा': एक मुलाकात' सभा में वार्ता एवं प्रश्नोत्तरी किया। प्रश्नों के उत्तर देने में, अगर वह निजी मामले के अन्तररंग पक्ष से हों तो, गम्भीर स्वभाव का प्राणी भी उद्वीग्न हो जाता है। नासिरा शर्मा इतनी सहजता से उन व्यक्तिगत पक्षों पर बोल रही थीं जैसे वह प्रकृति के नियम के तरह दिखाई पड़ रहा हो। यथा- सूरज उगा है, तो ढलेगा, दुःख है तो सुख आयेगा। जबाँदानी एवं सत्य स्वीकारने की सहजतम व्यंजना तब हो गई जब नासिरा शर्मा स्वयं बोल पड़ती हैं -"मेरे जीवन से जुड़ी गुत्थियों को जानना है, यदि मेरे अतीत के राग को समझना है तो मेरे चरित्र को छेड़ना पड़ेगा और इसका मैं बुरा भी नही मानती चूँकि जो घटित हुआ है वह सामने आया है फिर अपने पाठकों के सामने झिझक किस बात की है।"[25]

लेखिका को सुनने के बाद, उनकी कहानियों, उपन्यासों, लेख संग्रहों के अध्ययनोपरांत उनकी सर्जना के चरित्रों की वृत्ति एवं लेखिका का चिंतन, जो सायास रूप तैयार किया वह संजीदा, सहज, सरल, व्यवहार कुशल, सारी दुनियाँ का दर्द अपने दामन में समेटे जो प्रतिमा साकार रूप धारण करती है वह है 'नासिरा शर्मा' हिन्दी की अन्यतम कथा शिल्पी ।

कुछ शोध ग्रन्थों का अध्ययन करने के दौरान ऐसा प्रतीत होता है कि शोधक एवं अन्य पुस्तककार जो नासिरा शर्मा को केन्द्र में रखकर शोध किए हैं या पुस्तक लिखे हैं उनके बाह्य व्यक्तित्व यानी शारीरिक बनावट, सुन्दरता का जिक्र बखूबी किए हैं। साथ ही साथ आन्तरिक पक्षों पर भी अपने समझ से अचछा या यूँ कहूँ कि उत्साहवर्धक वर्णन किए हैं जो मेरे हिसाब से नासिरा शर्मा के जीवन से संबंधित पर्याप्त जानकारी प्रदान करते हैं। उन ग्रंथों का जिक्र करना तर्क संगत समझता हूँ। यथा -- 1. नासिरा शर्मा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व-डॉ. विजय कुमार राउत, 2.नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में नारीविमर्श-डॉ. राखी मौर्य, 3. नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में अमरीश सिन्हा। उपरोक्त तीनों शोध ग्रंथ है इनमें उनके व्यक्तित्व की बाहरी-भीतरी ढाँचे की मुक्तस्वर से प्रशंसा हुई है। अत: इन तथ्यों पर समय जाया करने के बजाय नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व के बारे में कुछ बड़े साहित्यकारों के विचारों को जो उनके व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष को चरित्रों के द्वारा उजागर करते हैं या स्वयं मुलाकात करके नासिरा शर्मा से आकलन किए है उनको प्रस्तुत करना ज्यादा तर्क संगत समझता हूँ।

अमृतलाल नागर लेखिका के बारे में लिखते हैं -"नासिरा में विद्रोही अन्त: व्यक्तित्व है,जो शायद जन्मजात है। विदुषी, ऊँची डिग्री धारिणी, खूब पढ़ी-लिखी,खूब घूमी और खूब सोचने वाली !!" [26]

“अब आपको बता दें कि महा पंडित राहुल जी की विरासत को निभाने और मध्य एशिया की ओर रुख करने वाली यह हमारी हिन्दी की पहली लेखिका नासिरा शर्मा हैं। जिन्होंने मध्य एशिया के इतिहास के साथ-साथ इस क्षेत्र की सभ्यता, सांस्कृतिक भाषायी, साहित्यिक इतिहास का वह मानवीय आकलन किया है जो कोई और नही कर सका है। नासिरा शर्मा की गहरी समाजशास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषित नवीनतम पुस्तकआई है।'मरजीना का देश-इराक' यहाँ इराक को पश्चिम दृष्टि से नही बल्कि ओरियंटल दृष्टि से देखा और समझा गया है जिसे पश्चिम का कोई लेखक शायद ही देख या पहचान सकने की क्षमता रखता हो।"[27]

"नासिरा शर्मा में कथा कहने की जन्मजात प्रतिभा दिखाई देती है। उनके पास अनुभवों की कोई कमी नही है। अनुभूतियों का भंडार है। शैली बहुत रवाँ-दवाँ, भाषा सरल, सुलभ और प्रवहमान है। अपने पात्रों का गहरा विश्लेषण करने की क्षमता है। मुझे 'शामी कागज' संग्रह की कहानियाँ नासिरा की समकालीन तमाम हिन्दी लेखिकाओं से भिन्न लगी। उन कहानियों को पढ़ते हुए लगा एक नई-शैली, एक नई संवेदना और एक नए भाव-बोध का अहसास।”[28]

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि नासिरा शर्मा का स्वभाव, संवेदना किस रूप का है अलग-अलग समीक्षक उनके पात्रों एवं रचनाओं के संवेदन दृष्टि से निर्धारित करते है। शान्त एवं गंभीर स्वभाव की धनी नासिरा शर्मा को 'अमृतलाल नागर' जो विद्रोही अर्न्तव्यक्तित्व की संज्ञा से संबोधित किए हैं।

नासिरा शर्मा आम् भारतीय मध्यम कद काठी और गौर वर्ण की जीवट महिला हैं। उनकी चमकीली आँखों में जहाँ एक ओर स्नेहिल भाव झलकता है। वहीं दूसरी ओर लेखकीय व्यक्तित्व के अनुरूप पैनी नजर वाली तेज तर्रारनारी प्रतीत होती है।प्रसंगवश 'सारिका' पत्रिका के कोई बत्तीस वर्ष पूर्व एक अंक में लेखिका का व्यक्तित्व परिचय कुछ इस अंदाज में लिखा था-"कंधे से नीचे जाते खुले-लम्बे सीधे-

बाल गोल चेहरा चमकती हुई आँखें, चेहरे पर टपकता हुआ उजास और विश्वास। नाम नासिरा शर्मा !"[29]

नासिरा शर्मा सादगी पसंद लेखिका है। सादगी पूर्ण रहन-सहन, खान-पान उनके जीवन का अभिन्न अंग है। दिल्ली जैसे शहर में रहने के बावजूद भी वहाँ की चकाचौंध उन्हें अपनी तरफ कभी आकर्षित नही किया। उनका निवास सदन दिल्ली से दूर 'छतरपुर पहाड़ी मंदिर के विपरीत दिशा में बना है जहाँ गाँव सुलभ शान्ति सुकून खेत-खलिहान, पेड़-पौधे से घिरे हुए इलाके बहुतायत मात्रा में है। यह जगह सुकून प्राप्त करने के लिए वे स्वयं चुनी थी। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व सामने वाले के हाव-भावानुरूप तब्दील हो जाता है। परन्तु नासिरा शर्मा इसके ठीक विपरीत है वे तो बिना पूर्ण परिचय के किसी से बात नही करती। एकबार खुल जाने के बाद फिर उनके सदृश मिलनसार, व्यवहार कुशल मैत्री-भाव की दूसरी मूर्ति नही मिलती।

वह भावुक महिला हैं। संवेदनशील इतनी ज्यादा कि आम् जनता के करुण क्रन्दन से व्यथित हो जाती है। दिल की अमीर इतनी ज्यादा कि अमीरी सलीका बन जाय। अन्याय के विरुद्र आवाज उठाते वक्त आक्रोश का जो लावा उनकी रचनाओं में फूटता है वह पाठक को स्वयं शर्माजी के सामने श्रध्धानवत बना देता है हिम्मत और दिलेरी व्यक्तित्व का दूसरा पहलू है। सच तो यह है कि वे एक स्वाभिमानी स्त्री या यों कहूँ (स्त्रीत्व, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की परिकल्पना से परिपूर्ण लेकिन अहंकार लेशमात्र का भी नही है। लेखिका को बच्चों से बहुत प्रेम है। वे कहती है- "बच्चे मुझे बहुत अच्छे लगते है। "[30]

निडर स्वभाव एवं गंभीर ताना-बाना से लबरेज लेखिका अपनी बात को बिना किसी लाग-लपेट के सीधे एवं सपाट लहजे में कहती है। उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता उनके द्वारा विरचित पात्रों में भी परिलक्षित होती है। चाहे वह 'शाल्मली

उपन्यास की नायिका 'शाल्मली हो या जीरोरोड की 'कविता' या फिर दूसरा ताजमहल की 'नयना' हो। वैसे नासिरा के निर्भीक व्यक्तित्व का अभिज्ञान सभी को है। उन्होंने स्वयं एक बार कहा था अपने साक्षात्कार के दौरान "अदब, ने जिन्दगी ने शराफत और इन्सानियत के साथ-साथ बुजदिली भी पैदा कर दी है। इसे स्पष्ट करते हुए वे कहती है--"मुझे अच्छी तरह याद है क्योंकि मैं आज भी इस दर्द से गुजरती हूँ, और अपने अंदर तड़प-तड़प कर रह जाती हूँ, मगर बहादुरी का कदम नही उठा पाती हूँ। जो अक्सर लोग प्रतिक्रिया के रूप में उठा लेते हैं। पर अपनी इस कमजोरी को पहली बार मैने अगस्त 1996 में हुई दुर्घटना के बाद बहुत शिद्दत से महसूस किया कि मैं बदला लेने, किसी को नुकसान पहुँचाने और और किसी को जलील करने की क्षमता कत्तई नहीं रखती हूँ और धर्म के अथाह समंदर में जिसका स्वाद नमकीन है अक्सर मैं खारे पानी में डूबती तैरती हूँ। मगर ये आँसू बेचारगी के नही आक्रोश के होते हैं। जब कभी फैसला लेने की घड़ी आई तो हमेशा मेरी कोशिश रही है कि मै बहादुरी की इस चमचमाती तलवार को म्यान में रख बुजदिली से कोई ऐसा कदम उठाऊँ जोउस रास्ते को जाए जहाँ दरवाजे दूसरों के लिए खुले हों, बन्द नहीं। यही मेरी ताकत है। यही वजह है कि मेरे लेखन में या किरदारों में आपको वह 'बुजदिली' नही मिलती जिसका अर्थ 'भीरू' 'डरपोक' होने से लगाया जाता है।"[31]

लेखिका का व्यक्तित्व पारदर्शी होने के कारण उनमें दृढ़ इच्छाशक्ति की धारा प्रवाहित होती नजर आती है। किसी तथ्य को गोपनीय रखना उनको किसी भी शर्त पर स्वीकार नही है। उनकी यह विशेषता उनकी नायिकाओं शाल्मली, पाशा, फरजान, नीता, कुसुम, सबीना, महरूख आदि में स्वच्छंद रूप से परिलक्षित होता है। उनके आचार-विचार, सिध्धातों आदि का प्रयोग उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी में व्यवहृत होती है। जिसमें पारदर्शिता एवं एक खुलापन है। नासिरा शर्मा किसी बात को रहस्यमय रखना अपने शान के खिलाफ समझती हैं।

लेखिका भारतीयता और भारतीय परिवेश की संवेदनाओं का समन्वय मात्र नहीं किया अपने रचनाओं में बल्कि भारत के मूल समस्याओं के साथ-साथ सरहद पार के देशों में यातना झेल रहे उन हताश परिन्दों को साहित्य में रचाया बसाया है जो किसी कारण वश या तो इस देश को छोड़कर परिवार को आर्थिक तंगी से बचाने हेतु बाहर नौकरी पेशा कर रहे है या फिर वहीं के मूल निवासी जिनका दर्द भारत के आम् जन के दर्द जैसा है उसको भी अपने लेखन में पूरे गर्मजोशी से स्थान दिया है। बिना किसी पक्षपात के पूरी ईमानदारी से उन्होंने रचनाधर्मिता की है। वे कहती हैं कि -"मै सीमा व रंग भेद को नहीं जानती, मेरे लिए इन्सान होना काफी है। वह कहाँ का है और किस धर्म व भाषा का है, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है। शायद इसी सोच के चलते मैं विदेशी धरती पर भारतीय किरदारों को नहीं ढूढ़ती रही हूँ, बल्कि जहाँ जिस जमीन पर जाने का मौका मिला वहीं के इन्सानों के दुःख दर्द को समझने की कोशिश की। इस मामले में मैं कोई खाना बंदी नहीं करपाई।"[32]

पुरस्कार व सम्मान

नासिरा शर्मा पहले परिवेश की परिस्थितयों में जीती है उसके बाद व्यावहारिक जीवन में उसे उतारती हैं। तब जाकर अनुभवों का यथार्थ घटना से मणिकांचन प्रयोग करके अभिव्यक्ति की सामग्री को एक अक्षुण्ण रचना का आकार प्रदान करती हैं। पुरस्कार या सम्मान किसी खिलाड़ी या प्रतियोगी को प्रोत्साहन देने का कार्य करता है जिससे उसकी गति तीव्र हो सके। साहित्य दिमाग से उत्पनन होने वाली तर्क-शक्ति नही है वह तो लोकसंवेदन दृष्टि का प्रतिफलन है जिसे पुरस्कार नहीं संवेदनशीलता गति प्रदान करती है। किसी भी साहित्यकार, कलाकार, चित्रकार आदि के लिए उसका सबसे बड़ा पुरस्कार क्रमशः पाठक, भावक, दर्शक, इत्यादि की उपस्थिति होती है। जहाँ तक विदित है अपने साहित्य के विषय-वस्तु एवं घटनाओं के नवीन एवं चर्चित तथ्यों के चुनाव के कारण नासिरा शर्मा विश्वविश्रुत है, वह इस पार की बात हो या

सरहद पार की। उनकी उसी प्रतिज्ञा के कारण उन्हें समय-समय पर विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा गया।

इरान के जीवन पर संघर्षशील रिपोर्टिंग करने के लिए उन्हें सन् 1980 में प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश में 'पत्रकार श्री' सम्मान दिया गया। सन् 1987-88 का हिन्दी अकादमी, दिल्ली का 'अर्पण सम्मान' दिया गया। इसके अतिरिक्त 1995 में भोपाल (म.प्र.) विख्यात 'गजानन मुक्तिबोध' राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया गया। सन् 1997 में बिहार सरकार के राजभाषा विभाग की तरफ से 'महादेवी वर्मा' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 2000 में पुनः हिन्दी साहित्य अकादमी, दिल्ली ने उन्हें 'कीर्ति सम्मान' से सुशोभित किया। दस वर्ष पूर्व सन् 2008 में उन्हें ब्रिटेन की राजधानी 'लंदन में 'कथा यू. के.' नामक हिन्दी संस्था द्वारा हाउस ऑफ लार्डस' में आयोजित सम्मान समारोह में 10वाँ अन्तराष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान" जो उनके उपन्यास 'कुइंयाजान' के लिए दिया गया। उन्हें यह सम्मान ब्रिटेन के आंतरिक सुरक्षा राज्यमंत्री 'टोनी मेकनलरी' ने दिया। इसके अतिरिक्त भारत-रूस साक्षरता क्लब एवं रूसी कलासंस्कृति की ओर से उन्हें बाल-साक्षरता के लिए "भारत-रूस अवार्ड'' (Indo (Indo-Russian Award for Childern Literacy) से सम्मानित कियागया।"[33]

जो एवार्ड नासिरा शर्मा को कई वर्ष पूर्व मिल जाना चाहिए था वह अभी-अभी पिछले वर्ष 21 से 26 फरवरी 2017 के बीच आयोजित होने वाली साहित्योत्सव में दिया गया। वह पुरस्कार साहित्य अकादमी सम्मान है। जो नासिरा शर्मा के उपन्यास 'पारिजात' के लिए 2016 का साहित्य अकादमी पुरस्कार है।

नासिरा शर्मा का कृतित्व : परिचयात्मक विवरण

साहित्य संवेदनाओं के छटपटाहट की अभिव्यक्ति होता है। जब काव्य जगत संवेदनाओं को तार्किक ढंग से विचारशील वृत्तियों को समोने में खुद को असहज महसूस करने लगा, वहीं कथा साहित्य का जन्म होता है। साहित्यकार पहले व्यक्ति

होता है और बाद में साहित्यकार । व्यक्ति के पदवी पर रहते हुए वह सुख-दुख के अनुभवों में खुद को कभी प्रसन्न रखता है कभी विचलित। दुःखों या सुखों की अतिशयता ही मोहभंग का वाहक है और इसी से उत्पन्न होता है एक नवीन प्रजापति जो पूरे संसार के दर्द को स्वयं की संवेदना का अधार बनाकर अभिव्यक्ति की अविचल धारा को एक नया आयाम प्रदान करता है। यही अभिव्यक्ति लगभग 1900 ई. के बाद विभिन्न विधाओं के रूप में (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध) प्रकट होने लगी जहाँ से कथा साहित्य का आविर्भाव होता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इन महिला साहित्यकारों ने अनेक अछूते संदर्भों का उद्घाटन किया है। नासिरा शर्मा वर्तमान समस्याओं, भावबोध, परिवेशगत अनुभूति और संवेदना आदि को लेकर साहित्य सृजन करने वाली महत्वपूर्ण साहित्यकार है। इनके लेखन का क्षेत्र देश और विदेश की असीमित परिधियों में फैला हुआ है। अभी तक इनकी दस कहानी संग्रह, नौ उपन्यास, दो लेख संग्रह छः अनूदित ग्रंथ, तीन पत्रिकाओं का संपादन, चार टी.वी. सीरियल, पाँच से अधिव टेलीफिल्म और पाँच नवसाक्षरों के लिए कहानी-पुस्तक प्रकाशित हो चुके हैं।

नासिरा शर्मा के साहित्य का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है-

उपन्यास साहित्य

सात नदियाँ: एक समुन्दर

यह उपन्यास सामूहिक क्रान्ति द्वारा ईरान के 'शाहरजा पहलवी' को सत्ताच्युत करके उन्हें देश छोड़ने पर मजबूर करने और 'अयातुल्ला खुमैनी' को सत्तारूढ़ बनाने की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। इतिहास पुरुषों के अलावा इसमें बहुत से अन्य पात्र भी हैं जिन्हें लेकर कथा का ताना-बाना तैयार किया गया है। संभवतः वास्तविक है। इसकी पूर्व सूचना इसी उपन्यास की भूमिका द्वारा लेखिका स्वयं पुष्ट

की है- "इस उपन्यास के चरित्र आज जिन्दा नहीं हैं जिनको मैं धन्यवाद दूँ कि वे मेरे साथ उपन्यास के पात्रों में ढले। वे सब बहिश्त-ए-जहरा (कब्रिस्तान का नाम) में धरती के आगोश में अंधेरी कब्रों में सो रहे हैं। मेरे अन्दर इन्हीं की मादों का एक कब्रिस्तान आबाद है। जिसकी सच्ची तस्वीर यह उपन्यास है।"[34]

सात नदियाँ एक समन्दर नासिरा शर्मा द्वारा ईरान की भयावह स्थिति से अपनी क्रान्ति पर लिखा गया है। जहाँ पर वक्त अबाध गति से दौड़ता है और घटनाओं के समय की पहिया घूमती नजर आती है। नदियों का अन्त समन्दर में मिल जाना है, मगर पानी के भाग्य में सिर्फ बहता जाना है। इसी का रूपक विधान अभिव्यंजित हुआ है। इस उपन्यास की सातों नारी पात्रों के द्वारा सात नामों से सात तथ्यों सात समन्दरों की गहराई को (सनोवर, तैय्यबा, मलीहा, सूसन, महनाज, परी और अख्तर) अपने में समेटे हुए हैं। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का जो बहाव निरंतर बहने वाला पानी है उसकी कल-कलाहट लहर इस उपन्यास की हर पंक्ति में प्रतिध्वनित होती है -"कहाँ होगी 'परी' इस समय? जाने मलीहा का क्या हाल है? तय्यबा तो जाने किस भूल-भुलैया में फँसी होगी, खुदा करे जिन्दा हो, हम सबसे महनाज निकली, कम से कम देश से दूर, विदेश में सुख से तो रह रही है। यूँ चिन्ता, भय से अधमरी तो नही रहती है। क्यों न महनाज को पत्र लिखा जाय, शायद कल कोई शहरजाय तो वहीं से पोस्ट कर दे। यह सोचकर 'सूसन' बिस्तर से उठकर कुरसी पर बैठ गई और पत्र लिखी। गुजरे कल की मीठी यादों का जिक्र किया।"[35]

शाल्मली

नासिरा शर्मा का दूसरा उपन्यास है। जिसका प्रकाशन वर्ष 1987 है। आज की समर्थ नारी को नए आयाम देने वाली शाल्मली के जीवन की मर्म कथा का संवेदनात्मक वर्णन एवं कारुणिक वाक्पटुता से ही उपन्यास की शुरुआत होती है- "मैं केवल एक सूखा वृक्ष भर रह गई हूँ। न फूल न शाख, न पत्ती, न छाया, न ठण्डक

ऐसे सूखे वृक्षों की सरण में भला कौन आना पसंद करेगा। धरती ने भी जैसे अपने स्रोत समेट लिए हैं। तभी तो मेरी जड़े तरावट को तरसती, धरती छोड़ने लगी हैं। ऐसा सूखा, छाया रहित, ठूंठ वृक्ष तो बस जलाने के काम का रह जाता है। लपटों के बीच कोयला बनती काली काया।"[36]

शाल्मली उपन्यास मनोवैज्ञानिक स्तर पर नारी संवेदनाओं को प्रथमतः एक आकार देता है। उसके बाद उसको स्त्री होने के अभिशाप का अभिज्ञान कराता है। लेखिका समाज के सामने प्रश्न उठाती है। नारी स्वयं से प्रश्न पूँछती है और उसके समाधान की तलाश करती है।- "औरत वास्तव में क्या है? इस धरती पर वह क्या करने आई है? शाल्मली लाख चाहने पर भी इन प्रश्नों के उत्तर न ढूंढ़ पाती और कहीं अंदर बिखरने लगती।"[37]

उपन्यास की धारा 'शाल्मली' का नरेश से विवाह के उपरान्त बहना प्रारंभ होता है। नायक-नायिका के ग्राहस्थ्य जीवन की श्रृंखला वसंत की सौन्दर्यता का भी अपने जीवन की चारुता से मान भंग कर देते हैं। शाल्मली का बड़े ओहदे पर होना नरेश के लिए हथियार बन गया था। चीजों को प्राप्त करना तो ठीक था किंतु नरेश महत्वाकांक्षा के शिखर पर आरूढ़ होकर शाल्मली के लिए मुश्किलें उत्पन्न करना प्रारंभ कर देता है। आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक तीनों रूप से प्रौढ़ शाल्मली को भी पुरुष अपने चॉसर में फँसाने से बाज नहीं आता और भोगने की वस्तु कहकर उसके मान का मर्दन करता है। "तुम हर छोटी बात पर इतने उत्तेजित क्यों हो जाते हो? शाल्मली ने नरेश को घूरा।"[38]

"इसलिए कि तुम औरत हो इन बातों को गहराई से....समझती। मैं कुछ कहता हूँ तो टाल जाती हो, तो मुझे गुस्सा आएगा या नहीं? नरेश ने झुंझला कर कहा।"[39]

उपन्यास न सुखान्त होता है न दुखान्त। पुरुष सत्ता का न विरोध होता है न नारी हारती है। संबंधों का एकात्म भंग जरूर होता है किन्तु नायिका द्वारा संबंध

विच्छेद की संभावना समाप्त हो जाती है, वह जीवन का उद्देश्य रोटी और शारीरिक संबंध तक सीमित नही रखती बल्कि दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर संबंधों की व्याख्या करती है और वैचारिक स्वतंत्रता में विश्वास रखती है -"औरतों के पास औरतों के पास दो ही अभिव्यक्तियाँ हैं या सर झुका देना, या समस्या को अधूरा छोड़ सर कटा लेना। मेरा विश्वास न घर छोड़ने पर है न तोड़ने पर, न आत्म हत्या पर है, न अपने को किसी एक के लिए स्वाहा करने में है। मैं तो घर के साथ औरत के अधिकार की कल्पना भी करती हूं और विश्वास भी। अधिकार पाना यानी 'घर-निकाला' नहीं और घर बना रहने का अर्थ 'सम्मान' को कुचल फेंकना नहीं हैं। यह जो हमारे मन मस्तिष्क में अति का भूत सवार हो गया है वही जीवन के लिए विष समान है।[40]

लेखिका किसी भी स्तर पर आत्मा की बंदिस स्वीकार नही करती हैं। एक स्तर के बाद पुरुष और स्त्री का भेद समाप्त हो जाता है। किंतु नरेश की भीरुता रक्तहीन दस्युता शाल्मली को गहरे आहत करता है। शाल्मली"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी के प्रसंग का अतिरेक करके हृदय की विशालता से नरेश की अतुकान्त व्यवहारिकता को अपने में समो लेती है।

ठीकरे की मंगनी

उपन्यास 1889 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की नायिका 'महरूख' शाल्मली की तरह धीर गंभीर एवं आत्मनिर्भर नारी है। पुरुष सत्ता के धोखे के सामने नतमस्तक न होकर महरूख अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करती है।खानदान में कई पीढ़ियों के बाद लड़की का जन्म होता है। महरूख की खाला अपने बेटे 'रफत' से उसकी 'ठीकरे की मंगनी' करा देती है। महरूख उन युवतियों में से है जो सामाजिक रूढ़ियों पुरानी परंपराओं को तोड़कर स्वयं अपने भविष्य का निर्माण करती है। वह समाज की उन युवतियों में नही है जो समाज के बन्धनों के कारण घुटन भरा जीवन

व्यतीत करती है। अपितु रूढ़ियों एवं बंधनों को तोड़कर मुक्त हवा में सांस लेने को व्याकुल है। महरूख एक ऐसी नारी के रूप में चित्रित की गई है जो परिस्थितियों के समय आत्मसमर्पण नही करती बल्कि उसके विपरीत दिशा में उसका सामना करती हुई उस पर विजय प्राप्त करती है।

एक घर औरत का अपना भी तो हो सकता है। जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग उसकी मेहनत और पहचान का हो। इसी कथन पर आकर महरूख शाल्मली की कथा को आगे बढ़ाती है और अलग अस्तित्व का निर्माण करती है। नासिरा शर्मा अपने कथन वाक्य से स्पष्ट करती हैं -"मेरा विश्वास है कि इंसान दो बार जन्म लेता है, पहली बार माँ की कोख से और दूसरी बार हालात की मार से।"[41]

हालात की मार ही स्त्री संवेदना की सृजन भूमि है। इन्हीं रास्तो पर चलने वाली पात्र है 'महरूख' जो जिन्दगी को अपने नजरिए से देखकर उसको एक पहचान, एक अर्थ देती हुई जन समुदाय की आवाज में उदय होती है।

जिन्दामुहावरे

जीते जागते दर्द का दरिया बहाता हुआ ई. सन् 1993 में प्रकाशित भारत और पाकिस्तान विभाजन से उत्पन्न विभीषिका का सशक्त दस्तावेज है। इस विभाजन के कारण दो देशों में बँट जाने वाले लोगों की त्रासदी, कसक, को बेहद मार्मिक ढंग से उकेरा गया है।

यह उपन्यास समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में अपना विशेष योगदान देकर साहित्य में अपनी अलग उपस्थिति दर्ज कराता है। सन् 1947 में भारत का धर्म के नाम पर विभाजन हुआ। विभाजन के समय तमाम मुस्लिम पाकिस्तान चले गए। पाकिस्तान में रह रहे अनेक हिन्दुओं को मौत के घाटउतार दिया गया। जब विभाजन की भौगोलिक सीमा को अलग किया जाता तो वहाँ सिर्फ दो सीमाओं का विभाजन नही होता बल्कि व्यक्ति के अस्तित्व एवं दिलों का विभाजन होता है। विश्लेषण करें

तो 'राही मासूम रजा' के उपन्यास 'आधा गाँव' की अगली पेशकश के रूप में 'जिन्दा मुहावरे' लिखा हुआ जान पड़ता है। हिन्दुस्तान में बँटवारे की तकलीफ को करोड़ों लोगों ने झेला है। फैजाबाद के रहीम साहब अपना गाँव, घर, जमीन, अपना वतन छोड़कर नहीं जा सके। किन्तु उनका बेटा निजाम पाकिस्तान चला गया। वहाँ अमीर बनने पर भी वह अपनी जन्मभूमि, अपने लोगों को भूल न सका। इसी पीड़ा इसी दर्द को नासिरा शर्मा ने अपनी लेखनी में रचाया बसाया और कागज पर उकेरा है । इस ऐतिहासिक हादसे से उत्पन्न पीड़ा किसी एक देश की नहीं बल्कि समूची इन्सानियत की है। नासिरा शर्मा ने वे तमाम सबूत इकट्ठा करके यह दर्शाने का प्रयास किया है कि स्वार्थों के कारण भले ही धरती बॅट जाय पर इन्सानी रिश्ते नही बँटते--" दोनों तरफ के बासिन्दों के दर्द की जमीन एक है खून का रंग वही इन्सानी है, बस जरा सा फर्क यह है कि इधर वाले जाने वालों के गुनाह की सलीब पर टाँग दिए गए हैं और उधर वाले लगातार यादों के तहखाने से गुजर रहे हैं।"[42]

उपन्यास के कथन की सिलवटों को नासिरा शर्मा इस भाँति कसा है कि तमाम सुधीजन अपना-अपना मंतव्य अलग-अलग दिए हैं- सत्य देव त्रिपाठी का कथन है - "इसमें आधुनिकता का पक्ष उस मानवीय बिन्दु पर स्थित है, जहाँ जन्म शैशव युवाकाल की मोहब्बत का समुद्र ठाँठे मार रहा है, परंतु किनारे से टकराहट लौट जाने को विवश है।"[43]

लेखिका ने पाकिस्तान और भारत के मुसलमानों की पीड़ा का अंकन किया है। वास्तव में जिस प्रकार किसी दरख्त से अलग हुआ पत्ता दोबारा न उसके शाखों से जुड़ सकता है और न ही दूसरी जमीन पर हरा-भरा। एक बार अपनी जमीर एवं जमीन से विलग हो जाने के बाद व्यक्ति न तो पूर्णत: दूसरी कौम को अपना पाता है और न ही पुनः अपनी सरजमी पर राजनैतिक षडयंत्रों के कारण वापस आ पाता है इसी दर्द एवं पीड़ा की करुण वेदना से इस उपन्यास का सृजन हुआ है। लेखिका

उपन्यास की भूमिका के दो शब्द में लिखती है "उस हकीकत से इंकार नहीं किया जा सकता कि आज दोनों देशों में रहने वाली अधेड़ और जवान होती नस्लें बँटवारे जैसी ऐतिहासिक घटना की चश्मदीद गवाह नही है। अगर उसकी अनुगूँज न किए गए गुनाह कि प्रताड़ना बन बचपन से उसका पीछा करती उनके दिल व दिमाग पर कसाद और कटाक्ष के रूप में कोड़े बरसाती उन्हें आत्मग्लानि के सरोवर में गर्दन तक डुबोती रही।"[44]

इस उपन्यास में विभाजन के समय जो युवक बड़े अरमान लेकर सपनों का देश पाकिस्तान चले गए थे उन्हें पाकिस्तान के मुसलमानों ने हृदय से अपनाया नही। कलमकार अपने दो शब्द के वक्तव्य में उपन्यास का निचोड़ व्यक्त किया है-"मेरी कोशिश इस उपन्यास के जरिए इतनी है कि मैं 'जिन्दा मुहावरे' के पाठकों को उस सेतु पर लाकर खड़ा कर सकूँ जो एक इंसान से दूसरे इंसान तक जाता है और जिसके नीचे मोहब्बत का समंदर ठांठे मारता हो ।"[45]

अक्षयवट

यह नासिरा शर्मा का महाकाव्यात्मक उपन्यास है। इसका प्रकाशन ई. सन् 2003 भारतीय ज्ञानपीठ (नई दिल्ली) में हुआ था। यह उपन्यास इलाहाबाद को केन्द्र में लेकर लिखा गया है। इसमें इलाहाबाद शहर की संस्कृति धरोहर, पुलिस द्वारा होने वाला अत्याचार, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, युवा आक्रोश आदि मुद्दों को अभिधात्मक शैली में दिखाया गया है। तीज त्योहारों की सकारात्मक पहलुओं को प्रदर्शित करते हुए मेला-महोत्सव के रेल-पेल एवं धर्म के नाम पर छलावा परोसने वाले पंडो, समाज मे अराजकता फैलाते इस्पेक्टर श्यामलाल ऐसे अनेक व्यक्तियों एवं अधिकारियों के चरित्र को समाज के सामने उजागर किया है।

इस उपन्यास के फ्लैप पर लिखा है--"दरअसल 'अक्षयवट' प्रतीक है उस अविराम भावधारा का उस अक्षर विरासत का, जिसका शहर इलाहाबाद की धमनियों

में निरंतर विस्तार पाता है। कहना होगा कि नासिरा जी के इस'अक्षयवट' उपन्यास में इलाहाबाद शहर अपने सारे नऐ -पुराने चटक-मध्धिम रंगों और आयामों के साथ जीवन रूप में उपस्थित है। इसमें शहर की धड़कन में रची-बसी-ऐसी युवा जिन्दगियों की मर्मस्पर्शी कहानी है। जो विरासत में मिली तमाम उपलब्धियों के बावजूद वर्तमान व्यवस्था की सड़ांध और आपाधापी में अवसाद भरी जिन्दगी जीने के लिए अभिशप्त है निःसन्देह नासिरा शर्मा ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से जीवन की गहन जकड़न और समय की विसंगतियों को पहचानने और उनसे मुठभेड़ करने की कोशिश की है। वास्तव में अक्षयवट को पढ़ना एक बनती-बिगड़ती और बदरंग होती सभ्यता साक्षात्कार करना भी है। "[46]

अक्षयवट के कथानक का मुख्य पात्र जहीर है। और उसके साथ रमेश, मुरली, बसंत यादव, सलमा, जगन्नाथ आदि है।

एक तरफ हिन्दुस्तान की स्त्री समस्या को प्रतिबिंबित करती और दो परिवेशों की अभिव्यक्ति करती हुई नायक दादी माँ, फिरोजजहाँ और उसकी 'माँ' जिनके परिवार पर पीढ़ियों से वैधव्य का अभिशाप छाया है। उनके साथ है 'जहीर' उनके साथीगण।

दूसरी तरफ है- समाज की भ्रष्ट समस्या का प्रतिनिधित्व करते सामने हैं - इंस्पेक्टर श्यामलाल त्रिपाठी, समाज के भ्रष्ट लोग कुछ नेता एवं जमाखोर व्यापरी । इन्हीं को प्रतीक बनाकर 'अक्षयवट' का सारा कथाक्रम इलाहाबाद के भौगोलिक दायरे में मूल्यों और मूल्यहीनता के लंबे संघर्ष के दौरान विभिन्न पड़ावों से गुजरता है। आदि से अंत तक तमाम सामाजिक मुद्दों, तनावों, विवादों से टकराता है। समाज के जिन 'अक्षय' प्रश्नों को हॉसिए पर खड़ा कर दिया गया है, उसके आर्तनाद को पाठकों के समक्ष रखता है और शोषण के संभवतम आयामों को कई स्तरों पर अनुसंधायित करता है।

उपन्यास में लेखिका लच्छेदार शब्दावलियों एवं मुहावरों से संवेदनशील मुद्दों को भी सहज अभिव्यक्ति प्रदान की है।-"टोनी ने आगा भय्यू को काट गिराया। बेसहारा मंझा हवा में डोलता हुआ बिना पतंग के शाम ढले जब नीच गिरा तो एक तेज दौड़ती मोटर साइकिल सवार की गर्दन को घायल करगया। जब तक यह रफ्तार कम करता, मंझे को हटाता, तब तक त्वचा ने कटकर उसकी सफेद शर्ट पर लाल खून की पिचकारी चला दी।"[47]

धर्म, बाजारवाद, पुलिस-प्रशासन, मेला, तीज-त्यौहार इत्यादि की सरसता के साथ-साथ भ्रष्ट व्यक्तियों एवं आराजक तत्वों के व्यवधान से धीरे-धीरे महाजनों (अच्छे व्यक्तियों) का इन चीजों से मोहभंग भी उपन्यास में परोक्ष रूप से दिखाई पड़ता है- "बाजार ने पिछले कई दशकों से धर्म को गोद में ले रखा है। ऐसे अवसरों पर साड़ी जेवर खाने-पीने की नयी से नयी चीजों का प्रचार धार्मिक भावनाओं के मिश्रण से किसी जाल की तरह फैला हुआ था, धर्म का मूल भाव तो कहीं खो चुका था। किन्तु निष्ठा अलबत्ता शोख रंगों में अपने को अभिव्यक्त करने के लिए व्याकुल नजर आ रही थी।"[48]

कुइयाँजान

इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 2005 में 'सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली में हुआ था। लेखिका द्वारा रचित यह उपन्यास है तो विश्वव्यापी जल समस्या पर केन्द्रित परंतु रत्ना, रमजानी, समीना, साकिया, खुरशीद आरा और सकरआरा के रूप में उपन्यास रूपी माले में पिरोई गई मनकाएं अपने मनोभावों एवं संवेदनाओं की अदाकारी एवं कथोपकथन की अदायगी के माध्यम से विभिन्न प्रकार के स्त्री संवेदनाओं एवं सामाजिक परिवेश के पहलुओं को चित्रित करती है। नासिरा उकेरे है। शर्मा ने अपनी रचना धर्मिता के माध्यम से सरस एवं जीवंत चित्र इसके पात्रों की

अमित जिजीविषा के साथ समूची कथा-यात्रा में सरस्वती की अन्तर्धारा की भाँति 'जल-गाथा' भी प्रवाहित होती रहती है--

"गुड़यां रे गुड़यां

ओय मेरी प्यारी कुड़यां

अपने खजनवा से

दे दो मोको पनिया

गुड़यां रे गुड़यां

रूठो ने मेरी बहनिया

दे दो मुझे पनिया

ओ मेरी गुड़यां । "[49]

लेखिका ने छोटी-छोटी सरस कथाओं के छीटों का फुहार देकर समाज में विश्वव्यापी जल समस्या पर गहरा दुःख प्रकट किया है। जल के कारण दैनान्दिक क्रिया-कलाप किस प्रकार प्रभावित होता है उसका जिक्र उपन्यास के आरंभ से ही परिलक्षित होता है। इस उपन्यास का प्रारंभ एक क्लासिक संकल्पना से होता है।

मस्जिद वाली गली के इमाम का इंतकाल हो गया है। उन्हें दफन करने के पहले शव को नहलाने के लिए पानी की तलाश हो रही है। नल सूखे पड़े हैं।- "मस्जिद के मौलाना साहब गुजर गए है, अब परेशानी है ...आखिरी गुस्ल के लिए पानी नही है।"[50] ऐसी संकल्पनाएं जो सर्वोत्तम शब्द प्रयोगो से भाव-बोध कराती है। पूरे उपन्यास में विपुलता से पढ़ने को मिलती है। कहीं-कहीं आंचलिक शब्दों की चाशनी भी मिठास देता प्रतीत होती है। यथा-"कितना सुन्दर! कितनी मनमोहिनी सूरत है इसकी जैसे स्वयं मुरली मनोहर साक्षात अखियन के सामने आ गए हो। "[51]

"बताशे वाली गली में सुबह फूट चुकी थी, मगर उसका उजाला तंग गली में अपना दूधिया रंग अभी बिखेर नहीं पाया था। मंदिर की घंटी और दूधवाले की सायकिल की टनटनाहट से एक दूसरे से सटे घर कुनमुना उठे। "[52]

"यह उपन्यास बताता है कि जमीन और इंसान की प्यास कैसे एक-दूसरे से गहरे में जुड़ी है। पानी के रहने और न रहने पर, दोनों हालतों में इंसानी रिश्ते के रंग और संबंध मुखतलिफ हो उठते है।"[53]

इंसानी संवेदना और धरती से पानी के सूखते जाने की कहानी को वरिष्ठ उपन्यासकार नासिरा शर्मा ने एक पुरे उपन्यास में इस प्रकार ढाला है कि कहानी खुद-ब-खुद बहती चली गई लगती है। इस कहानी में रचनाकार के जीवन अनुभव भी हैं और स्मृतियों की भीगी परतें भी यहां कथा में सारा जहान तो मौजूद है ही, खुद उपन्यासकार भी उनका एक हिस्सा है। उसे यकीनहै कि जिस दिन इंसान अपने इंसानी जज्बों को शुष्क होने से बचा लेगा, उसी दिन वह अपने नैसर्गिक स्त्रोतों को भी तबाह होने से बचा लेगा।

इस उपन्यास की केन्द्रीय समस्या पर ध्यानाकर्षण करते हुए राधेश्याम तिवारी का कथन है-"कुइयांजान उस आदिम जलस्रोत का प्रतीक भी है जिसके पास अनंतकाल से प्यासे जाते रहे हैं। वह जल स्रोत अब धीरे-धीरे सूखता जा रहा है। अगर और गहरे जाए तो यह जलस्रोत प्रेम का जलस्रोत भी लगता है जिसकी निरंतर पतली होती जलधारा सूखने के कगार पर है। "[54]

पारिजात

यह उपन्यास 2010 में किताबघर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 2016 में साहित्य अकादमी' द्वारा पुरस्कृत अनोखा उपन्यास है पारिजात उपन्यास नासिरा शर्मा द्वारा लिखा गया सिर्फ उपन्यास मात्र नही है बल्कि उनकी सकल रचनाधर्मिता का निचोड़ या सार ग्रंथ है।

पारिजात केवल एक वृक्ष, कथा और विश्वास मात्र नही है। बल्कि यथार्थ की धरती पर लिखी एक ऐसी तमन्ना है जो रोहन के खून में रेशा-रेशा बनकर उतरी है और रूही के श्वासों में ख्वाब बनकर घुल गई है। उपन्यास में पारिजात एक रूपक नही, वह दरअसल नए-पुराने रिश्तो की दास्तानहै।

आज का भारतीय युवा वर्ग विदेशी चकाचौंध के इतने आदी हो गए हैं कि विदेशी धरती पर रहना एवं नजदीकी विषम-लिंगी संबंधों के गिरफ्त में घुल जाना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझ बैठे हैं। इसका मूल कारण आर्थिक व्यवस्था ही हो सकती है। किन्तु पराए मुल्क में विश्वास की बुनियाद पर रिश्तों की मंजिल बन तो सकती है, स्थायी रहना खतरे से खाली नही। रिश्तों की भारतीय अवधारणा सात जन्मों की कसम का परिपालन करते हैं। किन्तु पाश्चात्य देशों में एक जन्म में सात से अधिक पत्नियाँ बनाना आम बातहै।

'रोहन' उपन्यास का नायक विदेशी कन्या 'एलेसन' से शादी करता है फिर गलत तरीके से एलेसन द्वारा लगाए गए इल्जामात में फँसकर अपनासर्वस्व गवाँता है। कहानी यहीं से प्रारंभ होती है और तमाम उठा-पटक एवं हिचकोले खाते अंत में पारिजात वृक्ष का साधारणीकरण सामान्य पात्र रोहन का बेटा जिसे अपना पारिजात कहकर संबोधित करता है, के रूप में रूपायित होताहै।

इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है... स्त्री पात्र बड़ी संजीदा, निडर, एवं संवेदनशील है। एक दृश्य -"हम औरतें आज भी ढाए जुल्म और गुनाह के खिलाफ आवाज बुलंद करती है। ज्यादा औरतों का यह फर्ज है कि वह अपनी आँखे खुली रखे क्योंकि उनके कंधों पर सिर्फ मर्दो के साथ चलने की जिम्मेदारी नही है बल्कि नई पीढ़ी को अच्छे और ईमानदार शहरी बनाने की जिम्मेदारी भी है।"[55]

लेखिका इस उपन्यास में छोटे-छोटे गजल का गध्य के साथ मणिकांचन प्रयोग किया है। भाव सबलता एवं भावों की तीव्रता में उनका विशेष योगदानहै

होठों को बेजबान के चूमे, झुका के सर

रोकर कहा जो कहना था वह कह चुका पिदर

बाकी रही न बात कोई ए मेरे पिसर

सूखी जुबान तुम भी दिखा दो निकालकर

XX XX XX

था फर्ते गश से नन्हा सा मनका ढला हुआ

बाँधे हुए था मुट्ठियाँ और मुँह खुला हुआ।[56]

'पारिजात' की पूरी कथा 'रूही' के कारुणिक स्पन्दन एवं अतीत के याद में गुजरता है तो रोहन का दुःख पत्नी 'एलेसन' के छलावे से छले जाने के बाद पुत्र 'टेसू' उर्फ सपनों के पारिजात के वात्सल्यता जन्य अभाव से उत्पन्न पीड़ा का दुःखद प्रतिकृति साबित हुआ है। रूही और रोहन के जीवन में दुख एवं परेशानियाँ उतनी असरदार नही साबित हुई है बल्कि ऐसा लगता है कि ये दोनों पात्र दुःखों के सौदागर है समस्याओं की माला अपने गले में फँसाकरउनके मायाजाल में उलझे रहते है। यथा"मानता हूँ वह प्यार करने वालीमाँ है, मगर उसका सारा ध्यान अपनी जॉब और दोस्तों में रहता है।"[57]

उपन्यास के फ्लैप पर लिखा है-"उपन्यास की कथावस्तु में इतिहास कहीं किरदार बनकर उभरता है तो कहीं वर्तमान और अतीत के बीच सूत्रधारकी भूमिका निभाता नजर आता है। उसकी इस आवाजाही में उपन्यास के पात्र कभी तारीख से गुरेजाँ नजर आते हैं तो कभी उसको तलाश करते हुए खुद अपनी खोज में लग जाते है। "[58] कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा का यह उपन्यास उनकी अभी तक की सृजनात्मकता का निचोड़ है जिसमें उनके विचार, बयान, भाषा संवेदना और सरोकार बहुत संजीदा और धारदार बनकर उभरे हैं।

कहानी साहित्य का परिचयात्मक विवरण

जीवन का बीता हुआ समय किसी न किसी घटना या समस्याओं के टकराहट के बाद ही आगे बढ़ता है, चाहे वह सुमति लाए या कुमति। प्रसन्नता से खुशहाली श्रृंगारिकता रूपी कहानी अस्तित्व में आती है और संघर्ष या टकराहट से समस्यामूलक कहानियाँ उत्पन्न होती हैं। नासिरा शर्मा की जीवन शैली भी एक कहानी है, जो अपने में लोकसंवेदन दृष्टि के चाक्षुष बिम्ब खड़े करके समाज, संस्कृति, लोक जनों से केन्द्रीभूत कहानियों का सृजन कराती है।

नासिरा शर्मा का साहित्य जगत में आविर्भाव कहानियों के माध्यम से ही हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों में विभिन्न विषयों को उजागर किया है। उनके अब तक 12 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 1. पत्थरगली(1986) 2.संगसार(1993) 3.इब्नेमरियम(1994)4.शामीकागज(1997) 5। सबीना के चालीस चोर(1997) 6.खुदा की वापसी(1999) 7.गूँगा आसमान(1999) 8. इंसानीनस्ल (2000) 9. शीर्ष कहानियाँ (2001) 10. बुतखाना (2002) 11. दूसरा ताजमहल(2002) 12.दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2010) 13. किस्सा जाम का(2012)

इन सभी कहानी संग्रहों में संकलित कहानियाँ अपनी विशिष्ट संवेदन-शक्ति द्वारा मानव को मानव बने रहने का अवसर मुहय्या कराती है। इनमें स्त्रियोचित व्यवहार की परिकल्पना सगुंफित है। जिससे विचारशीलता एवंस्व के प्रति दृढ इच्छाशक्ति जागृत होती है जिसके माध्यम से हर वर्ग अपना उत्कर्ष कर सकता है। अतः इसे स्पष्ट कराने हेतु इनका संक्षिप्त परिचय कराना तर्कसंगत होगा।

1. पत्थर गली

लेखिका के प्रथम कहानी संग्रह का नाम 'पत्थर गली' है। जो 1986 में राजकमल प्रकाशन (नई दिल्ली) से प्रकाशित हुई है। इसमें कुल 8 कहानियाँ संकलित है।

इस कहानी संग्रह में लेखिका ने मुस्लिम समाज की स्त्रियों की संवेदना एवं सिकन को चित्रित किया है। वैसे तो स्त्री सिर्फ स्त्री होती है। उनका सम्प्रदाय में बंटवारा करना बहुत तर्क संगत नहीं लगता। नासिरा शर्मा ने मुस्लिम नारी की पीड़ा एवं व्यथा को संवेदनात्मक धरातल पर तराशा है। नारी की आवश्यकताओं एवं अनुभूतियों को जो उनके अंदर ही चटक रही है, उनको अपनी कहानी रूपी आवाज देकर समाज के सामने लाने का कवायद लेखिका का मुख्य उद्देश्य है।

इस मजाजी दुनिया के खुदाओं द्वारा स्त्री हमेशा शोषित होती रही है चाहे वह प्रेम से या बलात। धीरे-धीरे अबला की मानसिकता अबल में रूपान्तरित हो गई और वह दरख्त के शाखों को ही अपना सर्वस्व मान बैठी, जबकि दरख्त की जड़ नारियाँ स्वयं है। पुरुषवादी मानसिकता के मनोरोग से पीड़ित कुछ महापुरुष हैं जो अपनी खोखली हुकूमत को कायम रखने के लिए सती के मान को भी झटका देते नजर आते हैं किन्तु लेखिका ने इस कहानी संग्रह की सभी कहानियों में नारी को स्वतंत्र दिखाने में शायद पूर्णतः सफल न भी हो पाई हों किन्तु जागृति की चिन्गारियाँ अवश्य सुलगा दिया है।

पत्थरगली कहानीसंग्रह के संदर्भ में अमृतलाल नागर ने लिखा है " इसमें कोई शक नही है कि नासिरा शर्मा कथा क्षेत्र में नए समय की पहचान बनकर आई है। उनकी कहानी संग्रह "पत्थरगली"को पढ़कर लगता है कि कुलीनता और खानदानियत की सन्निपाती ज्वर सिर्फ मुसलमानों में ही नही बल्कि हिन्दुओं में भी खूब रहा है। हिन्दू समाज के जिन पाठको ने अब तक अधिकतर हिन्दूसमाज की रूढ़िवादिता के ही

दर्शन कहानियों में जहाँ कहीं किये हैं वे 'पत्थरगली' संग्रह की कहानियों में मुस्लिम समाज की रूढ़ियों को भी बखूबी पहचान सकेगें ।"

लेखिका खुद अपनी कहानी संग्रह 'पत्थर गली' के संदर्भ में लिखती है कि-- "मेरी ये कहानियाँ महाजरत के दुःख और मुजरों के सुख का मोहभंग करती हुई एक ऐसी गली की सैर कराती है जो पत्थर की गली है। इस पत्थर की गली के रहने वाले अपने निकास के लिए छटपटाते नजर आते हैं। अपनी पहचान के लिए वह जद्दोजहद के समुन्दर में गोते लगाते हैं, रूढ़िवादिता के बेड़ियों को तोड़कर खुले आसमान में उड़ना चाहते हैं। पंखो को पसारकर उसमें सूरज की गर्मी और रोशनी भरने के लिए तड़पते हैं और इस कशमकश में पत्थर से टकराकर लहूलुहान हो उठते हैं।[59]

स्पष्ट है कि इस संग्रह की कहानियों के सभी पात्र समस्याओं से घिरे भले हो किन्तु लाचार नही, दुःख का साया भले हो किन्तु कायरता नही, बड़ी सजगता एवं निगहबानी से स्त्रियों के आक्रोश को दिखाया है जिसके कारण इनके स्त्री पात्र पुरुष का गुण आने पर भी सम्माननीय हुई है कुलटा नही।

ये कहानियाँ धरती पर बसे किसी व्यक्ति की हो सकती है क्योंकि यह छटपटाहट, दर्द सर्वव्यापी है। फिर भी इन कहानियों का स्रोत एक विशेष परिवेश है उस परिवेश के बारे में यह कहना तर्कसंगत है कि आज मुसलमान पात्र जब उभरता है तो या तो हिन्दू-मुसलमान दंगों में या फिर ईद के दिन पढ़ी गई नमाज और मुहर्रम पर हुए सुन्नी-शिया फसाद में मगर कौन यह जानने की कोशिश करता है कि उसकी कोमल भावनाएं उसकी कुठाएं, उसके अरमान और खयालात क्या हैं?

नासिरा शर्मा मुस्लिम समाज की नवीन व्याख्या की है -"मुस्लिम समाज सिर्फ गजल नहीं बल्कि वह 'मर्सिया' है जो वह अपनी रूढ़िवादिता की कब्र के सिरहाने पढ़ता है।"[60]

पत्थर गली संग्रह में जो कहानियाँ, उपलब्ध हुई है उसमें नारी संवेदना का विविध आयामों में दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। बाल्यावस्था में स्कूलजाने की चाह से लेकर यौनावस्था में बुने गए सपनों की राह तक। टूटे दिल की धड़कन, मन का कसैलापन, भीतर की अकुलाहट अन्दर ही अन्दर कुनमुना उठने की कशमकश, सब की बड़ी बेबाकी से कलमकार ने जिक्र किया है और राह भी प्रस्तुत की है

इस कहानी संग्रह की 8 कहानियाँ इसप्रकार है....

1.बावली 2.सरहद के पार 3.बन्द दरवाजा 4.कातिब 5.ताबूत 6.कच्ची-दीवारें 7.पत्थर गली 8.सिक्का

1.बावली:-- बावली प्रतीक है स्त्री के भोलेपन की जब भी त्याग बलिदान की आवश्यकता पड़ी है, त्याग हमेशा महिलाओं ने किया है। लेखिका समाज के सामने सलमा कहानी की नायिका से ससुराल वालों की खुशी के लिए बच्चा न होने के कारण दूसरी शादी 'खालिद' की कराकर एक प्रश्न खड़ा किया है कि तुम पुरुष वर्ग सिर्फ तोहमत लगाना जानते हो बलिदान करना नही। स्त्री कुछ न दे तो रिश्ता चलेगा ही नही। अगर पुरुष अक्षम हो संतानोत्पत्ति में तो क्या स्त्री दूसरी शादी कर सकती है? शायद नही। पर स्त्री अगर अक्षम हो तो पुरुष समाज दूसरा रास्ता अख्तियार करता है।

2.सरहद के पार :-- यह कहानी संकुचित साम्प्रदायिकता पर आधारित है। इस कहानी का नायक 'रेहान' प्रेम में मोहभंग के कारण मानसिक संतुलन खो बैठता है। हिन्दू-मुस्लिम में होने वाले दंगे उसे मानसिक रूप से अपंग बना देते है। दंगे के दौरान वह एक बालिका को तीन युवकों के अत्याचार से बचाता है किन्तु इस परोपकार का फल उसे उसकी हत्या के रूप में मिलता है। नासिरा शर्मा ने धर्म के नाम पर पनपती वैमनस्य की निन्दा की है।

3.बंद दरवाजा :-- इस कहानी में दो परिवार आपसी मतभेद एवं स्वाभिमान को कायम रखने के लिए 'मीर साहब' और 'मीर्जा' अपने बच्चों के वैवाहिक जीवन को दाँव पर लगा देते हैं। और उस अहम् की चक्की में फँसकर कहानी की नायिका 'शबाना' की, प्रिय के विरह में मृत्यु हो जाती है।

4. कातिब:-- इस कहानी में दम तोड़ती उर्दू जबान की आखिरी साँस एवं किताबत करने का हुनर रखने वाले अकरम मियाँ की माली हालत का जिक्रहै। पूरी कहानी आशा-निराशा के क्षोभमण्डल में विचरण करती है। कहानी की समाप्ति नई दिशा एवं जोश से कार्य करने की तमन्ना में होती है।

5.ताबूत :-- मुस्लिम स्त्रियों की समस्याओं एवं बुनियादी जरूरतों के अभाव से उत्पन्न जीवन की कठिनता का अंकन है। इस कहानी के तीन स्त्री पात्र 'फहमिदा, हुमैरा एवं सायरा के पिता 'कासिम' है जो शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहते हैं। अतः आर्थिक स्थिति को तीनों बेटियाँ बीड़ी बनाकर(मेन्टेन) रखती है। कालांतर में 'फहमिदा' बीमार होने पर भी कार्य करती है। अंततः उसकी मृत्यु हो जाती है। इस कहानी की एक और नारी पात्र है- 'खालाबी' जो ताबूत की मनौतियाँ चढ़ाती रहती है। उसकी विवशता यह है कि अनमेल विवाह के कारण वैधव्य जीवन बिताना पड़ता है। प्रस्तत कहानी की एक और नारी 'खातून' का निकाह उससे कम उम्र में 40 बरस बड़ा व्यक्ति सादुल्ला से करने की विवशता है।

6. कच्ची दीवारें:--- यह कहानी संस्पेन्सिव दस्तावेज है। इसका ताना-बाना इस प्रकार बुना गया है कि एक तरफ लालच एवं कपट की चाशनी देकर 'इब्ने मियाँ' चचा एवं चाची के घर को खरीदना चाहते हैं और उनकी परवरिश एक बेटे की तरह कर रहे है। वहीं चचा और चाची को इब्ने की चालाकी पता है किन्तु वक्त की मार दोनों को संवेदनात्मक रूप से एकमएक कर देती है और अंत में रिश्तों के परायेपन का भी अपनेपन में साधारणीकरण हो जाता है।

7.पत्थरगली :-- पूरी कहानी में स्त्री को वैचारिक स्तर पर किसी की गुलामी सहन नही है। कहानी की नायिका फरीदा के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि आज की स्त्री आजाद परिन्दे की तरह खुले आसमान में उड़ना चाहती है। जहाँ पंख भी उसका हो और भरोसा एवं उड़ान भी और सारा आकाश भी। किन्तु कहीं पर भी वह पत्ता जिसका वजूद शाख है उससे अलग होने की कवायद नही करता, बस हवाओं के साथ लहराने की स्वतंत्रता ही उसकी आकांक्षा है।

8.सिक्का :--- यह कहानी वास्तव में स्त्री पक्ष में नासिरा शर्मा का दिया हुआ वकालतनामा जान पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखिका स्वयंमुखरित हो उठी है। इश्क की गहराई शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में ही समाप्त होने की वस्तु नही है। यहाँ पुरुष सांसारिक वस्तुओं के फेहरिस्त में भटका हुआ है और नारी प्रेम के समाहार, पारावार की तलाश में भटकती दिखती है। क्या ऐसी आंखों की निगहबानी समाप्त हो चुकी है, जिसमें सिर्फ प्रेम हो माँशलता नही।

क्या सांसारिक दुख-दर्द इतना हावी हो गया है कि मर्द का औरत से सिर्फ-जिस्मानी रिश्ता ही कायम रहे बाकी संवेदनाओं, वैचारिक मुद्दो पर बातों का स्त्री से कुछ ताल्लुकात ही नही?

2. संगसार

इसका प्रकाशन सन 1993 में 'वाणी प्रकाशन' नई दिल्ली संगसार नासिरा शर्मा का ईरानी क्रान्ति के विविध पक्षों को आधार बनाकर लिखी, अठारह कहानियों और एक 'कविता' संकलन है। कविता 'तुम्हारे बिना' संकलन की अन्तिम प्रविष्टि है। फारसी भाषा की मर्मज्ञ तथा ईरानी कला संस्कृति समाज और राजनीति की विशेषज्ञ नासिरा शर्मा ने ईरानी क्रान्ति की प्रकृति एवं परिवेश को देखा-भाला, महसूसा था। इस कारण 1980 और 1992 के मध्य लिखी गई ये कहानियाँ उस दर्द, छटपटाहट

का सबूत है। जिसका संबंध उस आशन्ति से है जिसका इल्जाम कभी शाह, कभी स्लाम और कभी साम्यवाद को ठहराया जा सकता है।

इस संग्रह में ईरान की क्रान्ति को केन्द्र बिन्दु बनाया जरूर गया है। किन्तु दर्द, छटपटाहट, अहसास प्यार, नफरत इनका रूप रंग हर जमीन पर एक जैसा ही होता है। आलोच्य संकलन के परिपेक्ष्य में नासिरा शर्मा खुद लिखती है-" ये कहानियाँ इन्सानों की अभिलाषाओं, इच्छाओं और सपनों की दस्तावेज मात्र है किसी धर्म, विचार, मत की अच्छाई या बुराई बताने का रोजनामचा नही बल्कि ये उन बदनसीब शहीदों के पंचनामें हैं। जिन्होंने अपने वतन को सायेदार दरख्तों से ढँकना चाहा, खेत और कारखानों से सजाना चाहा, इन्सान को हर तरह के भय से आजाद कर उसकी गुलामी की जंजीरे काटनी चाही।उसके फैले हाँथो और खाली पेट पर रोटी का सूरज रखना चाहा, मगर मौत उन्हें रास्ते में ही चील की तरह झपट्टा मारकर निगल गई।"[61]

संगसार कहानी संग्रह अमानवीयता के विराट वटवृक्ष का प्रतीक पड़ता है। देश बदल जाते है लोग बदल जाते हैं मगर आँखों के आँसू हंसने की खिलखिलाहट बचपन का तोतलापन, माँ का प्यार सारी चीजें हर स्थान पर एक जैसा होता है। अंतर दूसरे देश के अंकन से इतना ही पड़ता है कि हमारी संवेदनाएं शायद ज्यादा मात्रा में वहाँ से न भी जुड़ी हो किन्तु दर्द और कशमकश के गिरफ्त में जब व्यक्ति आता है तो वही पीड़ा महसूस करता है जो ईरान वासियों ने झेला होगा। चूँकि लेखिका किसी प्लेस विशेष के दर्द को अपना केन्द्र न बनाकर सरहद के उस पार से इस पार सबको आपस में मिला दिया है। लेखिका ने एक जगह उल्लेख भी किया है- "कब्र में सोए उन कर्मठ निष्ठावानों को जो आज भी दिलों के चिराग बन गरमी और रोशनी देते हैं।

162

संगसार का मतलब ही इस्लाम धर्म में होता है। एक प्रकार का दण्ड जिसमें कोई युगल यदि अनैतिक शारीरिक संबंध बनाता है तो उसे गरदन तक मिट्टी में गाड़ दिया जाता है और तब तक मारा जाता है जब तक उसके प्राण पखेरू न हो जाएं।

"नासिरा शर्मा ने इस संग्रह की कहानियों के बारे में लिखती है-" ये कहानियाँ ईरान की उन सारी जगहों को जहाँ इनसानी खून की बूँदें धरती की प्यास बनकर उमर खय्याम की रूबाइयों के दर्शन में ढलीं कि यह मिट्टी बुजुर्गों, पूर्वजों के वजूद के अंश से लबरेज हमसे हर शै में हम कलाम होती है, खामोश संवाद का एक न समाप्त होने वाला सिलसिला बनाती है। वहीं पर एक जिम्मेदारी का अहसास भी उस धरती पर साँस लेने वाले जिन्दा लोगों के सामने रखती है। कि क्या इन्सानों के बीच संवाद स्थापित करने का सेतु केवल राजनीति जैसा संकीर्ण माध्यम है या मानवीय परंपराएं है? दायरों, धर्मों, विचारों और मठों में बँट जाना ही जीवन का लक्ष्य है या फिर मानव जाति के लिए कुछ करना और उसे एकता में बांधकर समस्याओं को सुलझाना बेहतर है।"[63]

स्पष्ट है कि ये कहानियां उसी अधूरे कशमकश की सनद हैं, जो व्यक्ति सघर्ष के सफर में मील का पत्थर साबित होकर आधारशिला की मजबूती की सूचना देती है कि आनेवाली पीढ़ी इन ऊबड़ खाबड़ रास्तों को सुगम बनाने में लगातार सिरकत करती रहें, आखिर मुक्ति का रास्ता इतना सरल नही जो कम्प्यूटर के अंकपत्र की तरह तत्काल हाथ लग जाय बल्कि नस्लों को इस आतशकदे में होम होना पड़ता है।

संगसार कहानी संग्रह में कुल 18 कहानियाँ एवं एक कविता संकलित है। जो इस प्रकार हैं--

1. तारीखी सनद2. पहली रात3. दरवाज- ए- कजविन4. दीवार दर दीवार5. गुंचा दहन6. दिल की किताब7. यहूदी सरगर्दीन8. जरा-सी बात 9.उड़ान की सर्त10.

भूख11. खालिश12. झूठा पर्वत13. संगसार14. नमक ना घर 15. अजनबी शहर16. गूँगा आसमान 17. लबादा18. आखिरी पहर कविता : तुम्हारे बिना

1. तारीखी सनद

इस कहानी में सत्ता का विरोध करने वाले व्यक्तियों के ऊपर होने वाले हिंसात्मक व्यवहार का पर्दाफास किया गया है। ईरानी शासन के हिंसक रवैया के कारण सरबाज, उसकी पत्नी जैनब और उनके बच्चे महवश तथा हसन मृत्यु के शिकार हो जाते है। सरबाज का पूरा परिवार धार्मिक कट्टरता एवं सत्ता परिवर्तन के कारणों से अपने प्राणों की आहुति देने के लिए विवश हो जाता है।

2. पहली रात :--

इस कहानी में लेखिका ने यौनविकृति की मानसिकता का नंगा चित्र खींचा है। इसमें अहमद द्वारा जनाना गुसलखाने में मुरदा लड़की के साथ संभोग करना मानसिक रोगशीलता एवं अमानवीयता का सबसे विषैली वृत्ति है।

3. दरवाज-ए-कजविन :-

इस कहानी में नारी जीवन की विवशता का उसकी मानसिक स्थिति का उसके जीवन की उलझी हुई उन आकृतियों के गुत्थियों को खोलने काजद्दोजहद है। नायिका मरियम शौहर की उपेक्षा के कारण जिजीविषा हेतु वेश्या जीवन जीने के लिए बाध्य होती है। माजिद विदाई से पूर्व मरियम का कौमार्य भंग करता है। सुहाग रात्रि के पश्चात् जब परिवार के सदस्यों को यह पता चलता है कि बहू कुवाँरी नही थी, अतः घर में कोहराम मच जाता है। परंतु माजिद मौन रहता है। अतः मरियम वेश्या जीवन जीने पर विवश हो जाती है। और अन्त में गोलियों से भून दी जाती है।

4. दीवार-दर-दीवार:---

इस कहानी में मोहंदिस आगा धार्मिक हिज्बुल्लाही है जबकि उनका बेटा प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित है उनकी बेटी शैदा मुजाहिद है। परिवार में वैचारिक मत-भेद एवं टकराहट बना रहता है।

5. गुंचा दहन :--

मानवीयता के धागों को तार-तार करती गुंचा दहन में लेखिका ने बारह वर्षीय बाला 'मेहरमाह' के माध्यम से कैदखानों की अश्लीलता एवं असुरक्षा की रवैया की कटु आलोचना की है। इसमें मेहरमाह अपने स्कूल में निकले जुलूस में शामिल होने के कारण कैद कर ली जाती है। जेल में इस बालिका के साथ बलात्कार किया जाता है। अधिक रक्त बह जाने के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है।

6.दिल की किताब :--

शासकों द्वारा साम्यवादी साहित्य पर प्रतिबंध होने के कारण नववधू 'नूर' समय सूचकता को दृष्टि में रखकर सभी साहित्य छुपा देती है। इस प्रकार परिवार को शासकीय अत्याचार से बचाने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

7.यहूदी सरगर्दान :--

इस कहानी में डॉ. बोहरान का दुःखदर्द मुखरित है। वे स्वयं हार्ट स्पेशलिस्ट हैं, परंतु ईरान की धार्मिक क्रान्ति में उनका परिवार तबाह हो जाता है और डॉ. बोहरान का इस परिस्थिति से हार्ट अटैक हो जाता है।

8. जरा सी बात :-

बाल मनोविज्ञान पर आधारित 'जरा-सी बात' कहानी में नौ वर्ष की बच्ची 'शहराम' को अपने पिता के गाल पर किस करना इसलिए पसंद नही क्योंकि उसी गाल पर उसकी सहेली 'सूसन' ने अन्तिम समय चुम्बन लिया था, जो राजनीति सत्ता की बलि चढ़ गई थी।

9. उड़ान की सर्त :--

कहानी रिश्तों के अस्वीकारात्मक वृत्ति का पृष्ठपोषण करती है। कहानी की नायिका' 'महशी' विधवा है, उसका एक पुत्र भी है। महशी का पुनर्विवाह तालिब से होता है। तालिब स्वयं विधुर एवं एक पुत्री का पिता है। महशी के भाई को महशी का तालिब से विवाह करना उचित नही लगता क्योंकि वह पराए देश का है। अतएव वह दाम्पत्य जीवन को विघटित कर देता है।

10. भूख:--

यह कहानी आज के बेरोजगार युवकों की पीड़ा को ध्वनित करती है। इस समस्या से निजात पाने के लिए युवा वर्ग के अन्दर एक छटपटाहट चित्रित किया गया है।

11.खालिश :--

इस कहानी का नायक आत्मग्लानि के आग में दहकता है। क्योंकि वह धार्मिक संकुचित भावना के बहाव में आकर बहाइयों के घर की किताबें नष्ट कर देता है। उसके पश्चाताप की पीड़ा का बिम्बात्मक अंकन लेखिका ने कियाहै।

12. झूठा पर्वत :---

इस कहानी की नायिका अलीरेजा के सभी पुत्र सत्ता संघर्ष में शहीद हो जाते है। लेकिन उनकी शहादत देश के कल्याण के मार्ग पर अग्रसर नही करा पाती।

13. संगसार

इस कहानी की स्त्री पात्र 'आसिया' अपने पति से असन्तुष्ट रहती है अतः दूसरे पुरुष से यौन संबंध स्थापित करती है। इनदोनों के द्वाराअवैधानिक तरीके से किए गए इस व्यवहार के कारण समाज का संतुलन बिगड़ जाता है। उसका प्रेमी बचकर भाग जाता है किन्तु सामाजिक कोप का भाजन आसिया होती है और उसे संगसार हो जाता है यानी मृत्यु दण्ड ।

14. नमक का घर:---

इस कहानी की शहरबानो ईरान क्रान्ति के कारण अपने जान को जोखिम में डालने के बजाय विदेश चली जाती है। उसका परिवार सत्तात्मक हिंसा के कारण तबाह हो जाता है।

15. अजनबी शहर :---

प्रस्तुत कहानी की स्त्री पात्र 'दिलनबाज' को आतंक और अकेलेपन के कारण अपना ही घर और शहर खण्डहरों में बदल जाने से अजनबी जान पड़ता क्योंकि त्रासदी जब भी आती है हमेशा हरेपन को सूखापन में तब्दील करती है। और सूखे वातावरण हो या वृक्ष या संवेदनाएं ही क्यों न हो व्यक्ति को स्वयं की नजरों में अकेला बना देता है।

16. गूँगा आसमान:---

पुलिस की वर्दी के नियति का ओछापन इस कहानी में दिखाया गया है। हरशीद पुलिस अधिकारी होने के कारण अपने पद का गलत इस्तेमाल करता है और तीन विवश युवतियों के साथ संबंध बनाना चाहता है, किन्तु उसकी पत्नी मेहर अंगीज के कारण वे युवतियाँ इस दुष्चक्र से बच जाती हैं।

17. लबादा

यह कहानी ईरान से पलायन किए हुए दो क्रान्तिकारी लेखकों 'बहराम' और 'खुसरू' के जीवन काल पर आधारित है। उनमें से कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो गैर देश के होते हुए भी युद्ध से पीड़ित ईरानवासियों की सहायता करने ईरान जाना चाहते हैं।

18. आखिरी पहर :--

इस कहानी की विषय-वस्तु स्त्री पात्र के इर्द-गिर्द घूमती है। कभी नारी का सहजपन उजागर होता है। तो कभी आनंद। अंत एक दुःखद दृश्य से होता है। कहानी की नायिका 'जाहेदा' बालविधवा रहती है। जाहेदा की सास हसननामक युवक से उसका

निकाह करवा देती है। हसन एक स्कूल शिक्षक है, किन्तु वह सत्ता का विरोधी समझकर मारा जाता है। कालांतर में जाहेदा पुलिस इन्सपेक्टर की रखैल बनने पर मजबूर होती है। उसके बाद वह 'किश्तमंद' के साथ विवाह करके सुखमय जीवन व्यतीत करती है। उसी दौरान नियति एक बार और उसके धैर्य का परीक्षा लेती है और प्राकृतिक आपदा में उसका परिवार नष्ट हो जाता है। जाहेदा प्रकृति की यह मार सहन नही कर पाती और पागलखाने पहुँच जाती है जहाँ उसका इंतकाल हो जाता है। इन कहानियों के कन्द्र में स्त्री अस्मिता की दु:खद गाथा है बात कहीं से भी प्रारंभ होती हो किन्तु उसके परिणाम किसी न किसी स्त्री को झेलना पड़ता है। शारीरिक कोमलता एवं स्वाभाविक सरलता के कारण नासिरा शर्मा की स्त्री पात्र हर जगह परमुखोपेक्ष रहती है। चाहे आर्थिक अभाव के कारण हो या फिर परंपरा, रूढ़िवादी सोच एवं संस्कृति, प्रेम इत्यादि के द्वारा बंधी हो। सभी कहानियों में स्त्री जलालत भरी जिंदगी जीती है परंतु एक तंतु स्वतंत्रता पाने का इतना झीना एवं मजबूत उनके कलाई से लिपटा रहता है कि आवश्यकता आने पर वही उनकी रक्षा कवच सिध्ध होता है। आखिरी पहर की जाहेदा हो या संगसार की आशिया या गूँगा आसमान की मेहरअंगीज, या फिर नमक का घर की शहरबानो। ये औरते अपने हिस्से की लड़ाई खुद लड़ती हैं।

3. इब्नेमरियम

नासिरा शर्मा का तीसरा कहानी संग्रह 'इब्नेमरियम' 1994 में किताबघर प्रकाशन (नई दिल्ली) से प्रकाशित हुआ। सरहदपार की स्थिति एवं अन्य देशों की समसामयिक एवं ज्वलंत मुद्दों का यह सशक्त दस्तावेज है। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद आतंकवाद से आतंकित देशों की त्रासदी से साक्षात्कार कराती नासिरा शर्मा का यह कहानी संग्रह विभिन्न देशों की राजनीतिक, सामाजिक समस्याओं का कैनवास अपने में समेटे हुए है। इस कहानी संग्रह के बारे में लेखिका का कथन है -"इब्नेमरियम'

संग्रह की सारी कहानियाँ एक विशेष स्थिति की है, जिसमें फँसा इन्सान जीने के लिए छटपटाता है। कभी उसकायह संघर्ष अपने लिए अधिकार को पाने के लिए होता है तो कभी समाज को बेहतर बनाने के लिए करता है।"[64]

स्व के जीवन को सुरक्षित रखने के लिए 'फिलीस्तीन' जब मनुष्य शव का गोश्त खाने की चर्चा करते हैं तो यहूदी गैस चेम्बर से बचने के लिए कब्र में छुप जाते है हिन्दुस्तान के विभाजन से उत्पन्न त्रासदी को न भूलकर नयी पीढ़ी यदि वह कार्य करना चाहती है तो ऐसा लगता है समस्याओं का कोई समाधान नही। इस कहानी संग्रह में पंजाब, इथोपिया, युगाण्डा, फिलीस्तान, अफगानिस्तान, सीरिया, टर्की, स्काटलैण्ड, बंगलादेश, कश्मीर, कनाडा, ईराक आदि राष्ट्रों एवं प्रान्तों के ज्वलंत समस्याओं एवं घटनाओं से जुड़ी कहानियाँ संकलित है।

'इब्नेमरियम' कहानी संग्रह के कथावस्तु पर प्रकाश डालते हुए बलदेव वंशी लिखते हैं -"गहरे लेखकीय सरोकार युगीन बड़ी पीड़ाओं को जन्म देते हैं। पूरे विश्व का मानचित्र आज रक्त रंजित है। स्वार्थ सबसे बड़ा धर्म या विचारधारा बन गई है तो हिंसा-हत्या बमबारी, विनाश सर्वस्वीकृति चलन, इस जलते झुलसते ग्लोब को लेकर हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर रहे हैं। नासिरा शर्मा का 'इब्नेमरियम' इस परिदृश्य को सामने लाता है। साहित्य की दृष्टि से देखें तो लगेगा कि हम बहुत कायर समय में जी रहे हैं और लिख रहे हैं। अपनी समूची ईमानदारी सरोकार और मानवीय दृष्टि के बहुत कम अंशों के लेखक बच गए।"[165]

नासिरा शर्मा का संवेदन दृष्टि सीमाओं के बंधन से मुक्त हैं उनकी कहानियाँ सरहद के उस पार के सागर में गोते लगाती है और अपने मनमोताबिक साहित्यिक मोती चुग लेती है। इस संग्रह की (11)कहानियाँ अन्य देशों को केन्द्र में रखकर लिखी गई है।

लेखिका के शब्दों में -"इंसानी समस्याएँ मुझे कई-कई स्तर...हर्ट करती है। आमोख्ता (पंजाब) जड़े (युगाण्डा)जैतून के साये (फिलीस्तीन) काला सूरज (इथोपिया) कागजी बादाम (अफगानिस्तान) तीसरा मोर्चा (कश्मीर) मोमजामा (सीरिया) मिस्टर ब्राउनी (स्काटलैण्ड) कशीदाकारी (बांगलादेश) जुलजुता (कनाडा)पुल-ए-सरात (ईराक) जहाँनुमा (टर्की) इब्ने मरियम (भोपाल) इन सारी कहानियों ने उस धारा को संवेदना के समंदर में पकड़ने की कोशिश की है जो मानवीय है। वास्तव में इंसान के अन्दर पहली जिजीविषा मुझे सृजन के स्तर पर बाँधती है और जीने की यही छटपटाहट मुझे लिखने की प्रेरणा देती है।"[66]

नसिरा शर्मा के इस कहानी संग्रह में 13 कहानियाँ संग्रहीत है

1. अमोख्ता 2. जडें 3. जैतून के साये4. कालासूरज ब्राउनी5. कागजी बादाम6. तीसरा मोर्चा7. मोमजादा 8. मिस्टर9. काशीदाकारी10. जुलजुता11. पुल-ए-सरात12. जहाँनुमा 13. इब्नेमरियम

यह भारत पाक विभाजन की त्रासदी को उजागर करती कहानी है। भारत-पाकिस्तान का विभाजन होने के समय हजारों संख्या में पाकिस्तान से हिन्दू भारत में एवं मुसलमान पाकिस्तान से भारत आए। पाकिस्तान से आने वाले लोगों में से एक परिवार 'अमन' का भी था। कहानी का नायक पंजाब के आंतकी हमले में अपना सर्वस्व खो देता है, अतः अपने पोते को विदेश भेजता है।

2. जड़ें:--

युगांडा की समस्या पर आधारित यह कहानी एक स्त्री के जीवन की जीवटता का हलफनामा है। इस कहानी की नायिका 'गुलशन' का परिवार युगांडा में चल रहे राजनीतिक षडयंत्र का शिकार होता है गुलशन अपने प्राणों की रक्षा के लिए ब्रिटेन में शरण लेती है किन्तु अपनी नागरिकता एवं पारिवारिक जीवन की खोज में हमेशा लगी रहती है।

3. जैतून के साये :---

इस कहानी में फिलीस्तीन और इस्त्राइली के मध्य पारस्परिक तनाव और युद्ध के आलोक में एक शोल्जर के भगीरथ परिश्रम एवं दृढ़ इच्छा शक्ति का चित्रण किया गयाहै।

4. कालासूरज :-- इथोपिया की समस्या पर आधारित यह कहानी उस दर्द, बेबशी की किताब जहाँ का नागरिक अपने देश में शरणार्थी के रूप में जीवन जीने को विवश है। इस कहानी की नायिका 'राहबमोआसा' इसी स्पृश्यता की शिकार है।

5. कागजी बादाम

अफगानिस्तान की माली हालात से गरीब लोगों की दशा का यथार्थ अजीज चित्रण इस कहानी में लेखिका ने किया है। कहानी का नायक डंगरवाल' गरीबी के दंश को नहीं झेल पाता और अपनी पुत्री को एक धनवान व्यक्ति से बेचने पर मजबूर हो जाता है।

6. तीसरा मोर्चा:---

वर्दीधारियों के नापाक मंसूबों को बयां करती यह कहानी काश्मीर की घटनाशीलता का एक प्रमाण है जो बर्फीली श्वेत हिम की वादियों में एक काला दाग जैसा दिखता है। तीसरा मोर्चा कहानी में कुछ वर्दीधारी एक स्त्री का रेप करते है। कहानी का नायक रहमान एवं सहनायक राहुल दोनों लंगोटिया मित्र हैं। दोनो उस पीड़ित स्त्री की सहायता करना चाहते है किन्तु वह युवती उनकी सहायता लेने से इन्कार कर देती है।

7. मोमजाम :---

प्रेम के बाद संघर्ष यह देशारीति है। इस कहानी की कथावस्तु भी प्रेम एवं संघर्ष के जद्दोजहद में गोते लगाती, डूबते-उतराती, रेंगती जीवन शैली की दु:खद

दास्तान है। सीरिया की ईसाई लड़की जबीबा और लेनान के मुस्लिम युवक के प्रेम और संघर्षमय जीवन की वेदना को व्यक्त किया गया है।

8. मिस्टर ब्राउनी :---

भारतीय परिवेश में बुनियादी जरूरतों की आपूर्ति न होने के कारण अपने दरख्त से अलग हुआ पत्ता दूसरी शाख पर चिपकाया जा सकता है, पर हरा नही रह सकता है। इसी विषय को अपने में समेटे 'मिस्टर ब्राउनी' कहानी अपने नायक 'भूरेलाल' की कथा व्यथा का जिक्र बड़ी जवाँदिली से पेश करताहै। भूरेलाल अपनी पत्नी के साथ न चाहते हुए भी वर्षों से स्काटलैण्ड में रहने के लिए मजबूर है। अकेलेपन का एहसास उनकी निर्जना को और बढ़ाता है।

9. कशीदाकारी :----

यह कहानी पाकिस्तान और बांग्लादेश की सीमा पर कार्यरत डी.आई.जी. राजकुमार की मानवता भरी दृष्टिकोण का परिचायक है।

10.जुलजुता:---

यह कहानी कनाडा में चल रहे प्रोटेस्टैन्ट और कैथोलिक समाज के मध्य चल रहे संघर्ष पर आधारित है। कहानी का नायक बिल प्रोटेस्टैन्ट होने के कारण उसकी प्रेमिका डायना के माता-पिता उन दोनों के विवाह के बीच दीवार खड़ी करते है क्योंकि डायना कैथोलिक समाज से संबंधित है। दोनों में प्रेम होते हुए भी धार्मिक कलह एवं परम्परा की छोटी चादर के वजह से विरह का जीवन जीने हेतु विवश है।

11. पुल-ए-सरात :--

`इस कहानी का कैनवास 'ईराक' एवं 'ईरान' के दो प्रेमी जोड़ों से प्रारंभ होती है और इराक-ईरान के युद्ध एवं संघर्ष के चलते दोनों का इश्क देश के खातिर बलि की बेदी चढ़ जाता है। कहानी की नायिका 'लैला' इराक की रहने वाली है और उसका प्रेमी

'हसन' ईरान का निवासी है। ईरान-इराक संघर्ष के चलते हसन ईरानी सेना में भर्ती हो जाता है, ऐसे में 'लैला' भी उसे भूलने की कोशिश करती है।

12. जहाँनुमा :--

यह कहानी टर्की में निवास कर रहे क्रान्तिकारी पत्रकार दम्पति की है। कमाल और नबीना दोनों पत्रकार है। दोनों का विवाहित जीवन सुखमय चलता किन्तु वैचारिक मतभेद के कारण तलाक हो जाता है। कमाल अपने भैतिक जीवन की सारी वस्तुएं एवं दौलत हासिल कर लेता है किन्तु नबीना की याद हमेशा आती रहती है, अतः वह पुनः नबीना से रिश्ता बनाना चाहता है मगर नबीना उसे अस्वीकार कर देती है।

13. इब्नेमरियम :---

प्रस्तुत कहानी **2** दिसम्बर सन् 1984 की रात्रि में भोपाल गैस दुर्घटना पर आधारित है। युनियन कार्बाइड के कारखाने में हुए गैस रिसाव का तथा उससे प्रभावित वहाँ की जनता के दर्दों का जलजलाता हुआ ज्वाला की त्रासदी है। प्रस्तुत कहानी का नायक 'ताहिर बटुएवाला' गैस दुर्घटना के कारण अपनी मानसिक स्थिति खो बैठता है। गैस काण्ड के बाद ताहिर की विवाहिता पुत्री... उसके ससुराल वाले अपनाने से इन्कार कर देते हैं। दुर्घटना की दोहरी मार ताहिर को गहरे प्रभावित करता है।

नासिरा शर्मा की इस संग्रह की कहानियाँ सामूहिक पीड़ा की सशक्त हस्ताक्षर है। एक तरफ सभी कहानियों में एक पूरा समूह पीड़ा घुटन एवं आशंका के भयावहता से डरायमान दिखाई पड़ता है, तो दूसरी तरफ स्त्री-पात्र कहीं अपने शारीरिक आकषर्ण का तो कहीं वैचारिक स्वतंत्रता के वजह से निर्जनता के जंगल में विचरती नजर आती है। लगभग सभी कहानियों में अगर पुरुषवादी सोच नारी को मुक्ति एवं स्वतंत्रता देने में कंजूसी करता है तो लेखिका कहानी का साधारणीकरण कराने के बादहर स्त्री पात्र को संसार-सागर से मुक्ति दिला देती है। अब प्रश्न यह है कि 'नासिरा शर्मा' का यह काल्पनिक पक्ष है या यथार्थ। काल्पनिक है तो सुपाच्य नही होना चाहिए।

4. शामी कागज

यह नासिरा शर्मा जी का चौथा कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन ई. सन्1997 में साहित्य प्रकाशन (दिल्ली) में हुआ था। ये कहानियाँ उस जमाने की दास्तान है जब ईरान में 'बलदाल' का समय था और वहाँ के लोग अपनेअधिकारों के खातिर लड़ रहे थे ।

शामी कागज के संदर्भ में लेखिका खुद कहती है-"ये कहानियाँ केवल उस जनसमुदाय की संवेदनाओं और वेदनाओं की घड़कने है, जो धरती से जुड़ा आशा और निराशा का संघर्षमय सफर तय कर रहा है। "[67]

इस संग्रह के संदर्भ में श्रीपत राय का कथन है- "शामी कागज एक महत्वपूर्ण कहानी है। जिसमें सौ वर्षों की सभी कहानियाँ एक से बढ़कर एक है मगर मुझे जब भी अवसर मिलता है मैं 'शामी कागज' जरूर पढ़ता हूँ।"[68]

शामी कागज में सोलह अफसाने दर्ज है। उनका सबका मिजाज अलग-अलग परंतु सबके सब उस ठोस धरातल पर ठोस विचार के आस-पास ही खड़े मिलते है। जिसका आधार है औरत की अस्मिता की रक्षा उसके वजूद की इज्जत और स्वाभिमान देने का प्रश्न और धरती पर इंसानियत को जिंदा रखने की चिंता। अफसानों के कंटेन्ट्स की बानगी उनमें भीतर तक उतारने की पेशकश बहुत जरूरी है। इस संग्रह के कहानियों की वकालत नासिरा शर्मा करते हुए लिखती है -"बस, जो मेरे दिल और दिमाग ने देखा समझा और महसूस किया, वह कागज पर ढलकर कहानी बन गया। इस तलाश में सीमा का ध्यान न रहा।[69]

सीमाओं का बंधन मानसिक संकुचिता का धोतक होता है। हमारी संस्कृति ही 'वसुधैवकुटुम्बकम्' से अनुप्राणित है, तो फिर जो रक्त नासिरा शर्मा के धमनियों में दौड़ रहा है जिस खून के लाल डोरे लेखिका के आँखो का केन्द्र-बिन्दु बना हुआ है उसको नजरन्दाज करना शायद एक संवेदनशील लेखक के लिए संभव नही होगा। इसी

कारण शामी कागज पर सोलह फूलों का एक गुच्छा विदेशी धरती से ले आकर नासिरा जी पुष्पित एवं पल्लवित करती है, जिसका संवेदनात्मक पक्ष भारतीय कैनवास लिए हुए है। यथा--

1. खुशबू का रंग 2. मिश्र की ममी3. दादगाह4. पतझड़ का फूल 5. दीमक6. परिन्दे7. आईना8. शामी कागज9. सहरा नवरद 10. आबे तौबा11.आशयाना 12. मिट्टी का सफर 13. तलाश 14.मुट्ठी भर धूप 15. बेगाना ताजिर16. उकाब

1. खुशबू का रंग :--

वैसे तो खुशबू का कोई रंग नही होता, किन्तु इस कहानी के दोनों पात्रों के त्याग, बलिदान, क्रान्तिकारी तेवर और शारीरिक प्रेम से ऊपर उठे आत्मिक प्रेम की खुशबू अपने रंग से मानस को सराबोर कर देती है--"औरतें लिबासनही, जो शाम-सबेरे बदली जाएँ। कहानी की नायिका सत्ता के संघर्ष में मारे गए अपने प्रेमी की याद में जीवन काटती है।

2. मिस्र की ममी :---

यह कहानी भौतिक सांसरिकता पर सच्चे विचारों की जीत प्रमाणित करती है। इसका मुख्य पात्र एक लेखक 'कुरुश' है। जिसके पास विश्वास, संतोष, जीने का सही तरीका और एतमाद है।"[70] स्त्री पात्र योता 'कुरुश' को पसंद करती है, परंतु माता-पिता के दबाव में एक धनी बाप के लड़के के साथ शादी कर लेती है। योता न मानिसक शान्ति प्राप्त कर सकती है न संतान। इसी दंश को नयी व्याख्या लेखिका ने प्रदान किया है।

3. दादगाह:---

यह कहानी पारिवारिक तनाव से उत्पन्न सफर का वह मुकाम है जिसकी यात्रा तलाक की स्थिति पर जाकर समाप्त होता है। कहानी का नायक 'अकबर' तेहरांची

कोर्ट में पारिवारिक केस सुलझाता रहता है किन्तु उसके खुद के पारिवारिक जीवन का सपना कभी साकार नही हो पाता है।

4. पतझड़ का फूल:---

फूल प्रेम का प्रतीक होता है और पतझड़ की आयु लम्बी लगती है। यह कहानी भी अपने कथानक में प्रेमविवाह तथा अनमेल विवाह की समस्या समेटे हुए हैं। कहानी की नायिका 'कायातून' 'फिरोज' से प्रेमविवाह करती है जबकि उसकी बड़ी बहन को उसके बराबर का रिश्ता न मिलने के कारण फिरोज के चचाजाद से शादी कर लेती है। लेखिका के कहानी की समस्यात्मक स्थिति उस बिन्दु पर अवलम्बित है कि रिश्तों का कसैलापन हर जगह हर उम्र में होता है अगर उसमें बैलेंस न बनाया जाय तो कितना भी पाक संबंध क्यों न हो वे दरक जाते हैं। यही स्थिति कम उम्र की कायातून एवं फिरोज की होती है उनकी नादानी के कारण और उसकी बड़ी बहन की समस्या तो वैसे ही बराबर जोड़ीदार न मिलने के कारण है ही।

5. दीमक:---

यह कहानी सत्ताधीसों के द्वारा किए गए अनैतिक व्यवहार से उत्पन्न संघर्ष पर आधारित है। इस कहानी की नायिका के पांचों पुत्र सत्ता से विद्रोह के अपराध में शासन की बलि चढ़ जाते हैं।

6. परिन्दे:--

आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए इस कहानी का नायक 'विजय' ईरान में एक कंपनी में नौकरी करता है किन्तु घर की स्मृति उसके हृदय पटल पर साँप की तरह लोटता है। एकाकी जीवन शैली कुछ दिन प्रिय लगती है मगर वहीं दैनान्दिक क्रिया के रूप में शामिल हो जाए तो समस्याएं एवं निराशा उत्पन्न करता है।

7. आईना :---

चित्रकार के जीवनी पर आधारित 'आईना' कहानी उसके भावों एवं विकारों की सुदृढ़ आधारशिला का निर्माण करती है।

8. शामी कागज :---

एक विधवा के अथक परिश्रम से स्वावलम्बी बनने की संवेदनात्मक दास्तान प्रस्तुत करती नासिरा शर्मा की यह कहानी दर्दो एव दुःखों के सागर में डूबते हुए भी नाक को पानी के ऊपर उठाने का हौसला प्रदान करती है।

इस कहानी की नायिका 'पाशा' की अल्पायु में मृत्यु के कारण बुरी तरह आहत होती है किन्तु विषम परिस्थितियों में भी वह हार नही मानती है बल्कि खुद को आत्मनिर्भर बनाती है। अक्सर देखा जाता है कि बुरे समय में दुश्मन से भी अगर मदद मिले तो लोग स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकि डूबते को तिनके का सहारा भी एक बार पानी से बाहर निकालने में कारगर सिध्ध होता है। किन्तु 'पाशा' अपने मित्र द्वारा दी जाने वाली मदद को अस्वीकार कर देती है।

9. आशयाना :--

प्रस्तुत कहानी एकल परिवार की परिभाषा को मिथक करार करती हुई संयुक्त परिवार की पक्षधरता करती है। 'जमशेद' और 'बतुल' और 'बतुल' अपने तीनोंसंतानों के साथ गरीबी के कारण आर्थिक अभाव में जीवन की नौका खेते है किन्तु जमशेद के भाई की मृत्यु असमय हो जाती है। अत: भाभी एवं दोनों बच्चों को अपने पास रखकर सद्भाव से उनकी परवरिश करते हैं।

10. आबे-तौबा :--

इस कहानी में स्त्री के सरल हृदय की विराटता का विश्वासघात की कटारी से हत्या किया जाता है। कहानी की नायिका 'सूसन' एक स्कूल मनोविज्ञान की शिक्षक है। वह 'शमशाद' नामक एक मनोवैज्ञानिक की बातों से प्रभावित हो जाती है किन्तु

मनोविज्ञान की शिक्षिका उस वहसी के मन के कुविज्ञान को नही पढ़ पाई और उसके हवस का शिकार हो जाती है।

11. सहरा नवरद:---

यह कहानी दोहरे अभिशाप से अनुप्राणित है। जहाँ अत्यधिक ठंडी कंपाती है वही अधिक गर्मी जलाती भी है। इस कहानी का नायक भी लगभग ऐसी ही शरद-गरम दो पत्नियों के मध्य खुद को बेमेल महसूसता है। आर्थिक तंगी के कारण नायक धनवान एवं दमे की मरीज अपने से बड़ी उम्र के स्त्री से शादी करता है। उसकी मृत्यु के उपरांत अपने से 20 वर्ष छोटी लड़की से निकाह करता है। दोनों ही स्तर पर वह असहाय दिखाई पड़ता है।

12. मिट्टी का सफर:---

यह कहानी बिल्कुल सपाट एवं अभिधार्थ है। आर्थिक विपन्नता में जीवन यापन करने वाले 'मुश्तगुलाम' चाय बेचकर अपनी जीविका चलाता है। पुत्र के ज्ञानार्जनहेतु वह आर्थिक स्थिति को ठीक रखने हेतु बेटे के पैर में हुए घाव को वह अनदेखा करता है। अतः उसके पुत्र की मृत्यु हो जाती है।

13. तलाश:---

यह कहानी युवा वर्ग की मानसिकता का, उनके भटकाव का एक पुलिंदा पेश करती है। विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले चार युवक वहाँ पढ़ाई तो कर रहे है किन्तु उनके जीवन का कोई लक्ष्य नही होता। व्यर्थ ही समय जाया करते नजर आते हैं।

14. मुट्ठी भर धूप:---

कहानी की नायिका 'रेखा' नर्स की नौकरी करने के लिए ईरान जाती है जहाँ पहुँचकर उसे मानसिक एकाकीपन के सिवा कुछ भी नहीं मिला ।

15. बेगाना ताजिर:--

यह कहानी आर्थिक मंदी के कारण जनता की हुई दुर्दशा का दुःखद कूप है। नासिरा शर्मा का कहानी संसार पृथ्वी रूपी कागज पर प्रजापति द्वारा मनुष्य प्रकृति की सर्जना की प्रतिकृति से कुछ आगे पुनः सर्जन जान पड़ती है। उपेन्द्रनाथ अश्क ने शामी कागज संग्रह के बारे में लिखा है- "शामी कागज की कहानियाँ उनके ईरानी प्रवास की याद है। इन कहानियों का परिवेश और पात्र ईरानी है। मुझे नासिरा शर्मा की कहानियाँ समकालीन तमाम हिन्दी लेखिकाओं से भिन्न लगती हैं। "[71]

5. सबीना के चालीस चोर

इस कहानी का प्रकाशन सन् 1997 में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ। सबीना के चालीस चोर कहानी संग्रह सांम्प्रदायिक दंगों से उत्पन्न विभीषिका का आँखो देखा चित्रहार है। इस कहानी को पढ़ते वक्त पाठक सहज ही पचास वर्ष पूर्व के भारत की सैर उसी उर्जा के साथ महसूस करता है जैसा उस समय के माहौल में व्यक्ति जीकर अनुभव करता है। नासिरा शर्मा का रचना संसार काल्पनिकता की झूठी उड़ान नही भरता और न ही यथार्थ का नंगापन बयान करता है। उनकी लोकसंवेदन दृष्टि घटनाओं के तह में उतर जाती है। यह कहानी साम्प्रदायिकता एवं धर्म के नाम पर उठे दंगों का वकालतनामा जान पड़ता है।

इस कहानी संग्रह के बारे में रघुवंश मणि लिखते हैं- 'सबीना के चालीस चोर' संग्रह की कहानियाँ बिना नाम बताए पढ़ने दी जाय तो यह जान पाना कठिन होगा कि वह एक लेखिका की कृतियाँ हैं। आज के स्त्रीवादीविमर्श के अतिरेक में यह एक बड़ी उपलब्धि है नासिरा शर्मा की कहानियों में एक स्वस्थ्य सामाजिक समझ है। संकलनमें संग्रहित सभीकहानियाँ ऐसे जीवन की है जिसे जीते लोग भारतीय समाज के हाशिए पर है।"[72]

मानव, मानव के प्रति जब असंवेदनशील होता है, उसी समय एक ऐसी वृत्ति का जन्म होता है जो अलगाववाद की परिस्थिति पैदा करती है। भौतिक वस्तुओं की विस्तारता ऐक्चुअल में मानवीय मूल्यों की निस्सारता का प्रमाण है। इन्ही मूल्यों संस्कृतियों एवं मूल निवास से विरक्त होने पर जो संघर्ष, दर्द एवं छटपटाहट आम् जन में उठता है वहीं नासिरा शर्मा के कहानियों की सृजन भूमि एवं स्वस्थ्य बीजान्कुरण है।

कहानी संग्रह के फ्लैप से -"दर्द की बस्तियों की ये कहानियाँ जिस है। भारतीय आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं, वही इस देश की बुनियाद है । दरअसल ये कहानियाँ हिन्दुस्तान की सच्ची तस्वीर हैं। जिनका अंर्तसंगीत इनके कथानकों के तारों में छिपा है, जिन्हें जरा-सा छेड़ो तो मानवीय करुणा का अथाह सागर ठाठें मारने लगता है।"[73]

विभिन्न समस्याओं से रिलेटेड ये कहानियाँ हमारे वक्षस्थल को सिर्फ स्पर्श मात्र नही करती वरन् घाव के गहरे निशान भी छोड़ती है। लेखिका इस संग्रह के बारे में लिखती है "मेरी कहानी संग्रह "सबीना के चालीस चोर उस समय आ रहा है जब हिन्दुसतान अपनी आजादी की पचासवीं सालगिरह मना रहा है। इसमें क्या शक कि पिछली पांच दहाइयों में हिन्दुस्तान बहुत तरक्की की है। मगर एक सच और भी है कि हमने अपनी पाँच हजार साल पुरानी सभ्यता एवं संस्कृति से नाता तोड़ भविष्य को पकड़ने की कोशिश में बहुत कुछ खोया भी है। तरक्की करने की धुन में, हर दिन व्यवहारिक बनने की चाह में, हम बहुत तेज दौड़े हैं। इस बदहवास जल्दबाजी में हमसे क्या गुम हुआ? उन्हीं की खोज में इन कहानियों का जन्म हुआ।

इस कहानी संग्रह में कुल 12 कहानियाँ हैं जो इस प्रकार हैं...

1. विरासत 2. चाँद तारों का शतरंज 3. इमाम साहब 4. गूँगी गवाही5. शतघरवा 6. उसका बेटा 7. तक्षशिला8. चिमगादड़ 9. नौ-तपा 10. सबीना केचालीस चोर

11.आया बसंत सखी

1. विरासत :---

शहरीकरण एवं औधोगिकीकरण की अत्यधिक बढ़ती महत्वाकांक्षा प्रवृत्ति से होने वाले पारिवारिक विघटन का मार्मिक अंकन इस कहानी में हुआ है। फुल्लन मियाँ के दोनों बेटे शहर में स्थायी हो जाते हैं। जीवन की लीला शहर में कब अपनी साँस रोक ले इसका आभास तब हुआ जब उनके बड़े बेटे 'फारुख' की लाश गाँव लाया जाता है। फुल्लन मियाँ रोज अपनी पत्नी सहित पुत्र की कब्र पर जाते हैं उन्हें लगता है, मानों उनका बेटा शहर से गाँव लौट आया है।

2. चाँद तारों का शतरंज :---

गरीबी के कारण दुखद भरी जिन्दगी जीने पर मजबूर एक परिवार की करुण कथा को इसका सृजनभूमि बनाया गया है। यह परिवार पतंग बनाने का कार्य करता है। हर क्षेत्र में आज कम्पटीशन बढ़ गया है। जब शहर से बड़ा आर्डर पतंग बनाने के लिए उस परिवार को मिलता है तो कोई आपसी शत्रुता के कारण उसके सारे पतंगों में सुराग कर देता है। जिससे पतंग कारीगर को भारी आर्थिक संकट को झेलना पड़ता है।

3. इमाम साहब :---

इस कहानी में इमामों की जो मस्जिद में नमाज सिखाते-पढ़ाते हैं उनकी आर्थिक विपन्नता के सत्य को धरातल पर उतारने का सफल प्रयास किया गयाहै।

4. गूँगी गवाही :---

इस कहानी में पुलिस महकमों में उनके द्वारा होने वाले अन्याय का पर्दाफॉस किया गया है।

5. शतघरवा:-

इस कहानी में सम्प्रदाय के प्रति उदासीन, दूसरे धर्म का व्यक्ति होने पर अनास्था की प्रवृत्ति का अंकन है। मानसिक संकुचन या पुरानी घिसी-पिटी रूढ़ियों, बातों, कही-कहाई लोकोक्तियों को लेकर जब मानव अपने ही तरह सामने वाले धर्म के व्यक्ति के खून के रंग को सफेद या स्याह के नजरिए सेदेखने लगता है वहीं साम्प्रदायिकता का जन्म होता है। कहानी का नायकअब्दुल' शहद का छत्ता निकालने में माहिर है। एक परिवार के कहने पर उसे शहद का छत्ता निकालने के लिए बुलाया जाता है किन्तु उस घर की बुजुर्ग महिला को अब्दुल का मुस्लिम होना रास नही आता है, वह पुलिस से अब्दुल को डरा धमकाकर हमेशा के लिए उसे उस घर में न आने की धमकी दिलवाती है।

6. उसका बेटा :--

मूँगफली बेचनेवाले के जमीन से जुड़ी कहानी है। इसमें नर्स की लापरवाही से उसके बेटे की मृत्यु हो जाती है।

7. तक्षशिला :---

यह कहानी स्त्री-शोषण एवं उसके प्रति असहिष्णु भावनाओं का आवेग है। कहानी की नायिका (निगार) एक पत्रकार है। निगार अपने पेशे के वजह से कई ऐसे अनुभवों से गुजरती है, जिसकी कल्पना शायद वह स्वप्न में भी न की होगी। किन्तु पति 'परवेज' उसका उत्साहवर्धन करता है और हौसले की उड़ान को जारी रखने का मशविरा प्रदान करता है।

8. चिमगादड़ें :--

आर्थिक अभाव के कारण रेंगती उर्दू स्कूलों की दम तोड़ती साँस को इस कहानी में दर्शाया गया है। कहानी के माध्यम से मुस्लिम समाज की युवतियों की विवशता एवं साम्पतिक दुर्दशा का यथार्थ चित्रण किया गया है।

9. नौ-तपा :---

इस कहानी में साम्प्रदायिकता के कारण तबाह होती जिन्दगियों की कहानी है। कहानी का नायक लच्छू के माता-पिता की हत्या की जाती है। समीह 'लच्छू' बर्तनों की कलई करने का काम करता है। लच्छू अपना नाम बदल कर उसी गाँव में कलई करने आता है जहाँ पर उसके माता-पिता को मौत के घाट उतार दिया गया था। वह भावनाओं में बहकर उसी घर के पास गया जो पहले उसका अपना घर था। लच्छू अपने पुराने घर के पुराने बर्तनों पर कलई चढ़ाकर अपनी माँ के ममत्व को महसूस करना चाहता था क्योंकि उसकी माँउन बर्तनों को स्पर्श की थी। उस घर की नई बहू सभी पुराने बर्तन बेंचकर स्टील के नए बर्तन ले लेती हैं। राज खुलने पर की यह समीह कोई और नही लच्छू ही है तो सभी लोग मिलकर उसको अधमरा बना देते हैं।

10. सबीना के चालीस चोर :---

यह एक प्रतीकात्मक कहानी है। सम्प्रदाय के नंगापन एवं खोखले वृत्ति की परिचयात्मक कहानी 'सबीना' के चालीस चोर' में बार-बार दंगों के वजह से 'शाहरुख' एवं 'सकीना' अपनी पुत्री शबीना के साथ इस शहर से उस शहर स्थानान्तरण करते रहते हैं। जिससे उनके परिवार के प्राणों की रक्षा सके। सबीना का बालमन अपने तरह की दृष्टि से यह महसूस करती है कि क्या यह आतताई अलीबाबा चालीस चोर है जो हमेशा मेरे घर पर निशाना साधते रहते हैं।

नासिरा शर्मा इस कहानी के बारे में लिखती है- "सबीना के चालीस चोर कहानी में 'अलीबाबा चालीस चोर' कहानी प्रतीक के रूप मौजूद है। जो सबीना की मासूम मानसिकता के बहाने उस हिन्दुस्तान का नजारा दिखाती है, जिसमें हम साँस ले रहे हैं। गिनती में वे जितने भी हो मगर उन चोरों को हम बखूबी पहचानते हैं।"[75]

11. आया बसंत सखी :--

लखनऊ में बेमौसम बरसात की तरह होते सिया-सुन्नी फसाद की पृष्ठभूमि पर आधारित कहानी 'आया बसंत सखी' है। यह अपने कैनवास के मानचित्र में हस्तकला शिल्पियों की आर्थिक तंगी से उत्पन्न बेकारी का चित्र दिखाता है। जब कभी इन शिल्पियों के स्थिति में सुधार की गुंजाइश होती है, उसी समय असामाजिक तत्व एवं बड़े व्यापारिक लोग सिया-सुन्नी फसाद को हवा दे देते हैं।

6. खुदा की वापसी

नासिरा शर्मा की यह 'कहानी संग्रह सन् 1999 में ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है लेखिका मुस्लिम समाज के स्त्रियों की धर्म के नाम पर बाँधी गई सीमाओं से असंतुष्ट है और सशंकित भी। वह इस्लाम धर्म,शरीयत, कुरान इत्यादि ग्रन्थों का अध्ययन करने के उपरान्त यह बात समझ गई कि हमारे धर्मो के नाम पर डरा-धमकाकर इस धर्म के ठेकेदारों ने हमारी संवेदनाओं से सिर्फ खिलवाड़ मात्र किया है। धर्म के नाम पर ठगी मुस्लिम औरतों को न्याय दिलाने के उद्देश्य से नही बल्कि उन्हें जागरूक करके अपनी लड़ाई स्वयं लड़ने का हौसला प्रदान करना लेखिका का मुख्य लक्ष्य है। लगभग सभी कहानियों में स्त्री अस्मिता, संघर्ष, मेहर, दहेज इत्यादि मुद्दों पर सवालिया नजरिए से लेखनी घुमायी है।

इस संग्रह के कहानियों को पढ़ने के बाद 'गीता बिज' लिखती हैं . "खुदा की वापसी को पढ़ते हुए, 'जयशंकर प्रसाद' की ध्रुवस्वामिनी नाटक सामने आ जाता है। इन कहानियों में नासिरा का इसरार भी ऐसा ही ठोस और असरदार है।"[76]

मुस्लिम स्त्रियों के तलाक, दहेज, मेहर, बहुपत्नीवाद आदि समस्याओं से संबंध रखने वाली इन कहानियों द्वारा लेखिका ने नारी चेतना पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस परिप्रेक्ष्य में नासिरा जी लिखती हैं- "मेरे लिए ये कहानियाँ लिखना बहुत जरूरी था, ताकि मैं वह सारे कानून जो इंसान के फायदे में जाते हैं उन्हें अपने लेखन का

माध्यम बना साहित्य द्वारा नए संघर्ष की शुरुआत कर सकूँ और उस 'एजाण्ड विज्डम' से लाभ उठा सकूँ जो हमारा अतीत है और वर्तमान पर बुरी तरह हावी है।"[77]

इन कहानियों को कागज पर उकेरने के पीछे लेखिका का केवल आक्रोश नही है बल्कि एक मानसिकता है, जो उसके गहरे संताप एवं दर्द को इंगित करती है। नासिरा जी ने ये कहानियाँ नारी चेतना पर जरूर लिखी है किन्तु उनकी दृष्टि नारीवादी नही है, वे लिखती हैं- "मुझे लगा बेहतर है कि हम मिले अधिकार को पहले हासिल करे, फिर जो नही है, उनका सवाल उठाए।"[78]

खुदा की वापसी' संग्रह में संकलित कहानियाँ एकता में वैभिन्नता लिए हुए है सभी कहानियों के पात्र चूड़ीगार, क्लर्क, धोबी, कारखानादार, पेशावर, पाली, दर्जी आदि वर्गो से आए है। कहानियों की भाषा अनेकरूपता लिए हुएहै। जिससे उर्दू शब्दों का प्रयोग होते हुए भी पाठकों को अवरोध उत्पन्न नही होता। शैलियों में पत्र शैली एवं स्वत्व शैली का बड़ी खूबसूरती से प्रयोग किया गया है। स्त्रीवादी सोच को कायम रखने के लिए बिना नारीवादी नारा दिए नासिरा शर्मा उन विषय वस्तुओं को एक कड़ी में जोड़ने का सायास तरीका 'खुदा की वापसी' कहानी में अपनाया है। वे सारे शरीयत कानून, तौर तरीके जो हकीकी दुनिया के खुदाओं यानी धर्म के नाम पर रक्तहीन दस्युता करने वाले ठेकेदारों से बचाने के लिए आवश्यक समझा, उनका प्रयोग औरत के पक्ष में किया। इस संदर्भ में नासिरा शर्मा का अपना स्वयं मत द्रष्टव्य है- "पूरी दुनियाँ में अनेक औरतें अपनी-अपनी तरह से यह लड़ाई लड़ रही हैं । उनके द्वारा किए गए सर्वे का रिपोर्ट पढ़ने से पता चलता है कि शरीयत के नाम पर कैसे-कैसे जुल्म ढाकर औरतों को उनके अधिकारों से वंचित किया जाता है? इस्लाम ने यदि औरतों को बराबरी का अधिकार दे रखा है तो फिर वह अपने समाज, परिवार में इस तरह कैद क्यों रखी जाती है? एक तरफ कयामत के दिन मुरदों की पहचान माँ के नाम से होगी बाप के वंशवृक्ष से नही, फिर उसी औरत को आखिर प्रताड़ित कौन कर

रहा है? सियासत, समाज या अज्ञानता ? जवाब साफ है कि वह मर्द है जो औरत के अधिकार का हनन करता है। मगर, क्या औरत कम कसूरवार है? जो अपने अधिकारों को लेना नही जानती है, उसको समझती नही है, उसको पढ़ती नही है, और दूसरी औरत को बताती नही है।"[79]

इस संग्रह में नवग्रह की तरह टिमटिमाते हुए नौ तारे अपने-अपने आलोक में स्वयं प्रकाशमान है, कोई चमक के कारण तो कोई कीर्ति से दमक रहे हैं। 1. खुदा की वापसी 2.चार बहने शीशमहल की 3. दहलीज 4. दिलआरा 5. पुराना कानून6.दूसरा कबूतर7. बचाव 8. मेरा घर 9. नयी हुकूमत

1.खुदा की वापसी :--

मेहर (स्त्रीधन) की समस्या को इस कहानी का केन्द्र बनाया गया है। कहानी की नायिका 'फरजाना' को यह बात खलती रहती है कि 'गोल्डेन नाइट' के पहले ही उसका शौहर जुबैर उससे मेहर माफ करवा लेता है। मेहरके संबंध में जब वह 'शरीयत कानून' का अध्ययन करती है तो उसे पता चलता है कि जुबैर उससे छल-कपट किया है। फरजाना अपनी बचकानी हरकत से पश्चाताप करती है किन्तु जुबैर के प्रति हुई वितृष्णा उन दोनों के संबंध को तलाक रूपी कटार से काट कर ही दम लेती है।

2. चार बहने शीशमहल की:---

इस कहानी में बदले की भावना से राजनीतिक षडयंत्र रचकर स्वार्थो की सिध्धि हुई है। कहानी में 'शरीफ' नायक चूड़ियाँ बेचने वाले व्यक्ति की चार पुत्रियों को अपने चाचाओं के गुण्डागर्दी का फल भोगना पड़ता है और गोली से भूनकर उनकी हत्या कर उनकी हत्या कर दी जाती है।

3. दहलीज :---

स्त्री के स्थान की उसके स्वाभिमान की इच्छाओं और विचारों की पुरुषों द्वारा सीमा पहले ही तय कर दी जाती है। दहलीज कहानी ऐसी ही कथा शिल्पता की एक

लड़ी है। आज की वयस्क स्त्री इस बंधन से मुक्ति के लिए पैरों में बंधे मर्यादा रूपी साकर को बहुत दिन पहले से झटके दे रही है किन्तु तोड़कर मुक्त गगन में साँस लेने की ऊर्जा दहलीज कहानी में चरितार्थ हो पायी है।

4. दिलआरा:---

संग्रह की दिलआरा कहानी कथ्य कम, कहानी कम, ज्यादातर स्त्रियों, विशेषकर मुस्लिम सम्प्रदाय की स्त्रियों के लिए स्व की जागृति एवं अधिकारों की जानकारी की पाठशाला लगती है। जहाँ पर उसे एक तहजीब सिखाई जाती है। कहानी की स्त्री पात्र 'साजदा बेगम' पड़ोस में रहने वाली बालिकाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक कराती है। प्रस्तुत कहानी में स्त्री के अधिकार, स्त्री स्वतंत्रता, इस्लाम धर्म में स्त्रियों का स्थान, विवाह संस्कार आदि पक्षों पर चर्चा की गई है।

5. पुराना कानून :---

यह कहानी बहुविवाह के समस्या पर आधारित है। इस कहानी का नायक समीम विवाहित होते हुए भी कपट से दूसरी शादी करता है जो प्रेमिका रूबीनाके प्रेम में पड़ता है। सामाजिक उलाहना एवं पारम्परिक दबाव के कारण वह अंत में झुक जाता है।

6. दूसरा कबूतर :-

दो नाव में पैर रखने से नाव के सेहत पर फर्क नही पड़ता वरन् व्यक्ति के चाँचे दो भागों में बँट जाते हैं। जो इस प्रकार की धीष्टता करता है, ठीक ऐसे ही इस कहानी का नायक 'शहाब' दो विवाह करता है और दोनों से संबंध बनाए रखना चाहता है किन्तु वे दोनों उससे खुलाह (तलाक) ले लेती है।

7. बचाव:---

यह कहानी विधवा जीवन की त्रासदी पर आधारित है। कहानी की नायिका 'बदली' की पहली शादी से उत्पन्न बच्चे की कशमकश से उत्पन्न पीड़ा का अंकन

किया गया है। वह पुनर्विवाह के बाद उस बच्चे को कहाँ छोड़े क्योंकि जिससे बदली की दूसरी शादी होती है उसका परिवार पहले बच्चे को स्वीकारना नही चाहते जबकि बदली उसे अपने पास रखना चाहती है।

8. मेरा घर कहाँ :---

यह कहानी नारी मन की पीड़ाओं उसके अन्तःकरण के संवेदनाओं की नवीन व्याख्या है। इस कहानी की नायिका विधवा है, उसका नाम लाली धोबिन है। वह जीवन की नाव को अकेले ही लहरों के थपेड़ो से बचाती जीती है किन्तु यही दिन उसके बेटी को भी देखने पड़ रहे है यह करुण की अवस्था है।

9. नयी हुकूमत :--

पुराना कानून एवं दूसरा कबूतर कहानी का सुधरे रूप में परिवर्तन इस कहानी की विषय वस्तु है। बहुपत्नी विवाह की समस्या इसके केन्द्र में है।

नासिरा शर्मा जी के इस संग्रह की कहानियाँ नारीवादी न होते हुए भी आम् नारी जो एक मानव की प्रतीक है, जो हाड़ मांस की मानवी है, उनको कैरेक्टर की बागडोर थमाती नजर आती है। निम्न वर्ग एवं मध्यम वर्ग दैनान्दिक रोजी-रोटी के लिए संघर्ष करती मुस्लिम समाज की स्त्रियों के संवेदना

एवं वेदना का इतने गहराई से यथार्थ अभिव्यक्ति की हैं जिसे नासिरा शर्माजैसा विराट व्यक्तित्व रखने वाली लेखिका ही कर सकती है।

7. गूँगा आसमान

यह नासिरा शर्मा का सातवाँ कहानी संग्रह है। जिसका प्रकाशन 1999 ई. में हुआ। गूँगा आसमान कहानी संग्रह में 18 कहानियाँ है। जो पूर्व और बाद के आने वाले कहानी संग्रहों में प्रकाशित है। एक कहानी 'ततइया' को छोड़कर बाकी सब पूर्व के संग्रहों में संकलित हैं। उन रचनाओं की संख्या गिनाना सिर्फ पुनरावर्तन मात्र होगा। 'ततइया' का जिक्र करना तर्कसंगत होगा।

ततइया :--

यह कहानी नासिरा शर्मा की प्रिय कहानियों में गिनी जाती है। 'ततइया' प्रतीक है उस पाशविक वृत्ति का जो शंका वश अपने ही पारिवारीजन को हिकारत भरी नजरों से देखता है। कहानी की नायिका 'शन्नो' सुन्दर एवं जवान है जिसकी प्रशंसा उसकी सास ही नही, पानी भरने आने-जाने वाले लोग बहाने से कुछ देर वहाँ ठिठककर एक नजर देखने की चाह से करते हैं। शन्नो अपने सास की उपेक्षा का शिकार होती है और नदारद की जिन्दगी जीने पर मजबूर की जाती है। पति का शन्नों पर विशेष स्नेह होते हुए भी वह माँ के कोप की शिकार होती है। कहानी का अंत सुखद होता है। इस कहानी संग्रह में लेखिका ने पूर्व की स्त्री विमर्श परक कहानियों को संग्रहीत किया है।

8. इंसानी नस्ल:---

इंसानी नस्ल का प्रकाशन सन् 2000 में प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली से हुआ। यह लेखिका का आठवाँ कहानी संग्रह है।

इस कहानी में दो प्रकार की वृत्ति समावेषित होती है। -'इंसानी नस्ल' के संबंध मे लेखिका कहती है--"इस संग्रह में दो तरह की कहानियाँ हैं- पहली इंसान से इंसान की टकराहट, धर्म, भाषा, जात-पाँत की आड़ लेकर जो सतही कारण है। जरूर, संवेदना के स्तर पर एक इंसान दूसरे को छलकर सुख प्राप्त करता है और दूसरे इंसान को गहरे आहत करता है। अंर्तधारा को

पकड़ती इन्सानी पेचीदगियों की ये कहानियाँ है। जो इंसान की आन्तरिक व्यवस्था को दर्शाती है।'[80]

इस संग्रह की कहानियाँ पहले-पहल दर्द एवं छटपटाहट की गर्मी लेखिका के कनपटी पर तल्ख होकर पकी है। उसके बाद सृजन का आकार धारण की है। नासिरा शर्मा अपनी समझ एवं देखने की बारीकियत से समस्याओं को पहले चोट देती है,

फिर कहानी रूपी इंसानी नस्ल की मूर्ति बनाती है। जिसमें सारे जहाँ का दर्द मुखरित हुआ है। लेखिका स्वयं कहती है- "इस संग्रह की सभी कहानियाँ आज के इंसान के दिल व दिमाग की टकराहट की साक्षी है जो अनेक बुनियादी सवालों से साक्षात्कार करती नजर आती है। "[81]

इस कहानी में कुल 13 कहानियाँ है जो इस प्रकार है

1. असली बात 2. अपराधी3. पाँचवा बेटा 4. बड़े परदे का खेल5.कोड़ा6. अग्नि परीक्षा 7. मरुस्थल 8. उजड़ा फकीर 9. दुनिया10. वही पुराना झूठ11.इन्सानी नस्ल 12. एक न समाप्त होने वाली प्रेम कथा13. कनीज का बच्चा

1. असली बात :--

वक्त की नजाकत एवं यथार्थ से अभिज्ञान न होने के कारण साम्प्रदायिकता फैलती है, जबकि वास्तविक स्थिति इससे जुदा ही है। शहर में साम्प्रदायिक तनाव के कारण कर्फ्यू लगा हुआ है। कहानी की नायिका 'तंबोलन' अपने पुत्र को बीमार अवस्था से निजात प्राप्त कराने हेतु दरगाह पर जाती है, जहाँ वह हिन्दू-मुस्लिम एकता के दर्शन करती है।

2. अपराधी :---

यह कहानी रिटायर पुलिस अधिकारी की मनोदशा एवं भ्रम के चक्रवात पर आधारित है, जब उसे वास्तविकता का आभास होता है तो जीवन को सहज, सरल एवं आनंद से जीता है।

3. पाँचवा बेटा :-

हृदय परिवर्तन से कहानी का साधारणीकरण होता है। इस कहानी का पुरुष पात्र 'इमामबाड़े' की रक्षा हेतु उसके छत पर चढ़कर तिरपाल डालता है। उसके इस क्रिया कलाप को 'अमतुल' देखती है। अमतुल को 'सुलाखी' से

घृणा हो जाती है क्योंकि उसे लगता है कि यह इमामबाड़े को अपवित्र कर रहा है किन्तु पानी में भीगता हुआ सुलाखी इमामबाड़े की रक्षा कर लेता है और बीमार भी हो जाता है फिर वह स्त्री सुलाखी को अपना पाँचवा बेटा मानने लगती है।

4. बड़े परदे का खेल :--

इस कहानी में एक विवाहित पुरुष कई लड़कियों को अपने प्रेम जाल में फँसाता है। अंत में सभी युवतियाँ मिलकर उससे प्रतिशोध लेती है। इस कहानी में स्त्रियों द्वारा वर्ग-संघर्ष का दर्शन होता है।

6. अग्निपरीक्षा :--

इस कहानी की नायिका 'कम्मो' को अपने को पाक साबित करने हेतु समय-समय पर अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है। जमीन को हासिल करने के लिए 'मंगलू' कम्मो' के ऊपर बदचलन होने का आरोप लगाता है किन्तु कम्मो अपने कुशाग्र बुद्धि से उस अग्निपरीक्षा से निकल आती है।

7. उजड़ा फकीर :---

शहरीकरण के रेल-पेल से एक परिवार अस्त-व्यस्त हो रहा है उस दुख के करुण क्रन्दन की गाथा इस कहानी में गाई है।

8. दुनिया :--

आज की दुनिया बड़ी प्रेक्टिकल हो गई है। संवेदनाएं सूख गई हैं। रिश्तो को जैसे दीमक खाए जा रहा हो, इसी भावहीन नग्नता का यथार्थ चित्रण है 'दुनिया' कहानी । कहानी की नायिका 'शोभना' अपने कार्य में इतनी मशगूल है कि पिता की मृत्यु पर भी वह घर नही आ पाती है।

9. वही पुराना झूठ :--

देश में लिंगानुपात इतने विषम पैमाने पर है फिर भी पुरुष सत्ता अपनी मनमानी विवाह में चलाता है। कहानी की नायिका 'रज्जो बी' अनाथ युवती 'जाहिदा

के विवाह को लेकर काफी चिंतित है। वह उसका निकाह करवाने कलकत्ता ले जाती है किन्तु ट्रेन देर से पहुँचने के कारण लड़का पक्ष किसीदूसरी लड़की से शादी कर लेता है।वहाँ पर 'गफूर' उन लोगों को अपने घर मेंरात गुजारने हेतु बुला लेता है। किन्तु वहाँ की स्थिति और दयनीय हैउसके घर में भी कई युवतियाँ विवाह न होने के कारण बूढ़ी हो रही है। रज्जो बी जाहिदा का निकाह एक बूढ़े व्यक्ति से करवाना चाहती थी किन्तु जाहिदा स्वयं को मुक्त करा लेती है।

10.इंसानी नस्ल :---

यह कहानी अन्र्तधर्मीय विवाह समस्या पर आधारित है इस कहानी का नायक नवाब का सबिता नाम स्त्री से प्रेमविवाह होता है। किन्तु साम्प्रदायिक दंगों के कारण हर व्यंग्य एवं वार का निशाना ये दोनों बनते हैं अत: इनको पलायन करना पड़ता है।

11. कनीज का बच्चा :---

पैतृक संपत्ति को लेकर उत्पन्न पारिवारिक संघर्ष की खुली किताब है यह कहानी। इस कहानी की बड़ी बेगम अपनी सौतन के बेटे को उसका हक देने के पक्ष में नही है जबकि बिना किसी वार्तालाप के बिना पूर्व प्लानिंग उसकी छोटी सौतन बड़ी बेगम के बेटे को अपने मायके की आधी संपत्ति दे देती है।

12. जोड़ा :--

चित्रकार के अकेलेपन की यंत्रणा है।

9. नासिरा शर्मा की शीर्षकहानियाँ

इसका प्रकाशन सन् 2001 में 'किताब घर प्रकाशन (दिल्ली) में हुआ। इस संग्रह में कुल सात कहानियाँ हैं। जितने कहानी संग्रह नासिरा शर्मा के सन् 2000 के पहले प्रकाशित हो चुके है वही कहानियाँ इसमें है। अतः इनका पुनरावर्तन करना तर्क संगत नही है।

10. बुतखाना

नासिरा शर्मा का दसवाँ कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 2002 में 'लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद से हुआ। लेखिका का यह कहानी संग्रह सामाजिक चेतना, आम्-जनसंवेदना, सिकन, छटपटाहट एवं इंसानी जटिल प्रवृत्तियों का सशक्त हस्ताक्षर है।

संसारिक मुद्दों एवं गफलत भरी जिन्दगी से ये कहानियाँ मात्र परिचित ही नही कराती वरन् अध्येता को एक नई सोच एवं दृष्टि प्रदान करती है। इन कहानियों का सर्जक 1976 से लेकर 2001 तक के अपने जीवन यात्रा में जिसमें रचना यात्रा शामिल है का अंकन यथार्थ और कल्पना की स्याही का मणिकांचन प्रयोग हुआ है।

कहानी संग्रह के फ्लैप पर लिखा है-" नासिरा शर्मा की कहानियों का यह संग्रह सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और इंसानी जटिल प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति का दस्तावेज है। यह वर्तमान समय की विषमताओं को कहानियों में इस सहजता से पिरोता है कि इंसानी रिश्तो की ललक पात्रों में बाकी ही नही रहती बल्कि टूटते रिश्तों और बदलते मानवीय सरोकारों की कचोट पाठकों को गहरी तपकन का एहसास देती है।"[82]

ये कहानियाँ समाज की वह सच्चाई है जो मेरी अनुभूति से नही बल्कि यथार्थ की जमीन से उपजी है जिसमें जरूरत के अनुसार थोड़ा झूठ, कुछ कल्पना का और मेरे अपने अहसास का मिश्रण है। कहानियों में बयान स्थितियों ने मुझे बेचैन जरूर किया और एक सवाल भी सामने रखा कि इतना कुछ प्रयास करने के बाद परिवर्तन क्यों नही आता है? यह सवाल अपने जगह जितना अहम् है उतनी यह हकीकत भी बढ़ती आबादी के साथ पैदा हुए नए इंसान नई समस्याओं के साथ जीवन में प्रवेश करते हैं और समाज के स्तर पर नई कठिनाइयों को जन्म देते हैं, इसलिए बदलाव और बदहाली का साथ अभी रहेगा। "[83]

इन कहानियों में व्यक्त परिस्थितियों का कोई ऐतिहासिकसंदर्भ तलाशकरने की आवश्यकता नही है। क्योंकि इनकी कथाशिल्प ऐसी हैकि आज कीनस्ल अपने आप को साबित करने हेतु हमेशा संघर्षरत है। इस कहानी संग्रह की मौलिकता उसके मूल्यों के कसाव में है। भाषा एवं संवाद इस प्रकार मिला जुला है कि पात्रों का तादात्म्य जुड़ा रहता है।

इस कहानी संग्रह रूपी माला में तीस मनकाएं पिरोई गई है जो इस प्रकार है-- 1. नमकदान 2. अपनी कोख3. खिड़की 4. बुतखाना 5. गुमशुदा लड़की6. ठंडाबस्ता7. बिलाव 8. मटमैला पानी 9. घुटन 10. दूसरा चेहरा 11.इच्छा घर12. कैदघर 13. फिर कभी 14. शर्त 15. गलियों के शहजादे 16. मरियम17. लू का झोका 18. कल की तमन्ना 19. रुतबा20. खौफ21. गलत 22. नजरिया23. आज का आदम24. निकास द्रार 25. पीछा26. उलझन27. अभ्यास 28. तन्हा 29. पनाह30. मेरी रचना प्रक्रिया

बुतखाना को लेखिका का सर्वश्रेष्ठ कहानी संग्रह तो नही कहा जा सकता क्योंकि जो लेखक अभी रच-पच रहा है। वह और कितने संवेदनात्मक आयामों से टकराएगा और कितनी बार टंकार से मधुर झंकार की धुन निकलेगी किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा की पहली कहानी 'बुतखाना' है और इस संग्रह में उनके जीवन के रचनात्मक शुरुआत की यात्रा से लेकर वर्तमान से कुछ पहले 2001 तक के जीवन दर्शन बड़ी बेबाकी से प्रकट हुआ है।

नमक दान :--

इस कहानी में विवाहेतर संबंध को दर्शाया गया है। इस कहानी की नायिका 'गुल' का 'जमाल' नामक युवक से प्रेमविवाह होता है किन्तु बिजनेस के चलते वह किसी दूसरे के संबंध में पड़ जाता है--"आखिर साँप का बेटा सपोला ही होता है। लाख उसे दूध पिलाओ तो क्या उसके अन्दर जहर मर जायेगा।"[84]

ऐसी ही प्रवृत्तियों का लेखा जोखा करती लेखिका की ठण्डा-बस्ता और खिड़की कहानियाँ है। ठण्डा-बस्ता में ईमानदार, साहसी, थाना, एस.एच. ओ, संतोष कुमार के तबादले और सहायक द्वारा चार्ज लेते ही जरीना हत्याकांड की फाइल बंद होना इस बात का सबूत है कि भ्रष्टाचार राजव्यवस्था में इमानदारों के लिए कोई जगह नही है।

बुतखाना:---

कहानी में महानगरीय जीवन की संवेदनशून्यता का यथार्थ चित्रण है। शहर की मिठास वही महसूस करता है जो उससे काफी दूर है। पास आने पर महानगरीय जीवन चमकदार तो लगता है किन्तु अन्दर से पूरी तरह खोखलीहै।

11. दूसरा ताजमहल

यह नासिरा शर्मा का ग्यारहवाँ कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन ई. सन् 2002 में इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली में हुआ था।

इस संग्रह की सभी कहानियाँ लेखिका की मौलिक अनुभूतियों से ताल्लुकात रखते हुए यथार्थ का एहसास दिलाती है। इस संग्रह की कहानियों के सभी पात्र अपने असली चेहरे के साथ प्रकट होकर जिन्दगी के थपेड़ों को झेलते हुए अपने उद्देश्य तक पहुँचने में संघर्ष रत है। "जिसकी सारी कहानियाँ अपने रंग की है। उनमें आपसी कोई अन्तर्धारा नही बहती है। यह इन्द्रधनुष के ऐसे सात रंग है जो साथ रहने पर भी अपना अलग अस्तित्व रखती है।"[85]

इन कहानियों में लेखिका ने समकालीन परिवेश बदलते संदर्भ, औरत-मर्द के रिश्तों के बदलते प्रतिमान मूल्य विघटन जैसे विभिन्न संदर्भों का अवलोकन किया है। लेखिका का मन्तव्य है- "इस संग्रह की कहानियाँ जिन्दगी की अनेक पर्ते संवेदना के स्तर पर खोलने के साथ सामाजिक ताने-बाने की जकड़न को तोड़ने की कोशिश में लगे इंसानों की बात कहती है। कुछ कैदखाने इंसान ने अपने लिए खुद निर्मित किए हैं और उसको उससे डर लगता है। और डर-डर में वह कैदखाना उसका मकबरा बन

जाता है। जो जंजीरों को तोड़ अपने को मुक्त कर लेता है वह जीवन के अनेक महत्वपूर्ण अनुभवोंसे गुजरता जीने का असली मजा लेता है। इस बात का अहसास मुझे भी खुशी देता है जब मेरी आँखे किसी नऐ किरदार को ढूँढ लेती हैं। उसके परिवेश में साँस लेने लगती है। उसका दिल व दिमाग किसी शीशे की तरह पारदर्शी हो इसके विचार-जज्बात, को मुझे बिना दुराव-छुपाव के देखने का अवसर देता है तब मैं लम्हों को जीती हुई महसूस करती हूँ कि मैं इंसानों से मिलने की यात्रा में आगे तो बढ़ी।"[86]

इस संग्रह की कहानियाँ एक ऐसे मुकाम की तलाश करती है जहाँ पर स्त्री की संवेदनाएं पूर्ण पुरुष में निहित हो आर्थिक व्यवस्था कितना भी सुदृढ़ क्यों न हो किन्तु भावानात्मक घटाव वर्णसंकरता की ओर कदम बढ़ाने को मजबूर कर देता है। इस संग्रह में सात कहानियाँ हैं

1. दूसरा ताजमहल 2. तुम डाल-डाल हम पात-पात 3. और गोमतीदेखती रही 4. प्रोफेशनल वाईफ5. पंचनगीना वाले6. गली घूम गई 7.सन्दूकची

दूसरा ताजमहल :---

यह कहानी समय एवं संवेदनाओं के ऊहापोह से उपजी एकाकी वृत्ति के भटकाव एवं अनिर्णय से उपजे असंतोष का भावन है। कहानी की नायिका नयना क पति पेशे से डॉक्टर है। संसार के दुःखों को सुलझाने के चक्कर में अपना दाम्पत्य जीवन ही उलझा लेते हैं नयना को पर्याप्त समय न मिलने से वह रविभूषण नामक व्याक्ति से संबंध स्थापित कर दूसरा ताजमहल बनाने की असफल कोशिश करती है।

तुम डाल-डाल हम पात-पात :---

समाज के रक्षक, पुलिस महकमा का अत्याचार और युवा आक्रोश दिखाया गया है।

प्रोफेशनल वाइफ :---

इस कहानी में यौन शोषण एवं बढ़ती अनैकिता का चित्रण किया गया है। कहानी की नायिका 'बनी' नामक युवती है जो यौन शोषण के कारण मानसिक दृष्टि से टूट जाती है।

पंचनगीना वाले :--

सामजिक समस्या को उजागर किया गया है। इसमें घर के दादा जी समाज की मान्यताओं को नकारते हुए 'तुषार' और 'तरु' का विवाह करवातेहै।

गली घूम गई :-

यह कहानी बहुविवाह के समस्या पर आधारित है।

12. किस्सा जाम का

यह कहानी संग्रह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से सन् 2012 में प्रकाशित हुआ है। इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ (चौतीस) ईरान की, लोक संस्कृति पर आधारित है। बल्कि यूं कहें कि हिन्दुस्तान और ईरान की साझा संस्कृति एवं समानता जो दोनों देशों की विरासत है, का आइना प्रस्तुत करती है, ये कहानियाँ, तो अतिशयोक्ति नही होगी। लेखिका कहती है कि जब इन देशों के संस्कृतियों में समानता, ईरान में वहाँ के लोक कथाओं में नजर आई तो मेरा कथाकार हृदय पुनः सृजन के लिए व्याकुल हो उठा। ईरान के खुरासानी बोली से हिन्दी में अनुवाद करते वक्त नासिरा शर्मा ने रचना के मुहावरे को पकड़े रखा। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस संग्रह की कहानियाँ लेश मात्र भी एहसास नहीं कराती कि वे उनके अपने लोक की नही है। यह सीधापन ही इन कहानियों का वास्तविक सौंदर्य है। संग्रह के कुछ कहानी शीर्षक किस्सा जाम का, कहानी एक बेल की, आशिक देव, राह व नीम राह, परीराजकुमारी, लोमड़ी, सोने के अण्डोवाली मुर्गी, बद से बदतर, चतुर दरवेश,

बाँसुरी की मीठी धुन, तीन नारंगियों की कहानी, चालीस चाबियाँ, किस्सा सात सिर कटे वालों का इत्यादि ।

अनुवाद, डायरी और रिपोतार्ज :---

नासिरा शर्मा ने विविध देशों का पर्यटन किया है। यात्रा करने के बाद केवल कहनियों एवं उपन्यासों का सृजन मात्र नहीं किया बल्कि कई रिपोतार्ज भी लिखी है। लेखिका का सर्वप्रमुख रिपोतार्ज 'मरजीना का देश ईराक' है। इस पुस्तक में उन्होंने इराक के अनेक पक्षों पर सिंहावलोकन किया है। 1986

में 'सारिका' पत्रिका के ईरान कथा विशेषांक में नासिरा शर्मा ने न केवल संपादकत्व की भूमिका निभाई थी बल्कि उन्होंने सारिका के इस अंक सहित उस दौरान प्रकाशित देश की कई पत्रिकाओं में 'डायरी' के रूप में रचनाएँ भी लिखी है। 'अफगानिस्तान : बुजकशी का मैदान' एक बड़े देश की अभिशप्त गाथा के रूप में उन्होंने रची जो उनके भगीरथ परिश्रम की प्रतिकृति है।

नासिरा शर्मा हिन्दी की संभवतः ऐसी पहली लेखिका है जिसने देश-विदेश का प्रर्याप्त भ्रमण किया है । 'ईरान' और अफगानिस्तान की यात्राएं उस समय में की जब वहाँ युद्ध और संघर्ष के दिन थे। अर्थव्यवस्था से लेकर राजनीतिक स्थिति, सामाजिक उठा-पटक सब कुछ अस्त-व्यस्त थे। इन देशों में स्वच्छन्द रूप से कहीं आना-जाना जान जोखिम में डालना था। लेखिका ने एक निर्भीक पत्रकार की तरह बड़ी जबाँदिली एवं साहस से लंबी-लंबी सड़के, गली मोहल्ले में गई, लोगों से मुलाकात की, बातें की, अलग-अलग प्रकार के अनुभवों एवं जनो के संवेदनाओं का भाण्डारण किया । जो उनके यात्रा-साहित्य में उभर कर सामने आया। अपने कथा साहित्य के जरिए भी उन्होंने ये अनुभव अपने पाठकों के साथ साझा किया है।

'अफगानिस्तान :बुजकशी का मैदान' उनका लिखा यात्रा-वृतान्त है जिसमें उन्होंने मुस्लिम कट्टर पंथियों की जमकर खबर ली है। लेखिका यात्राओं को किसी भी

रचनाकार के लिए रचना कर्म का अहम् भाग मानती है। वे उदाहरण देते हुए बताती है कि 'फिलिस्तीनी' कवयित्री 'फदवा तूफान' ने अपनी जीवनी में लिखा था कि मुझे तीन चीजों की शदीद ख्वाहिश थी -एक किताब, चाहने वाला मर्द और यात्राएँ। आज मैं सोचती हूँ कि एक रचनाकार के लिए ये तीनों चीजें उसके फन की आत्मा हैं। फदवा जैसी रूमानी कवयित्री कैसे बाद में सामाजिक मुद्दों की प्रमुख कवयित्री बनी, शायद उसका सबसे बड़ा कारण अनुभव है। जो उसने पुस्तक अध्ययन या यात्राओं से प्राप्त किया था। तभी इजराइली कमांडर ने कहा था कि फदवा की एक-एक पंक्ति हजार बुलेट के बराबर है। इसी तरह का एक और नाम ईरानी गुरिल्ला कवयित्री'मार्जियेद अहमद' उस्कुई का है जिसकी गोलियों से छलनी लाश के पास सिपाहियों की जाने की हिम्मत नही हुई कि कहीं उठकर हमला न कर दें। ईराक की पृष्ठभूमि राजनीति, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को अपनी नजरों से देखकर खुद को आत्मसात करके लिखी गई कृति है 'मरजीना का देश इराक' लेखिका इसके पूर्व ईरान को लेकर लिखने के क्षेत्र में जानी जाती रही है। वह स्वयं कहती हैं कि मैं ईरान को लेकर कुछ लिखने के अन्तिम दौर में थी, तथ्य और कागजात, नोट्स आदि संजोकर रखे हुए थे। मैं काफी कुछ लिख भी चुकी थी? कि ईराक जाने का न्यौता आया। विश्व भर के लेखक पत्रकारों को इराक आने का निमंत्रण था मैनें तो निमंत्रण पत्र दराज में डाल दिए कि उपन्यास लिखने की एकाग्रता न भंग हो जाए वह भी तब जब लिखने के अन्तिम चरण में हो पर मेरे पति ने कहा "यह अच्छा अवसर है। अब तक तुमने ईरान पर काम किया है पर सिक्के के दूसरे हिस्से को भी देखना चाहिए। तुम लेखक-पत्रकार हो तुम्हें दोनों सिरों को देखना चाहिए, अथवा पूर्वाग्रह से ग्रसित होने का आरोप लग सकता है। [87]

नासिरा शर्मा ने ईराक का दौरा किया वहाँ की सरकारी बैठकों में. नुमाइदंगी में हिस्सा लिया, युध्धग्रस्त इलाके में डरते-सहमते किन्तु हिम्मत करके वह घूमीं,

विभिन्न वर्गों एवं समुदाय के लोगों से मुलाकात की उनकी सोच को जानने की कोशिश की। रिर्पोताज शैली में लिखे गए इस लेखसंग्रह में सर्वसंपन्न देश 'अमेरिका' की धौंस को नही सहने वाले ईराक वासियों और सद्दाम हुसैन की हिम्मत, हौसले और जबाँदानी की तस्वीर प्रस्तुत की है। नासिरा शर्मा ने उस दौर में अमेरिका की आलोचना की जिस समय अमेरिकी दबाव शिखर पर था। 1980 से लेकर 2003 तक ईराक ने क्या झेला, क्या सहा इसका चित्र नासिरा शर्मा ने बड़ी बेबाकी से दर्पण की तरह दिखाया है। हाल में एक दशक पहले के 25-26 वर्षों में ईराक ने जिस कहर को सहा है उसे दुनियाभर के लोगों ने देखा समझा एवं महसूसा है। ईद के मुबारक मौके पर 'सद्दाम हुसैन' को फाँसी दे दी गई इससे भी ईराक के संदर्भ में, सद्दामहुसैन के बारे में, उन्हें चाहने या न चाहने वाले लोगों में जानने की उत्सुकता बढ़ी है। ऐसे में नासिरा शर्मा के इस किताब की ऊँचाई और बढ़ जाती है। क्योंकि इसमें वे तथ्य दर्ज है कि सद्दाम ने कैसे विषम परिस्थितियों में रहते हुए ईराक को फिक्रमंद रहने का हुनर सिखाया। 1980 से लेकर 2003 तक ईराक ने तीन बड़ी लड़ाइयाँ झेली। इसके बावजूद भी बगदाद, बसरा आदि शहरों को देखकर कहीं खंडहर, ध्वंस के निशान देखने को नही मिलते क्योंकि लेखिका के अनुसार उधर युद्ध चल रहे होते है, इधर इमारतों की मरम्मत हो रही होती है। "बगदाद कई बार उजड़ा और कई बार बसा, मगर हर तबाही के बाद वह उस संस्कृति एवं सभ्यता की बुनियाद पर दोबारा शादाब हो गया। लेखकों ने कलम दवात में डुबोए और कागज फिर अक्षरों से रंगे जाने लगे। मदरसों और खानकाहों की दीवारे उठने लगी और संगीत में डूबी हवा 'दजला' के पानी पर मचलती लहरों से अठखेलियाँ करने लगा। इंसानों ने फिर बच्चों को जन्म देना शुरू कर दिया और कलाओं में डूबा बगदाद फिर बस गया। वास्तविकता तो यह है कि 'बगदाद' की माँग सिर्फ 1980 से 2003 के मध्य ही नही उजड़ी बल्कि पहले कई बार लूटमार ज्वालामुखियों का विस्फोट और कत्लेआम् का कहर अपने नंगी आँखों से देख

चुका है। लगभग 750 वर्ष पहले 'चंगेज खाँ' के पोते 'हलाकू' के हुक्म से 'तातारी' फौज ने जिसमें तुर्क खिरगीज, कौरलूक और मुगल सिपाही मौजूद थे ऐसा नरसंहार किया था कि सड़क पर चलने वाले घोड़ों के पैर खून में डूबे रहते थे। मदरसों से लूटी गई किताबें दजला मे डाल दी गई जो पानी में डूबकर एक दूसरे से चिपक गई और एक पुल का आकार धारण कर लिया जिस पर से पैदल और सवार बड़े आराम से गुजर जाते थे। बाकी नदी का पानी काफी दूर तक काला होगया था।लेखिका ने यह वृतांत 2003 में लिखा जब सद्दाम हुसैन सर्वशक्तिमान अमेरिका से संघर्षरत थे। नासिरा शर्मा ने सद्दाम की प्रशंसा की। हिम्मत से यह लिखा कि सद्दाम और इराक दोनों ने समाज की स्त्रियों की तरक्की को अरब देश मुस्लिम देश है किन्तु वह सिर्फ हमेशा तरजीह तवज्जो दी। मक्का-मदीना में सिरकत करने वाले हाजियों की फिक्र रखने तक सीमित रहना चाहते हैं ताकि आने वाले पिछड़े रहें और उनकी दुकान चलती रहे। पाकिस्तान, तुर्की भी मुस्लिम राष्ट्र है किन्तु वहाँ की स्त्रियों की बदतर स्थिति सर्वविदित है। ऐसे में इराक की महिलाएं बुर्का नही पहनती, चहारदीवारी से बाहर निकलती है, ऊँचे पदों पर पदासीन हैं, प्रेम-विवाह करने की आजादी रखती है। इकलौती लड़की को माँ-बाप की मृत्यु के बाद पूरी संपत्ति मिलती है। प्रसूति महिला को कुल 92 दिनों का दफ्तर से अवकाश प्राप्त होता है। औरत यदि सेना में भर्ती होना चाहती है तो उसको सिर्फ अफसर वर्ग में रखा जाता है, श्रम-कानून के अनुसार स्त्री-पुरुष को समान अधिकर प्राप्त है आदि। इराक भी इस्लाम धर्म को मानने वाला देश है किंतु और देशों की तरह पिछड़ापन, रूढ़िवादिता, कट्टरवादिता, दकियानूसीपन यहाँ के लोगों में नही है। इसलिए लेखिका ने सीधे-सीधे स्वीकारा है कि ईराकी औरत का वर्तमान सुनहरा है और यहाँ के लोग विशेष विचार के अधीन नही हैं।

आज अमेरिका जिसे विजय कह रहा है वास्तव में वह उसके पतन का पहला कदम है और पराजय की उद्घोषणा है अमेरिकी डॉलर कमजोर हो रहे हैं और सूचना

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उसकी तूती समाप्त हो गई है। उसने विश्व के लगभग सभी देशों की जनता के दिलों में नफरत का बीज बो दिया है। ये शब्द आज इतने प्रासंगिक है सामान्य व्यक्ति भी समझ सकता है। सामान्य जन भी यह समझने लगा है कि अमेरिका अपनी सरपरस्ती में छोटे-देशों खासकर तेल के कुओं वाले देशों यथा कुवैत, ईरान, और ईराक कोअपने अधीन रखना चाहता है ताकि उसका एकछत्र राज रहे और छोटे बड़े सभी देश मदद के लिए हमेशा उसके दरवाजे पर खड़े रहें।

सीरियल लेखन संस्करण और विमर्श :--

वैसे तो नासिरा शर्मा कई टी.वी. सीरियालों से जुड़ी रहीं किंतु उनके कीर्ति को बहारों में फैलाने वाले जो समाज द्वारा सर्वग्राहय सीरियल हुए उनमें प्रमुख रूप से 'शाल्मली' का नाम लिया जा सकता है। 'शाल्मली' उनका उपन्यास है जिसके ऊपर यह धारावाहिक बनाया गया। पति-पत्नी, पति पढ़ा लिखा किन्तु दकियानूसी, पत्नी शिक्षित व कामकाजी होते हुए भी घर दफतर के बीच बैलेंस रखने में निष्णात के अर्न्तसंबंधों पर आधारित इस सीरियल को लोगों ने काफी पसंद किया। आम् मध्य-वर्ग के परिवारों की गाथा बखूबी पर्दे पर प्रदर्शित की गई है। नासिरा शर्मा कहती हैं कि सीरियल जब प्रसारित होना प्रारम्भ हुआ तब से लेकर समाप्ति के काफी समय पश्चात् तक दर्शकों के पत्र एवं प्रतिक्रियाएं आती रही। इसी श्रेणी में 'तमन्ना' और 'माँ' सीरियल को लेकर भी दर्शको की काफी मात्रा रही और धारावाहिक की खूब प्रशंसा हुई। नासिरा शर्मा के अन्य 'माँ' कार्यक्रम तो दुबारा प्रसारित किया गया। धारावाहिक/टी.वी सीरियल है-वापसी, दो बहने, चार बहने शीशमहल की आदि। स्पष्ट है कि अधिकांश टी. वी. सीरियल स्त्री विमर्श को लेकर प्रसारित हुए। कहना असंगत न होगा कि लेखिका के सीरियल लेखन की चर्चा किए बगैर स्त्री विमर्श पर किए गए उनके कार्यों का कोई भी विवेचन अपर्याप्त होगा।

ललित शुक्ल की टिपपणी है कि "नासिरा शर्मा अपने समय की सबसे बड़ी और चर्चित रचनाकर है जिन्होंने देश-विदेश के जनमानस से विचारपूर्ण साक्षात्कार किया है। उसकी पीड़ा और दुःख दर्द को केवल देखा और महसूस ही नही किया बल्कि उस पर अपनी लेखनी भी दौड़ाई है। उनकी निष्ठा संवेदनाओं के साथ है। मानव द्वारा मानव को दी गई पीड़ा की बर्बरता के खिलाफ आवाज उठाई है। यह आवाज किसी वर्ग विशेष के लिए नही है जहाँ अवसाद है, उत्पीड़न है, प्रताड़ना है वहाँ आप नासिरा शर्मा को खड़ी पाएंगे।औरत के लिए औरत', 'किताब के बहाने' तथा राष्ट्र और मुसलमान नासिराके तीन निबंध संग्रह है जिनमें सामाजिक समस्याओं पर विचार प्रस्तुत किए गएहै।

लेखिका कहती हैं कि उर्दू की प्रारंभिक उपन्यासकार 'राशिदा खातून' हों या बंगाली, मराठी, हिन्दी की लेखिकाएं हो, सभी ने बिना समझे, बिना जाने स्त्री-विमर्श समाज के बहाने अपनी रचनाओं में अंकित किया है। 'स्त्री-विमर्श बिल्कुल नयी अभिव्यक्ति है जो कुछ वर्षों से रायज हुई है और यदा-कदा तो स्त्री-विमर्श को सामने रखकर ही कहानी, उपन्यास लिखे जाने लगे हैं ताकि बहस हो सके। इस 'लाउड' टोन के सामने अनकही तेज धार की मद्धिम काट, अब कुछ लोगों को पुरानी लगने लगी है। वे हलचल शोर-शराबा चाहते हैं। शायद यही कारण है कि कई लेखक/कवि जो प्रत्यक्ष रूप से हमारे सामने नही है किन्तु उनकी कहानियाँ और उपन्यासों के स्त्री पात्र आज भी हमारे बीच जिन्दा हैं। जबकि कई अन्य जो अब भी हमारे बीच हैं उनके स्त्री पात्र गोष्ठियों एवं समीक्षाओं के आगे जिन्दा नही रह पाते। इसी कारण आज स्त्रियों के किरदार जिंदा है जबकि लेखक मर चुके हैं। आज लेखक जिंदा है किन्तु उनके स्त्री किरदार मर चुके हैं या फिर गोष्ठियों के अंदर तब तक जीने का इंतजार कर रहे हैं जब तक प्रोग्राम समाप्त न हो जाय। उनका जीवन दहाईयाँ तो दूर कुछ वर्ष भी जीवित नही रह पाता। यह तो रही एक बात। दूसरी बात यह है कि 'स्त्री-

विमर्श एक विदेशी आयात है, मैं इसको कुछ व्यक्तियों को लेकर कुछ अर्थों में सही मान सकती हूँ मगर दरअसल हिन्दुस्तानी औरत के तेवर कुछ अलग जरा हटकर रहे हैं, चाहे वह प्राचीन कथाओं और यथार्थ की हों या फिर मध्य युग की, हर जगह हमको इस तरह की चेतना आती है। उसकी बुनियादी सोच अलबत्ता पश्चिम से अलग है। इसको अगर देखना है तो आकड़े ले और देखें कि एक हिन्दूस्तानी औरत ने कब, कहाँ, कितनेमहत्वपूर्ण योजना, पदवी और रणक्षेत्र में रही और एक पश्चिम के औरत का आकड़ा देखें, आपको स्वयं पता चल जाएगा। समाज में स्त्रियों की स्वतंत्रता और देह स्वतंत्रता में बहुत फर्क है। देह एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है मगर 'पेट' के बाद आता है इसलिए औरत की सामाजिक जरूरतों का विमर्श आज से नही, शताब्दियों से भारत में चल रहा है। इस पर गहरे शोध की जरूरत है। टुकड़े-टुकड़े में काफी हुआ है मगर तुलनात्मक अध्ययन नही हो पाया है।

"मैने अपनी पुस्तक 'औरत के लिए औरत' में उसके वे सारे मुददे लिए है जो भारतीय यथार्थ है उस यथार्थ की समस्या भी भारतीय कोशिशों से ही हल होगी। क्योंकि भौगोलिक परिस्थितियाँ इंसान को दूसरे इंसान से अलग दर्शाती हैं। क्योंकि उसी के अनुसार उनका रहन-सहन और सोच-संवेदना बनती है। भारतीय नारी का पैर खुलना शरम की बात है तो विदेश में कमर दिखना ।"[89]

स्पष्ट है कि नासिरा शर्मा भौगोलिकता के आधार पर संवेदनाओं के मापदण्डों का विवेचन किया है और उन बेजुबानों को स्वर दिया है जो किन्हीं कारणों वश चुप्पी साधे संकुचन के चहारदीवारी में दम तोड़ रहे थे।

संदर्भ सूची

1. सं. नेमिचंद्र जैन, मोहन राकेश के सम्पूर्ण नाटक, (आषाढ़ का एक दिन), पृष्ठ-46
2. नासिरा शर्मा, शोधार्थी की निजी वार्ता, तिथि 01/03/2015
3. डॉ. राखी मौर्या, नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी विमर्श, पृष्ठ-56
4. डॉ. अमरीश सिन्हा, नसिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श, पृष्ठ-51
5. डॉ. विजय राउत, नासिरा शर्मा:व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृश्ट-13
6. वही, पृष्ठ-12
7. सं. एम. फिरोज अहमद, नासिरा शर्मा: एक मूल्यांकन, पृष्ठ-201
8. डॉ. राखी कुमारी मौर्या, नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ-57
9. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, पृष्ठ-06
10. सं. एम. फिरोज अहमद, नासिरा शर्मा : एक मूल्याकन, पृष्ठ-15
11. वही, पृष्ठ-21-22
12. वही, पृष्ठ-23
13. वही, पृष्ठ-13
14. १४- नासिरा शर्मा, राष्ट्र और मुसलमान, पृष्ठ-173
15. डॉ. विजय राउत, नासिरा शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व. पृष्ठ-14
16. नासिरा शर्मा, खुदा की वापसी(कहानी संग्रह) के (भूमिका) से, पृष्ठ-09
17. डॉ. विजय राउत, नासिरा शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृष्ठ-14
18. नासिरा शर्मा, राष्ट्र और मुसलमान, पृष्ठ-178
19. डॉ. राखी कुमारी मौर्या, नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ-61
20. २०- नासिरा शर्मा, राष्ट्र और मुसलमान, पृष्ठ-176
21. नासिरा शर्मा, शोधार्थी की निजी वार्ता, तिथि- 01/03/2015
22. डॉ. राखी कुमारी मौर्या, नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ-62

23. नासिरा शर्मा, शोधार्थी की प्रश्नोत्तरी, तिथि-01/03/2015

24. डॉ. राखी कुमारी मौर्य, नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी-विमर्श, पृष्ठ-63

25. नासिरा शर्मा, शोधार्थी की निजी वार्ता, तिथि-01/03/2015

26. सं.डॉ.ललित शुक्ल, नासिरा शर्मा: शब्द और सम्वेदना की मनोभूमि, फ्लैप से

27. वही

28. वही

29. डॉ. अमरीश सिन्हा, नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श, पृष्ठ-54

30. नसिरा शर्मा, व्याख्यान के दौरान, तिथि-01/03/2015

31. नासिरा शर्मा, नासिरा शर्मा से साक्षात्कार(नया ज्ञानोदय) - अंक-सितम्बर 2007

32. डॉ. अमरीश सिन्हा, नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श, पृष्ठ - 57

33. वही, पृष्ठ-54

34. नासिरा शर्मा, सात नदियाँ एक समुंदर, (भूमिका-दो शब्द)

35. वही, पृष्ठ-10

36. नसिरा शर्मा, शाल्मली, पृष्ठ-09

37. वही, पृष्ठ-38

38. वही, पृष्ठ-56

39. वही

40. वही, पृष्ठ-164

41. नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, (कथन वाक्य)

42. नासिरा शर्मा, जिंदा मुहावरें, (भूमिका)

43. डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी, हिंदी उपन्यास समकालीन संदर्भ, पृष्ठ-23

44. नासिरा शर्मा, जिंदा मुहावरें, (भूमिका)

45. वही, दो शब्द

46. नासिरा शर्मा, अक्षयवट, (उपन्यास के फ्लैप से)

47. वही,पृष्ठ-09-10

48. वही, पृष्ठ- 10

49. नासिरा शर्मा, कुईयांजान, पृष्ठ-408

50. वही, पृष्ठ-12

51. वही, पृष्ठ-08

52. वही, पृष्ठ-07

53. वही, फ्लैप से

54. डॉ.शेख मोहम्मद शाकीर, शेख बशीर, नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामयिक बोध, पृष्ठ-41

55. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृष्ठ-121

56. वही, पृष्ठ- 79

57. वही, पृष्ठ-129

58. वही, फ्लैप

59. नासिरा शर्मा, पत्थरगली(दो शब्द), पृष्ठ- 07

60. वही, दो शब्द

61. नासिरा शर्मा, संगसार(कहानी संग्रह) के दो शब्द से

62. वही

63. वही

64. नासिरा शर्मा, इब्नेमरियम (कहानी संग्रह) की भूमिका, पृष्ठ-07

65. नासिरा शर्मा, शीर्ष कहानियाँ, मूलपृष्ठ

66. नासिरा शर्मा, इब्नेमरियम (कहानी संग्रह) की (भूमिका) के (दो शब्द) से

67. नासिरा शर्मा, शामी कागज(दो शब्द) पृष्ठ-07

68. नासिरा शर्मा, शीर्ष कहानियाँ, मूलपृष्ठ

69. नासिरा शर्मा, शामी कागज- (दो शब्द), पृष्ठ- 07

70. वही, पृष्ठ - 21

71. डॉ. ललित शुक्ल, नासिरा शर्मा: शब्द और सम्वेदना की मनोभूमि, पृष्ठ - 351

72. नासिरा शर्मा, शीर्ष कहानियाँ - (कहानी संग्रह) के (मूलपृष्ठ) से

73. नासिरा शर्मा, सबीना के चलीस चोर (कहानी संग्रह) के (फ्लैप) से

74. वही, पृष्ठ-07

75. वही, पृष्ठ-08

76. नासिरा शर्मा, शीर्ष कहानियाँ (कहानी संग्रह) के (मूलपृष्ठ) से

77. नासिरा शर्मा, खुदा की वापसी(भूमिका), पृष्ठ-09

78. वही, पृष्ठ - 08

79. वही, पृष्ठ-07

80. नासिरा शर्मा, इंसानीनस्ल (कहानी संग्रह) की (भूमिका), पृष्ठ-09

81. वही, पृष्ठ-07

82. नासिरा शर्मा, बुतखाना-(कहानी संग्राह) के (फ्लैप) से

83. वही, दो शब्द, पृष्ठ-08

84. वही, (नमकदान कहानी), पृष्ठ-09

85. नासिरा शर्मा, दूसरा ताजमहल (कहानी संग्रह) के (दो शब्द) से

86. वही, पृष्ठ-08

87. नासिरा शर्मा, शोधार्थी की निजी वार्ता, तिथि- 01/03/2015

88. नासिरा शर्मा, मरजीना का देश: इराक, पृष्ठ-99

89. नासिरा शर्मा, शोधार्थी की निजी वार्ता, तिथि- 01/03/2015